श्रीसिद्ध-चक्र-मण्डल-विधानम्

(संस्कृत)

संग्रहकर्ता तथा रचयिता

भट्टारक श्री शुभचन्द्रजी

सम्पादक

डॉ. सोनल कुमार जैन

प्रकाशक

निर्ग्रन्थ फाउण्डेशन, भोपाल

श्रीसिद्ध-चक्र-मण्डल-विधानम्

ISBN : 978-81-943516-1-0

पावन प्रेरणा – सन्त शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य निर्ग्रन्थ गौरव
मुनिश्री १०८ प्रमाणसागरजी महाराज

संग्रहकर्ता तथा रचयिता– भट्टारक श्री शुभचन्द्र जी

सम्पादक – डॉ. सोनल कुमार जैन

संस्करण – तृतीय, अक्टूबर २०२०

मूल्य – रु. २००/–

प्रकाशक – निर्ग्रन्थ फाउण्डेशन, भोपाल

मुद्रक – **विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स**
४५, सेक्टर–एफ, औद्योगिक क्षेत्र, गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.)
फोन : ०७५५–२६०१९५२, २६०२९५७, ९४२५००५६२४

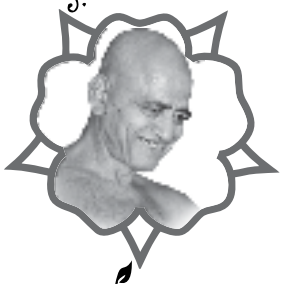

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	आशीर्वचन	५
२.	प्रास्ताविकम्	९
३.	विधान की विधि	२७
४.	मंगलाष्टक स्तोत्रम्	२९
५.	प्रारम्भिक क्रियाएँ	३२
६.	अभिषेक पाठ	३७
७.	शान्तिधारा	४४
८.	विनयपाठ	५२
९.	पूजापीठिका	५६
१०.	नवदेवता पूजन	६३

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
११.	नन्दीश्वरद्वीप - पूजा	७१
१२.	सिद्धभक्ति	७८
१३.	श्रीसिद्ध-चक्र-मण्डल-विधानम्	८०
१४.	अर्घ्यावली	२४९
१५.	पुण्याहवाचन	२५८
१६.	शान्तिपाठ (संस्कृत)	२६१
१७.	विसर्जनपाठ (संस्कृत)	२६४
१८.	शान्तिपाठ (हिन्दी)	२६५
१९.	विसर्जनपाठ (हिन्दी)	२६८
२०.	परिशिष्ट	
	१. श्रीसिद्धचक्र मण्डल विधान का हिन्दी अर्थ	२६९
	२. श्रीसिद्धचक्र मण्डल विधान की प्रथमादि पूजाओं के अर्घ्य	३१७

आशीर्वचन

जैन परम्परा में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का विशेष महत्त्व है। इसे अष्टाह्निकी पूजा के रूप में भी जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि सिद्धचक्र विधान में समस्त पूजाएँ समाहित हो जाती हैं। भाव विशुद्धि के साथ इस विधान का अनुष्ठान करने से घर-गृहस्थी के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि गृहस्थ-जनों के जीवन भर में हुए ज्ञात-अज्ञात पापों के प्रायश्चित के लिए एक बार सिद्ध चक्र विधान अवश्य करना चाहिए। इसे सर्वसिद्धिदायी और मंगलकारी विधान के रूप में जाना जाता है। महासती मैना सुन्दरी द्वारा इस विधान के अनुष्ठान से अपने पति श्रीपाल का कुष्ठ मिटाने की कथा जगत्प्रसिद्ध है। यही कारण है कि आज प्रत्येक श्रावक अपने जीवन में कम से कम एक बार यह विधान करने का मनोभाव रखता है। सिद्धचक्र विधान का वाञ्छित लाभ लेने के लिए हमें इसका अर्थ और स्वरूप जानना भी अपेक्षित है।

सिद्ध- जो समस्त कर्म कलंक से मुक्त देहातीत परमात्मा हैं। चक्र का अर्थ है- समूह एवं मण्डल का आशय एक प्रकार के वृत्ताकार यन्त्र से है, जिसमें अनेक प्रकार के मन्त्रों एवं अक्षरों की स्थापना की जाती है। मन्त्र शास्त्र के अनुसार इसमें अनेक प्रकार की दिव्य शक्तियाँ प्रकट हो जाती हैं। कोशकारों के अनुसार मण्डल शब्द का अर्थ है- दिव्य शक्तियों के आह्वान के लिए तैयार किया गया एक गुप्त रेखाचित्र। विधान शब्द का अर्थ है- साधन या अनुष्ठान। यहाँ विधान का अर्थ एक ऐसे अनुष्ठान से है, जो हमारे इष्ट लक्ष्य की पूर्ति का साधन है। कुल मिलाकर

सिद्धचक्र महामण्डल विधान का अर्थ होगा विशिष्ट विधि-विधान से मन्त्र-आराधन के साथ मण्डल की रचनापूर्वक सिद्ध परमात्मा समूह की आराधना। इसमें मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र तीनों का समावेश है। सिद्धचक्र मण्डल की स्थापना यन्त्र है। मन्त्राराधन इसमें समाहित है ही तथा आठ-सोलह आदि द्विगुणित क्रम से की जाने वाली पूजा एक प्रकार की तान्त्रिक प्रक्रिया है। अष्ट द्रव्य के माध्यम से अपनी भक्ति को प्रकाशित करना पूजा कहलाती है। पूजा के साथ जाप आदि अन्य प्रक्रियाओं के साथ विहित-विधि अनुसार किया जाने वाला अनुष्ठान विधान कहलाता है। मण्डल की संरचनापूर्वक होने वाला विधान मण्डलविधान कहा जाता है।

आजकल बहुत से विधानकर्ता २ या ४ दिनों में ही पूरा सिद्धचक्र विधान सम्पन्न करने लगे हैं, यह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। सिद्धचक्र विधान अष्टाह्निकी पूजा है, इसे उसी विधान से ८ दिनों में ही करना चाहिए, तभी इसका वाञ्छित परिणाम मिल सकता है। इसके अतिरिक्त कुछ विधानकर्ता विधान तो ८ दिनों में ही करते हैं पर अन्त की दो पूजाओं को तोड़कर २ या ३ दिनों में करते हैं, यह भी अनुपयुक्त है। हमें विहित विधि के अनुसार ८ दिनों में क्रमशः ८ पूजाएँ सम्पन्न करनी चाहिए। इसी तरह मण्डल के अर्थ को न समझ पाने के कारण आज अधिकतर विधानकर्ताओं ने मण्डल को द्रव्य चढ़ाने का अधिष्ठान बना दिया है, यह भी ठीक नहीं है। हमें मण्डल के मूल अर्थ को समझते हुए बीजाक्षरों के माध्यम से सिद्धचक्र की संरचना करके ही आराधना करनी चाहिए, तभी उसकी सार्थकता होगी।

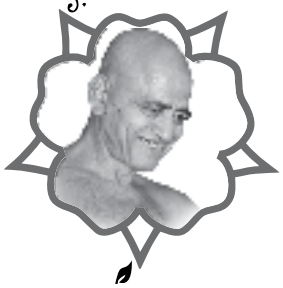

हिन्दी के स्थान पर संस्कृत में विधान का विशेष लाभ है क्योंकि संस्कृत भाषा में उच्चारण की शुद्धता से उसका ध्वनि-वैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है और पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा फैलती है। मन्त्रों के ९-९ बार उच्चारण से उसका अपना असर पड़ता है। सामूहिक रूप से इस तरह के आयोजन का अपना एक अनुपम वैशिष्ट्य है। विगत वर्षों में अनेक बार संस्कृत के सिद्धचक्र विधान में सम्मिलित होने का प्रसंग बना। मैंने स्वयं यह अनुभव किया है कि मूल संस्कृत के विधान में होने वाले मन्त्र उच्चारण से अतिशय भावविशुद्धि बढ़ती है। विधान में सम्मिलित होने वाले श्रावकों का भी यही अनुभव है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष इस विधान की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

विगत वर्षों में संस्कृत की मुद्रित प्रति, जो इन्दौर से प्रकाशित है, के माध्यम से विधान कराया जाता रहा है। उसमें टङ्कणगत और भाषागत अनेक अशुद्धियाँ दृष्टिगोचर हुईं। ब्र. डी. राकेश, सागर, ब्र. डॉ. धर्मेन्द्र जैन, दिल्ली और डॉ. सोनल कुमार जैन, साहित्याचार्य, दिल्ली ने बड़े श्रमपूर्वक प्राचीन पाण्डुलिपियों के आधार पर इसे संशोधित किया है, उनका प्रयास और श्रम सराहनीय है। इसी तरह विकास ऑफसेट के संचालक श्री विकास गोधा ने भी अल्पावधि में ही इसे सुसज्जित करके प्रकाशित किया है, एतदर्थ उन सभी को मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद...।

- मुनि प्रमाणसागर

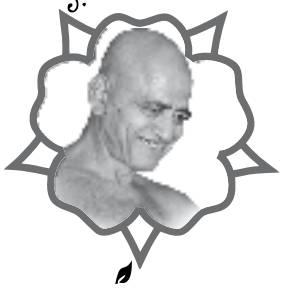

प्रास्ताविकम्

जैन श्रावकाचार परम्परा में जिनपूजन को आवश्यक कर्मों में परिगणित किया है। श्रावक की साधना में जिनपूजन का विशेष महत्त्व है क्योंकि श्रावक की भावशुद्धि के लिए जिनपूजन सरलतम उपाय है, इसलिए आचार्यों ने जिनपूजन को प्रथम आवश्यक के रूप में उल्लेख किया है। यथा–

देवपूजा गुरूपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तथा।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने॥

पद्मनन्दिपञ्चविंशतिका/६/७

आचार्य समन्तभद्रस्वामी के अनुसार जिनेन्द्रदेव की पूजन सर्वार्थसाधिका (सर्वप्रयोजनों को सिद्ध करने वाली) है। वे लिखते हैं –

देवाधिदेवचरणे परिचरणं सर्वदुःखनिर्हरणम्।
कामदुहि कामदाहिनि परिचिनुयादादृतो नित्यम्॥

रत्नकरण्डकश्रावकाचार/११९

अर्थात् भगवान् जिनेन्द्र की पूजन सभी दुःखों का नाश करने वाली, मनवाञ्छित फल

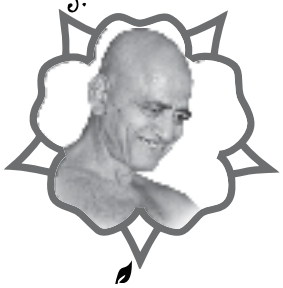

को देने वाली और पञ्चेन्द्रिय के विषयों की इच्छा को नष्ट करने वाली है। ऐसी जिनेन्द्रभगवान की पूजन श्रावक को प्रतिदिन करना चाहिए। पूजन जहाँ श्रावक के लौकिक प्रयोजनों की सिद्धि में सहायक है तो वहीं पारलौकिक लक्ष्य की प्राप्ति में भी परम्परा से साधक कारण है। आचार्यों ने जिनपूजन को उभयविधसुखदात्री माना है। तद्यथा–

इन्द्राणां तीर्थकर्तृणां केशवानां रथाङ्किनाम्।
सम्पदः सकलाः सद्यो जायन्ते जिनपूजया॥
धनं धान्यं महाभाग्यं सौभाग्यं राज्यसम्पदा।
पुत्रो मित्रं कलत्रं च सत्कुलं गोत्रमुत्तमम्॥
दीर्घायुर्दुगतेर्नाशो विनाशः पापसन्ततेः।
अभीष्ट-फल-सम्प्राप्तिर्मणि-मुक्ता-फलादिकम्॥
सम्यक्त्वं मुक्तिसद्बीजं भवभ्रमण-नाशकम्।
सद्विद्या सच्चरित्रं च सौख्यं स्वर्गापवर्गयोः॥

सर्वोपयोगी श्लोक संग्रह

अर्थात् जिनेन्द्र भगवान की पूजा से इन्द्र, तीर्थंकर, नारायण और चक्रवर्तियों की सकल सम्पत्तियाँ, धन-धान्य, महाभाग्य, सौभाग्य, राज्यसम्पदा, पुत्र, मित्र, पत्नी, उत्तम

कुल, उच्च गोत्र, दीर्घायु, दुर्गति का नाश, पाप-परम्परा का विनाश, मणि-मुक्ताफल आदि अभीष्ट फल की सम्प्राप्ति, मुक्ति का बीज रूप और भव-भ्रमण को नष्ट करने वाला सम्यग्दर्शन, सद्विद्या (सम्यग्ज्ञान), सच्चरित्र (सम्यक्चारित्र) एवं स्वर्ग-मोक्ष के सौख्य शीघ्र ही प्राप्त होते हैं।

जिनपूजन को नित्यकर्म के साथ ही नैमित्तिक कर्म भी माना है। आवश्यक के रूप में जिनपूजन नित्य कर्म है तो चतुर्मुख आदि के रूप में नैमित्तिक कर्म भी है। वस्तुतः जैनाचार्यों ने जिनपूजा के चार भेद किए हैं -

प्रोक्ता पूजाऽर्हतामिज्या सा चतुर्धा सदार्चनम्।
चतुर्मुखमहः कल्पद्रुमाश्चाष्टाऽह्निकोऽपि च॥

महापुराण /३८/२६

सदार्चन (नित्ममह), चतुर्मुखमह (सर्वतोभद्र), कल्पद्रुम और आष्टाह्निक ये चार प्रकार की पूजाएँ हैं। वीरसेन स्वामी ने इन्द्रध्वज पूजा को ऐन्द्रध्वजमहायज्ञ से अभिहित किया है। अन्य भी और पूजाएँ उपर्युक्त पूजाओं में अन्तर्गर्भित हैं।

(धवला - ८/३, ४२/९२/४) जै.सि.को. भाग-३-पृष्ठ-७४)

प्रकारान्तर से जिनागम में पूजा के नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव ये छह

भेद भी प्राप्त होते हैं। पूजा को व्यवहार पूजा और निश्चय पूजा अथवा द्रव्यपूजा और भाव पूजा के भेद से दो प्रकार का भी कहा गया है।

यहाँ ध्यातव्य है कि द्रव्य पूजा पूर्वक ही भावपूजा की जाती है। हाँ, जिन मुनिराज आदि का सर्व-आरम्भ का त्याग है, उनके लिए मात्र भावपूजा का उल्लेख किया गया है। आजकल कुछ श्रावकगण अष्ट द्रव्य के बिना ही मात्र कुछ पंक्तियाँ (गद्य/पद्य रूप) बोलकर हमने भावपूजा कर ली ऐसा कथन करते हैं, वे पूजन के उद्देश्य से दिग्भ्रमित हैं। सर्व-आरम्भरहित मुनि आदि के लिए तो इस प्रकार की भाव पूजा उपादेय है किन्तु जो श्रावक अपनी दिनचर्या का बहुभाग आरम्भ में बिताता है; वह इस प्रकार से जिनभक्ति/जिनपूजा करे तो यह उसकी अकमर्ण्यता का प्रतिरूप है। अष्टद्रव्य पूर्वक द्रव्यपूजा के माध्यम से जिनेन्द्र भगवान् के गुणों में मन/भावों का लीन होना ही भावपूजा है। जैसा कि पूजा पाठ में कहा है-

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥

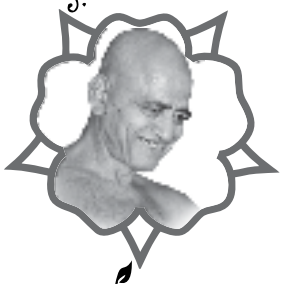

अर्थात् मैं अपनी शक्ति के अनुरूप द्रव्यशुद्धि को प्राप्त करके अधिक से अधिक भावशुद्धि की प्राप्ति की इच्छा वाला होकर विविध आलम्बनों का अवलम्बन लेकर श्रीजिनेन्द्र भगवान की पूजा करता हूँ। अत: श्रावक को अष्टद्रव्य के साथ द्रव्यपूजा करते हुए पूज्य के गुणानुवाद अथवा गुण-चिन्तन में लीन होना रूप भावपूजा करनी चाहिए।

जैनधर्म में नित्यपूजा के अनन्तर सर्वाधिक प्रचलित आष्टाह्निक पूजा है। अष्टाह्निका पर्व में स्वर्गों से देवता नन्दीश्वर द्वीप में जाकर विविध वाद्य यन्त्रों के साथ अविराम पूजन करते हैं। वर्तमान में अष्टाह्निका पर्व में श्रीसिद्धचक्र विधान का प्रचलन बहुतायत से है। पण्डित पन्नालाल जी साहित्याचार्य अपने शिष्यों से कहा करते थे कि आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व सिद्धचक्रविधान के नाम पर उदकचन्दन.....आदि बोलकर थालों के थाल सामग्री चढ़ा दी जाती थी और यह मान लिया जाता था कि सिद्धचक्रविधान हो गया। बीसवीं सदी में विद्वानों की उपस्थिति में शनै: शनै: विधिवत् पूजन-विधान प्रारम्भ हुआ। मुनिराजों के आशीर्वाद और सान्निध्य से आज यह अपने चरम पर है। इसका सर्वाधिक श्रेय पं. सन्तलाल जी को जाता है; जिन्होंने मूल संस्कृत के सिद्धचक्रविधान का हिन्दी पद्यानुवाद करके उसको सरल और सर्वसाधारण को सुगम्य बना दिया।

आज से लगभग ३०० वर्ष पूर्व तक सभी पूजाएँ संस्कृत में ही उपलब्ध थीं और उसी रूप में की जाती थीं। संस्कृत पूजाओं का एक संस्करण सोलापुर से प्रकाशित हुआ था। ज्ञानपीठ पूजाञ्जलि के प्रारम्भिक संस्करण में भी संस्कृत की पूजाएँ प्रकाशित की गई थीं; जिनमें से देव-शास्त्र-गुरु की एकमात्र संस्कृत पूजा वर्तमान संस्करण में भी उपलब्ध है।

परमपूज्य सन्तशिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के यथानामगुणधारी परमपूज्य मुनिश्री १०८ प्रमाणसागर जी महाराज जैनदर्शन और सिद्धान्त के साथ-साथ प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश भाषा के अधिकारी विद्वान् हैं। उनका प्रत्येक कार्य प्रामाणिक और युक्तियुक्त होता है। मूल जैन वाङ्मय प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश भाषा में निबद्ध है। पूजन-विधान की प्राचीन एवं मूल परम्परा संस्कृत-पूजा-विधान को पुनर्जीवित करने एवं पूजन-विधान की शक्ति को मूलरूप में अनुभव करते हुए उसके प्रभाव को जनसाधारण तक पहुँचाने के पावन उद्देश्य से पूज्य मुनिश्री की प्रेरणा से सर्वप्रथम २००९ में शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री शिखर जी के प्रांगण में स्थित गुणायतन परिसर में कार्तिक माह की अष्टाह्निका में मूल संस्कृत का सिद्धचक्र विधान आयोजित किया गया। इसके पश्चात् गुणायतन परिसर में ही सन् २०१२ की कार्तिक अष्टाह्निका में, सन् २०१४ की फाल्गुन और कार्तिक अष्टाह्निका में, सन् २०१५ में जयपुर में कार्तिक अष्टाह्निका में,

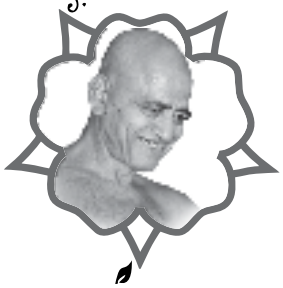

सन् २०१६ में दातारामगढ़ में फाल्गुन अष्टाह्निका में एवं सन् २०१७ में किशनगढ़ में फाल्गुन अष्टाह्निका में संस्कृत के श्रीसिद्धचक्र विधान का आयोजन मुनिसंघ के सान्निध्य में किया गया।

परमपूज्य मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज के अनुसार श्रीसिद्धचक्रविधान में मूल बीजाक्षरों से युक्त मण्डल का निर्माण होना चाहिए। लौकिक वर्तमान में मण्डल को द्रव्य चढ़ाने का अधिष्ठान बना दिया गया है; इसलिए बीजाक्षरयुक्त मूल मण्डल की संरचना के साथ श्रीसिद्धचक्रविधान पूज्य मुनिश्री की प्रेरणा से प्रारम्भ हुए। शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक गृहस्थ को अपने जीवन में एक बार श्रीसिद्धचक्र विधान अवश्य करना/कराना चाहिए लेकिन बहुत से श्रावक साधनाभाव के कारण यह कार्य नहीं कर पाते हैं। श्रावकों ने जब अपनी इस मनोव्यथा को पूज्य मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज के समक्ष निवेदित किया तो उन्होंने उनकी समस्या के समाधान के रूप में बहुमण्डलीय श्रीसिद्धचक्रविधान की परिकल्पना को प्रस्तुत किया, जिससे कि एक ही आयोजन के माध्यम से अलग-अलग परिवारों को अलग-अलग मण्डलों पर विधान करने का सु-अवसर प्राप्त हो सके।

पूज्य मुनिश्री की इस विचारधारा को मूर्तरूप मिला सन् २०१८ के भीण्डर प्रवास के अन्तर्गत फाल्गुन माह की अष्टाह्निका में; जहाँ सर्वप्रथम २४ मण्डलीय श्रीसिद्धचक्रविधान

की घोषणा की गई। घोषणा के प्रथम दिन ही २४ से अधिक मण्डलों की स्वीकृति मिलने के कारण संख्या को २४ से बढ़ाकर ४८ किया गया और विश्वइतिहास में प्रथम बार ४८ मण्डलीय मूल संस्कृत के श्रीसिद्धचक्र विधान का आयोजन किया गया।

श्रीसिद्धचक्रमण्डल विधान में मण्डल का अपना महत्त्व है। दिव्य शक्तियों के आह्वान के लिए तैयार किया गया रेखाचित्र मण्डल कहलाता है, जो कि विशिष्ट शक्ति का पुञ्ज होता है। जब हम एक मण्डल की संरचना करते हुए उसमें बीजाक्षर स्थापित करते हैं तो उसका एकाकी प्रभाव होता है और जब अनेक मण्डलों की रचना की जाती है तो उसका प्रभाव भी संख्या के अनुपात में अनेक गुणा हो जाता है। बहुमण्डलीय श्रीसिद्धचक्र विधान में बैठने वाले सभी श्रावक जब समवेत स्वर में मन्त्र आदि का उच्चारण करते हैं तो वहाँ विशिष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। एक मण्डल की रचनापूर्वक विधान करने से एक ही स्थान पर शक्तिसंधारण होता है और अनेक मण्डलों की रचना करके विधान करने से कई गुना शक्ति-प्रवाह होता है; जो पूजन-विधान करने वाले श्रावकों के तन-मन और जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। बहुमण्डलीय विधान में प्रत्येक मण्डल पर बैठने वाले प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत विधान सम्पन्न होता है और सामूहिक रूप से उत्पन्न ऊर्जा का सकारात्मक प्रभाव भी वह प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार बहुमण्डलीय श्रीसिद्धचक्र विधान की यह परम्परा श्रावकों के बहुविधहिताय और कल्याणार्थ है।

अनन्तचतुष्टय के ४ और सिद्धों के आठ गुणों के प्रतीक ८ अंकों की संख्या के अनुरूप ४८ मण्डलीय श्री सिद्धचक्रविधान की यह परम्परा भीण्डर से होती हुई रतलाम तक पहुँची; जहाँ २०१८ में कार्तिक माह की अष्टाह्निका में ४८ मण्डलीय श्रीसिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् श्री सिद्धक्षेत्र बावनगजा की सिद्धभूमि पर सन् २०१९ में फाल्गुन माह की अष्टाह्निका में ६४ ऋद्धियों के प्रतीक स्वरूप ६४ मण्डलीय विधान का आयोजन हुआ। इस विधान में श्रावकों की संख्या अधिक होने एवं उनके आग्रह को देखते हुए आगामी कार्तिक माह की अष्टाह्निका में विश्व इतिहास में प्रथम बार ८४ मण्डलीय श्रीसिद्धचक्रविधान का आयोजन होने जा रहा है; जिसके निमित्त ही प्रकृत पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

संस्कृत के सिद्धचक्र विधान का एक प्राचीन संस्करण श्रीमन्त सर सेठ हुकुमचन्द जी साहब के परिवार की ओर से संवत् २४७० में इन्दौर से प्रकाशित कराया गया था। सन् २००९ में प्रथम बार संस्कृत का सिद्धचक्र विधान करने के लिए इसी संस्करण की स्कैन प्रति प्रकाशित कराई गईं।

संस्कृत के सिद्धचक्र विधान का एक अन्य संस्करण आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज के सदुपदेश से श्रीमान् रायसाहब डॉ. नेमीचन्द्र जैन, जलेसर (एटा) द्वारा वीर

निर्वाण संवत् २४९७ तदनुसार ईसवी सन् १९७१ में प्रकाशित हुआ था। उपर्युक्त संस्करण और इस संस्करण में मन्त्र आदि प्राय: समान ही हैं। वैशिष्ट्य मात्र इतना है कि इस संस्करण में विधान के अर्घ्यों के साथ-साथ संस्कृत के श्लोक भी दिए गए हैं।

सन् २००९ से जब निरन्तर संस्कृत का विधान किया जाने लगा तो स्कैन प्रति में बहुतायत में टंकणगत, विषयगत एवं भाषागत अशुद्धियाँ पाठकों को ज्ञात हुईं, जिनको दूर करने के लिए विधान में बैठने वाले श्रावको ने मुनिश्री निवेदन किया।

मुनिश्री स्वयं भी इस बात को अनुभव कर चुके थे और अनेक अशुद्धियों को रेखांकित करके उनके सम्भावित शुद्धपाठ भी निश्चित कर चुके थे किन्तु उनका प्रमाणीकरण किया जाना अपेक्षित और आवश्यक था। इसलिए श्रावकों के निवेदन पर इस संस्करण का संशोधन करके पुन: प्रकाशित करने की योजना बनाई गई। इसके लिए आवश्यक था विधान के मूल संस्कृत पाठों की अशुद्धियों का परिमार्जन करके पाठों का प्रमाणीकरण करना। रतलाम चातुर्मास के बाद कार्तिक की अष्टाह्निका में आयोजित विधान में उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विधान पढ़ते समय मुझे भी अशुद्धियाँ दृष्टिगोचर हुईं तो मैं उनको तात्कालिक रूप से शुद्ध करता रहा। जब मैंने इस बारे में मुनिश्री

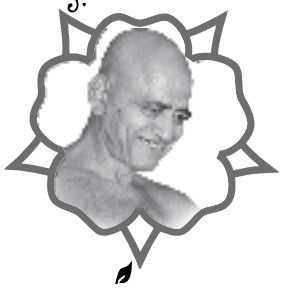

से चर्चा की तो उन्होंने इसके शुद्धीकरण की बात कही और फिर विचार बना एक विद्वत्संगीति बुलाकर वाचनापूर्वक पाठ-संशोधन का।

पाठ संशोधन के लिए सिद्धायतनप्रणेता, बहुश्रुतज्ञ, निस्पृहवृत्तिक नैष्ठिकश्रावकाचारपरायण ब्र. डी राकेश भैया जी के अथक प्रयासों से पाण्डुलिपियाँ एकत्रित की गईं, जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

(१) श्री दि.जैन मन्दिर, भानपुरा से प्राप्त एवं श्री अनेकान्त ज्ञानमन्दिर, बीना में संरक्षित श्री श्रुतसागर सूरि कृत 'श्री सिद्धचक्राष्टक टीका' (पाण्डुलिपि काल संवत् १५७३) है।

(२) श्री दि.जैन मन्दिर, अजमेर से प्राप्त एवं श्री अनेकान्त ज्ञान मन्दिर, बीना में संरक्षित 'सिद्धचक्रविधान' जिसका पाण्डुलिपि काल विक्रमसंवत् १९४१ है।

(३) यह पाण्डुलिपि ५६ पत्रीय है, जो अनेकान्त ज्ञान मन्दिर बीना से प्राप्त हुई थी। इसमें पाण्डुलिपि का परिचय नहीं दिया गया है।

(४) यह ५८ पत्रीय पाण्डुलिपि है , जो वीर नि. संवत् १९४९ की है, यह भी अनेकान्त ज्ञान मन्दिर बीना से प्राप्त हुई।

(५) ४८ पत्रीय पाण्डुलिपि अपूर्ण है।

(६) श्री दि.जैन मन्दिर, अजमेर से प्राप्त ६३ पत्रीय पाण्डुलिपि है, जो श्री अनेकान्त ज्ञान मन्दिर बीना में संरक्षित है।

(७) श्री अनेकान्त ज्ञान मन्दिर, बीना से प्राप्त इस पाण्डुलिपि की प्रशस्ति के अनुसार सम्वत् १९४१ मिति वैशाख सुदी अष्टमी को श्री मन्दिर जी केन कारखाने से प्राप्त है, जिसके लेखक इन्द्रदत्तरतूड़ी हैं, यह ५८ पत्रीय है।

(८) श्री सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट से प्राप्त यह ५३ पत्रीय पाण्डुलिपि है। यह सुस्पष्ट और पूर्ण पर जीर्ण है। इसे भाई गजमल जी सेठी, बड़वाह निवासी ने सरस्वती भण्डार में पधराया था। इसका काल वीर निर्वाण संवत् १९८० है।

प्रकाशित संस्करण और पाण्डुलिपियों के मिलान करने पर कई अशुद्धपाठों को संशोधित करके शुद्ध किया गया, जिनमें से कुछ उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं –

अशुद्ध पाठ	संशोधित शुद्ध पाठ
रसपूर्णगर्मैः	रसपूर्णगर्भैः
नारङ्गपूगकदली-फल-मातुलिंगैः	नारङ्गपूगकदली-फल-नारिकेलैः
सूक्ष्मस्वभाव-परमं यदन्तवीर्यम्	सूक्ष्मस्वभाव-परमं जननार्तिवीतम्।
विनाशंति	विणासंति (प्राकृतरूप)
अव्वाह	अव्वावाह
याजयेद्भक्तिमानसः	यजते भक्तिमानसौ (पाठान्तर)
तन्दुलैः	तण्डुलैः
सद्गन्धाक्षत....	वार्गन्धाक्षत....
निचितमनुसभं	निचितमनुपमं
पाठकाश्रवविनाशाय	पाठकास्रवविनाशाय
दृग्बोधबृतादि	दृग्बोधवृत्तादि
संसारवाद्यपहं	संसारबाधापहं
सन्नव्यपर्यापहम्	सम्पन्नपर्यापहम्

भोत्क्रे नमः	भोक्त्रे नमः
विश्वमृषे	विश्वभृते
विश्वासिने	विश्वाशिषे
विभावाय	विभवाय
अव्यक्तवाचे	व्यक्तवाचे
प्रणयाय	प्रणताय
चतुर्वक्ताय	चतुर्वक्त्राय
सुस्थिताय	सुस्थिराय
अजय्याय	अजर्याय
प्रवत्क्रे	प्रवक्त्रे
अप्राकृताय	प्राकृताय
अनन्तकृते	अन्तकृते
असंस्कृतसंस्कृताय	असंस्कृतसंस्काराय
अभ्यग्र्याय	अभ्यग्राय
सिद्धशासनाय	सिद्धसाधनाय
पृष्ठाय	प्रष्ठाय

इसके अतिरिक्त चतुर्थपूजा और षष्ठपूजा के प्रत्येकमन्त्रों का शुद्धीकरण और परिमार्जन किया गया है। पूर्व संस्कृत-संस्करणों एवं हिन्दी विधान की पुस्तकों में कहीं-कहीं जाप्य मंत्र में '**ॐ ह्रीं अर्हं अ सि अ उ सा नमः**' इस प्रकार '**अर्हं**' शब्द का प्रयोग हुआ है जबकि संस्कृत विधान की किसी भी पाण्डुलिपि में '**अर्हं**' शब्द नहीं है अतः जाप्यमन्त्र में '**अर्हं**' शब्द को नहीं रखा गया है। इस प्रकार अनेकानेक युक्तियुक्त और प्रामाणिक संशोधनों के साथ श्रीसिद्धचक्रविधान के मूल संस्कृत पाठ का संशोधित संस्करण तैयार किया गया है।

इस संशोधित संस्करण को तैयार करने के लिए परम पूज्य मुनिश्री १०८ प्रमाणसागर जी महाराज एवं मुनिश्री १०८ विराटसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री सिद्धक्षेत्र बावनगजा में परमादरणीय ब्र.डी.राकेश भैया जी सिद्धायतन, सागर, डॉ धर्मेन्द्र जैन, दिल्ली एवं डॉ. सोनल कुमार जैन, साहित्याचार्य, दिल्ली की उपस्थिति में पाण्डुलिपियों की वाचना की गई। विधान के एक-एक शब्द और मन्त्रों के एक-एक अक्षर पर गहन विचारविमर्श एवं तर्क, युक्ति और आगम के परिप्रेक्ष्य में उनकी समीचीनता का निर्धारण करते हुए संशोधित पाठ तैयार किया गया। संशोधित प्रति तैयार होने के बाद स्खलन एवं

मुद्रण आदि दोषों के परिमार्जन हेतु विद्वानों के द्वारा पुनः वाचना करके प्रस्तुत प्रति को प्रकाशन हेतु प्रेषित किया गया। इस प्रकार मूल संस्कृत के श्रीसिद्धचक्र विधान का प्रामाणिक संस्करण अपने इस रूप में श्रावकों के हाथों तक पहुँच सका है।

श्रीसिद्धचक्र विधान को मूल संस्कृत रूप में करने से क्या लाभ है ? और यह हिन्दी के विधान से मिलता-जुलता है या अलग है ? यह प्रश्न भी कई बार मेरे समक्ष उपस्थित हुआ है। यहाँ यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि संस्कृत का विधान मूल विधान है और हिन्दी का विधान उसका हिन्दी पद्यानुवाद है। संस्कृत और हिन्दी के विधानों में मन्त्र प्रायः समान ही हैं और विधान करने की विधि भी समान ही है तथापि संस्कृत के विधान में कुछ वैशिष्ट्य है। तद्यथा-

* संस्कृत का विधान करने से मूल परम्परा का संरक्षण और पोषण होता है।
* संस्कृत -शब्दों के श्रवण से भावशुद्धि अधिक होती है।
* संस्कृत शब्दों के उच्चारण से भाषागत दोष दूर होते हैं।
* संस्कृत शब्दों के उच्चारण में तालु, कण्ठ आदि का परिस्पन्दन होने से उनकी शुद्धि होती है।

* संस्कृत भाषा के माध्यम से भक्ति करने से भगवान के प्रति श्रद्धा-समर्पण सुदृढ़ होता है।
* संस्कृत के विधान में पूजन-विधान के प्रति बहुमान बढ़ता है।
* संस्कृत शब्दों के उच्चारण एवं ध्वनिश्रवण करने से वैचारिक दोष दूर होते हैं और मानसिक शान्ति का अनुभव होता है।
* संस्कृत विधान के माध्यम से उत्पन्न होने वाली सकारात्मक ऊर्जा का परिमाण और प्रभाव हिन्दी के विधान की अपेक्षा अधिक होता है।

इस प्रकार मूल संस्कृत का श्रीसिद्धचक्र विधान श्रावक की भावशुद्धि, मानसिक शान्ति एवं सकारात्मक परिवर्तन में सहायक एवं परमोपकारी है, अत: अपेक्षित साधन जुटाकर मूल संस्कृत विधान करने का प्रयास करना चाहिए।

इस संस्करण को इस रूप में प्रस्तुत करने में परमोपकारी ब्र. डी. राकेश भैया जी, डॉ. धर्मेन्द्र जी दिल्ली का चिर ऋणी रहूँगा, जिनके अथक प्रयासों से यह बहुश्रमसाध्य एवं कष्टसाध्य कार्य सिद्ध हो सका है। यद्यपि उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापन करना उनके श्रम और प्रयासों का अवमूल्यन होगा तथापि लोकव्यवहार के पालन हेतु उनको कोटिश: धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

इस कृति को इस रूप में मुद्रित और सज्जित करके प्रस्तुत करने में 'विकास ऑफसेट' के स्वामी श्री विकास गोधा एवं उनके पूरे समूह को भी धन्यवाद एवं साधुवाद देता हूँ; जिन्होंने पुस्तक को आकर्षक बनाने का सार्थक और सफल पुरुषार्थ किया है।

अस्तु; पुस्तक में जो कुछ प्रशंसनीय है; वह परमपूज्य मुनिश्री १०८ प्रमाणसागर जी महाराज का आशीर्वाद एवं उपर्युक्त विद्वानों के श्रम का सुफल है एवं जो कुछ त्रुटियाँ रह गई हैं, वे मेरे अज्ञान एवं प्रमाद की अवाञ्छित परिणतियाँ हैं, जिनके लिए पाठक मात्र से क्षमा याचना करता हूँ। विज्ञजनों से विनम्र निवेदन है कि वे पुस्तक में शेष रही त्रुटियों से अवश्य अवगत कराएँ, जिससे कि आगामी संस्करणों में उनका परिमार्जन किया जा सके।

पाठक गण एवं विधान में बैठने वाले श्रावकों की भावशुद्धि में यदि प्रस्तुत कृति सहायक बन पड़ी तो अपना श्रम सार्थक समझूँगा।

गुरुचरण चञ्चरीक

डॉ. सोनल कुमार जैन, साहित्याचार्य

मूल संस्कृत सिद्धचक्रविधान की विधि

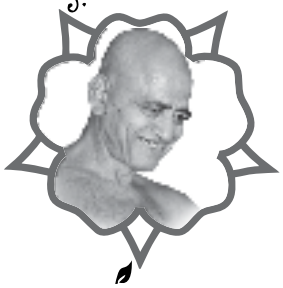

मूल संस्कृत सिद्धचक्र विधान कैसे करना चाहिए और इसकी विधि क्या है ? सामान्य श्रावकों के साथ-साथ विधानाचार्यों के मन में भी यह जिज्ञासा है, अत: उसकी संक्षिप्त विधि यहाँ पर दी जा रही है, जो इस प्रकार है-

* सर्वप्रथम मंगलाष्टक आदि प्रारम्भिक क्रियाओं पूर्वक श्री जिनबिम्ब-अभिषेक, शान्तिधारा करना चाहिए।
* तत्पश्चात् नित्य नियम पूजन करते हुए विधान की प्रतिज्ञा रूप में सिद्धभक्ति पढ़ना चाहिए।
* सिद्धभक्ति के उपरान्त 'ऊर्ध्वाधोरयुतं...' इत्यादि छन्द पढ़कर यन्त्रोद्धार करना चाहिए।
* इसके पश्चात् 'निरस्तकर्मसम्बन्धं...' इत्यादि श्लोक पढ़कर यन्त्र स्थापना और उसमें अकारादि मातृका-वर्णों एवं बीजाक्षरों की क्रमश: पूर्व आदि आठ दिशाओं में स्थापना करना चाहिए।
* इसके बाद '**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नम:**' इस मन्त्र की एक पूर्ण जाप करना चाहिए।
* जाप करने के उपरान्त 'ऊर्ध्वाधोरयुतं...' इत्यादि छन्द पढ़ते हुए पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।

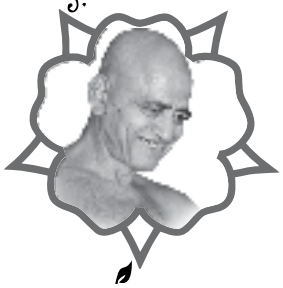

* इसके पश्चात् अष्टाह्निक के आठ दिनों में ८, १६, ३२ आदि क्रम में प्रतिदिन एक-एक पूजा जल-चन्दनादि अष्टद्रव्यों से करना चाहिए।
* पूजन के उपरान्त अर्घ्यावली के मन्त्रों का अष्ट-द्रव्य के प्रतीक स्वरूप प्रत्येक मन्त्र का आठ बार उच्चारण करके नौवी बार में मन्त्र के पश्चात् **'जलाद्यर्घ्यं निर्वपामीति'** यह बोलकर अर्घ्य समर्पित करना चाहिए। इस प्रकार अष्टद्रव्यों से प्रतीकात्मक पूजा सम्पन्न होती है।
* इस प्रकार प्रतिदिन की पूजन सम्पन्न होने के उपरान्त पुन: **'ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः'** इस मन्त्र का १०८ बार जाप करना चाहिए।
* जाप के उपरान्त जयमाला पढ़कर पूर्णार्घ्य समर्पित करना चाहिए।
* जयमाला के उपरान्त अर्घ्यावली, महार्घ्य, शान्तिपाठ एवं विसर्जन करना चाहिए।
* श्रीसिद्धचक्र विधान के मण्डल पर पुस्तक में दिए गए मण्डल के अनुरूप मातृका वर्णों की मूलरूप में स्थापना अवश्य करनी चाहिए, इसके बिना सिद्धचक्र मण्डल और सिद्धचक्रमण्डल विधान अपूर्ण है।
* मण्डल की सरंचना में सिद्धचक्र के बीजाक्षर और मातृका वर्णों की स्थापना की जाती है अत: मण्डल पर श्रीजिनबिम्ब को स्थापित नहीं करना चाहिए। श्रीजिनबिम्ब को पृथक् रूप से स्थायी/अस्थायी वेदी में ही विराजमान करना चाहिए।

मंगलाष्टक स्तोत्रम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम्।। १।।

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन - सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम्।। २।।

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ३।।

नाभेयादिजिनाः प्रशस्त - वदनाः ख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु - प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विशतिः
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ४।।

ये सर्वौषधि-ऋद्धयः श्रुतपसां वृद्धिंगताः पञ्च ये
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ५।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ६।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।

शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ७।।

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ८।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो-
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर - प्रवेश-महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम्।। ९।।

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-सम्पत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै-र्धमार्थ-कामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि।। १०।।

।। इति मंगलाष्टक-स्तोत्रम् ।।

विद्यासागर-विश्व-वन्द्य-श्रमणं भक्त्या सदा संस्तुवे
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं सर्वार्थसिद्धिप्रदं।
ज्ञानध्यान-तपोभि-रक्तमुनिपं विश्वस्य विश्वाश्रयं
साकारं श्रमणं विशालहृदयं सत्यं शिवं सुन्दरम्।।

जलशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गंगासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारीनरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-क्षीराम्भोनिधिशुद्ध जलं सुवर्णघट-प्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मन्त्रेण जलपवित्रीकरणं करोमि।

(इस मन्त्र से जलशुद्धि करके पवित्र जल कलशों में भरें)

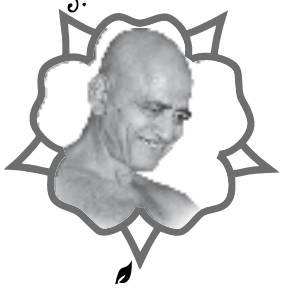

अमृत स्नान मन्त्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(शरीर पर जल सिञ्चन कर शुद्धि करें)

पात्रशुद्धि मन्त्र

शोधये सर्व पात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के बर्तन चटाई आदि शुद्ध करें)

पूजाद्रव्य शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थ-पवित्र-जलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजा-द्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(जल सिञ्चन कर पूजा-द्रव्य की शुद्धि करें)

चन्दन-तिलक-मन्त्र

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं शुभ्रं सुगन्धाहृच्चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं न केवलं देहविकार-हेतोः।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु नव-तिलकं करोम्यहम्।

1. मस्तक, 2. शिखा, 3. ग्रीवा, 4. कान, 5. हृदय, 6. दोनों भुजाएँ, 7. कलाई, 8. नाभि और 9. पीठ इन नौ स्थानों पर तिलक लगावें।

श्री-मन्मन्दर-मस्तके शुचिजलैर्धोते सदर्भाक्षतैः
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितां त्वत्पादपद्मस्त्रजं।
इन्द्रोऽहं निज-भूषणार्थक-मिदं यज्ञोपवीतं दधे
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।

ॐ ह्रीं इन्द्रोचिताभूषणानि अवधारयामि।

(हार, मुकुट, यज्ञोपवीत आदि धारण करें)

भूमि शुद्धि

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु ह्रूं फट् स्वाहा। (भूमि पर जलसिञ्चन करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। (भूमि पर पुष्पक्षेपण करें)

दिग्बन्धन

(सभी दिशाओं में बन्द मुट्ठी से पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् च रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् च रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् च रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् च रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशातः समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् च रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं नमः स्वाहा (सात बार)

रक्षा मन्त्र

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्ष्रां क्ष्रः वः वः ह्रूं फट् स्वाहा।

(स्वयं के ऊपर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य-तेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्ति-कराय सर्वविघ्न-प्रणाशनाय सर्व-रोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्व-परकृतक्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्व क्षामडामरकृतविघ्न-विनाशनाय सर्वारिष्ट-शान्तिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(विश्वशान्ति की भावनापूर्वक सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

माघनन्दिमुनिकृताभिषेक-पाठ

श्रीमन्-नता-मर-शिरस्तट-रत्न-दीप्ति-
तोयाव-भासि-चरणाम्बुज-युग्म-मीशम्।
अर्हन्त-मुन्नत-पद-प्रद-माभि-नम्य
तन्मूर्ति-षूद्य-दभिषेक-विधिं करिष्ये।।

अथ पौर्वाह्णिकदेव-वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजावन्दना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरु-भक्त्यर्थं कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

याः कृत्रिमास्-तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखा-दयस्ताः।
सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्
तत्रैव-मुज्ज्वल-धिया कुसुमं क्षिपामि।।

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञार्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

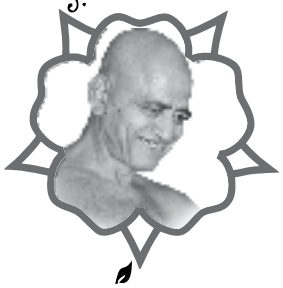

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः श्रीप्रस्तरे पूर्ण-शशांक-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि।

कनकाद्रि - निभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः।।

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

भृङ्गार-चामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-
तालध्वजा-तप-निवारक-भूषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जय पाठ-पदा-वलीभिः
सिंहासने जिन! भवन्त-महं श्रयामि।।

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवे।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह स्नपनपीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

श्रीतीर्थकृत्स्नपन-वर्य-विधौ सुरेन्द्रः
क्षीराब्धि-वारिभि-रपूरय-दुद्घ-कुम्भान्।
याँस्तादृशा-निव विभाव्य यथार्हणीयान्
संस्थापये कुसुम-चन्दन-भूषि-ताग्रान्।।

शातकुम्भीय-कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्-तोय-पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि - गानै-
र्वादित्र - पूर - जय - शब्द - कलप्रशस्तैः।
उद्गीय - मान - जगती - पति - कीर्ति - मेनां
पीठस्थलीं वसु - विधार्चन - योल्लसामि।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म - प्रबन्ध - निगडै - रपि हीन - ताप्तं
ज्ञात्वापि भक्ति - वशतः परमादि - देवम्।

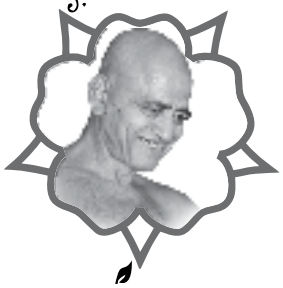

त्वां स्वीय - कल्मष - गणोन्मथनाय देव!
शुद्धोदकै - रभिनयामि महा-भिषेकम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन जिनमभिषेचयामीति स्वाहा।

तीर्थोत्तम - भवै-र्नीरैः क्षीर - वारिधि - रूपकैः।
स्नापयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नापयामीति स्वाहा।

सकल भुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै -
रभिषव - विधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदिभषवन - वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां
प्रभवति हि विदधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्ति-मन्त्रेणाभिषेकं करोमि। (यहाँ समयानुसार शान्तिधारा करना चाहिए)

पानीय - चन्दन - सदक्षत - पुष्प - पुञ्ज-
नैवेद्य - दीपक - सुधूप - फलव्रजेन।
कर्माष्टक - क्रथन - वीर - मनन्तशक्तिं
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा! निज-यशो-धवली-कृताशाः
सिद्धौषधाश्च भव-दुःख-महागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनित-पङ्कक-बन्ध कल्पाः
यूयं जिनाः सतत शान्तिकरा भवन्तु।।

(शान्त्यर्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

नत्वा मुहु - र्निज-करै - रमृतोप - मेयैः
स्वच्छै - र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

स्नानं विधाय भवतोऽष्ट-सहस्त्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टमिन तेऽष्ट - तयीं विधातुं
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि।।

श्री ह्रीं सिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

जल गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीप-सुधूपकैः।
फलैरर्घ्यै-र्जिनमर्चे जन्म-दुःखापहानये।।

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा परीत्य निजनेत्र-ललाटयोश्च
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पादयोगाद्
भूयाद् भवातपहरं धृतमादरेण।।

मुक्तिश्री-वनिता-करोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र-चक्र-पदवी-राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान - चरित्र - दर्शनलता - संवृद्धि - सम्पादकं
कीर्ति-श्रीजयसाधकं तव जिन स्नानस्य गन्धोदकम्।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन-गन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते
ममेदं मानुष्यं कृतिजन-गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् - भल्लाटादशुभतर - कर्माटन-मभूत्
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजन-विधौ।। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

सिद्धयन्त्रस्थापना

मध्ये तेजः ततः स्याद्-वलयमथ धनुः-संख्यकोष्ठेषु पञ्च
पूज्यान्संस्थाप्य वृत्ते तत उपरितने द्वादशाम्भोरुहाणि।
तत्रस्यु-र्मंगलान्युत्तमशरणपदान् पञ्चपूज्यान् महर्षीन्
धर्मप्रख्याति-भाजः त्रिभुवनपतिना वेष्टयेदं कुशाढ्यम्।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठे सिद्धयन्त्रं स्थापयामि।

सिद्धयन्त्राभिषेक

स्नात्वा शुभाम्बरधरः कृतस्वान्तगुप्तिः यन्त्रं निवेश्य शुचिपीठवरेऽभिषिञ्चेत्।
ॐ भूर्भुवः-स्वरिह मंगलयन्त्रमेतत् विघ्नौघवारकमहं परिषिञ्चयामि।।

ॐ भूर्भुवःस्वरिह विघ्नौघवारकं यन्त्रं वयं परिषिञ्चयामः।

(इस पद्य और मन्त्र को पढ़कर यन्त्राभिषेक करें)

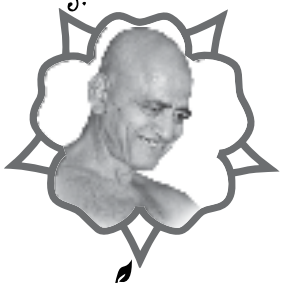

शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्रीवीतरागाय नमः ह्रीं णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विघ्न-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटं किरिटिं घातय घातय पर विघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द-छिन्द परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द क्षां: क्षः वः वः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

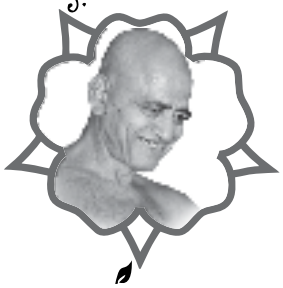

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-शोभनपद-प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय चामरोत्तोलन-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोत्तोलन-

सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट-सहिताय बीजाष्टमण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो (अभिण्ण) दसपुव्वीणं[१] सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चोद्दसपुव्वीणं[२] सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण(इड्ढि)पत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्वशान्तीर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

१. दसपुव्वियाणं २. चोद्दसपुव्वियाणं

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्तवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारिणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्वसिद्धायदणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्धिरिसिणो चेदि सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ णमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जुए वा विवादे वा रणांगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीव-सत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा।

तव भक्तिप्रसादात् लक्ष्मी-पुर-राज्यगेहपद-भ्रष्टोपद्रव-दारिद्रोद्-भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्-भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्-भवोपद्रव-शाकिनी-

डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धि-रहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्रीशान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोऽस्तु नित्यमारोग्यमस्तु अस्माकं तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। श्रीसद्धर्म-बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण-कल्याण-मंगलरूप-मोक्षपुरुषार्थश्च भवतु।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु-शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।
प्रध्वस्त-घाति-कर्माणः केवल-ज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः।।

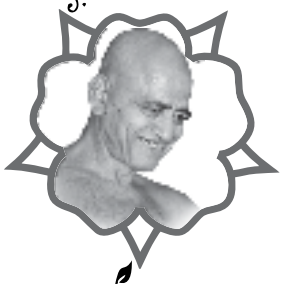

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्म जु आठ ।। १।।
अनन्त चतुष्टय के धनी तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कन्त तुम तीन भुवन के राज ।। २।।
तिहुँ जग की पीड़ा हरन भवदधि-शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के शिवसुख के करतार ।। ३।।
हरता अघ अंधियार के करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो धरता निज गुण रास ।। ४।।
धर्मामृत उर जलधि सों ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को नावत तिहुँजग भूप ।। ५।।
मैं वन्दौं जिनदेव को करि अति निरमल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने और न कछु उपाव।। ६।।

भविजन को भव-कूप तैं तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति आतम गुण भण्डार ।।७।।
चिदानन्द निर्मल कियो धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में भविजन को शिवगैल ।।८।।
तुम पद-पंकज पूजतैं विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरे विष निरविषता थाय ।। ९।।
चक्री खगधर इन्द्र पद मिले आप तैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं नेम सकल हनि पाप ।।१०।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो करो मोहि स्वाधीन।। ११।।
पतित बहुत पावन किए गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी जय जय जय जिनदेव।। १२।।
थकी नाव भवदधि विषैं तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु जय जय जय जिनदेव।। १३।।

राग सहित जग में रुल्यो मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै मेटो राग कुटेव।। १४।।
कित निगोद कित नारकी कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान ।। १५।।
तुमको पूजैं सुरपति अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो करन लग्यो तुम सेव ।। १६।।
अशरण के तुम शरण हो निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में खेव लगाओ पार ।। १७।।
इन्द्रादिक गणपति थके कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं कीजे आप समान ।। १८।।
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों नेक निहार निकार ।। १९।।
जो मैं कहहूँ और सौं तो न मिटैं उर भार।
मेरी तो तोसों बनी तातैं करौं पुकार ।। २०।।

वन्दों पाँचों परमगुरु सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन पूरन परम प्रकाश ।। २१।।
चौबीसों जिनपद नमों नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि रच्यो पाठ सुखदाय ।। २२।।
मंगल मूर्ति परम पद पञ्च धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का मंगलमय भगवान ।। २३।।
मंगल जिनवर पर नमों मंगल अर्हन्त देव।
मंगलकारी सिद्ध पद सो वन्दों स्वयमेव ।। २४।।
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो वन्दों मन-वच-काय ।। २५।।
मंगल सरस्वती मात का मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो हरो असाता कर्म ।। २६।।
या विधि मंगल से सदा जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भव सागर दृढ़ पोत ।। २७।।

अथ अर्हत्-पूजा-प्रतिज्ञायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं पञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

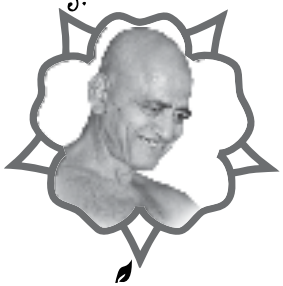

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्च-नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। १।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।। २।।
अपराजितमन्त्रोऽयं सर्व-विघ्नविनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।। ३।।
एसो पंच-णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं।। ४।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ।। ५।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।। ६।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।। ७।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

उदक-चन्दनतण्डुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपञ्चकल्याणकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचन्दनतण्डुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचन्दनतण्डुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसु-धूपकलार्घ्यकैः।।
धवलमङ्गलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्रनामभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायक - मनन्तचतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्-
जैनेन्द्रयज्ञविधि-रेष-मयाऽभ्यधायि।। १।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जितदृङ्मयाय
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुत-वैभवाय।। २।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोधसुधा-प्लवाय
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।। ३।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।४।।

अर्हन् पुराणपुरुषोत्तम पावनानि
वस्तून्यनून-मखिलान्ययमेक एव।

अस्मिञ्ज्वलद्विमल-केवल-बोध-वह्नौ
पुण्यं समग्र-मह-मेकमना जुहोमि।।५।।

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

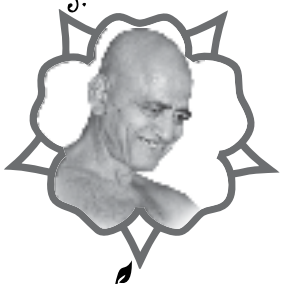

स्वस्ति मङ्गलपाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।

श्रीनमिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्री पार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।
इति चतुर्विंशति-जिनेन्द्र-स्वस्तिमङ्गल-विधानं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

परमर्षि स्वस्ति मङ्गलपाठ

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनःपर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधि-ज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। १।।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेक-बीजं सम्भिन्न-संश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। २।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा-दास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ३।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येक-बुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ४।।

जंघानलश्रेणि-फलाम्बु-तन्तु-प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ५।।

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ६।।

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ७।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणं चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ८।।

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ९।।

क्षीरं स्त्रवन्तोऽत्र घृतं स्त्रवन्तो मधुस्त्रवन्तोऽप्यमृतं स्त्रवन्तः।
अक्षीण-संवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। १०।।

इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानं परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

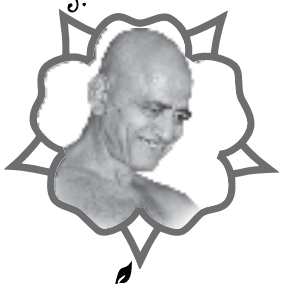

नवदेवता पूजन

अरि चार घाति विनाश कर, अरहन्त पद को पा लिया
पुरुषार्थ प्रबल किया प्रभो, मुक्तीरमा को वर लिया।
अरहन्त पथ पर चल रहे, आचार्य पद वन्दन करूँ
उवज्झाय साधु श्रेष्ठ पद का, भक्ति से अर्चन करूँ।। १।।
जिन धर्म आगम चैत्य चैत्यालय शरण को पा लिया
भव-सिन्धु पार उतारने, नौका सहारा ले लिया।
यह भावना मेरी प्रभो, मम ज्ञान महल पधारिए।
निज सम बना लीजे मुझे, जिनराज पदवी दीजिए।। २।।
सुख दाता नव देवता, तिष्ठो हृदय मँझार।
भावों से आह्वान करूँ, करो भवोदधि पार।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

द्रव्यार्पण

जिनको अपना माना, उनसे ही दुख पाया।
फिर भी क्यों राग किया, यह समझ नहीं आया।।
यह राग की आग मिटे, ऐसा जल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! काल अनादि से, भव का सन्ताप सहा।
अब सहा नहीं जाता, यह मेटो द्वेष महा।।
इस द्वेष की ज्वाला को, अब शान्त करो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी ।। २।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको मैंने चाहा, सब नश्वर है माया।
जिस तन में हूँ रहता, क्षणभंगुर वह काया।।

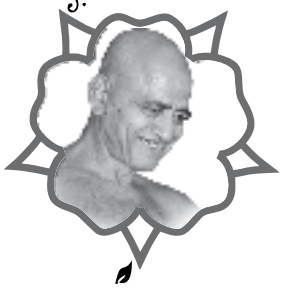

क्षत-विक्षत जग सारा, अब जाऊँ कहाँ स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इस काम लुटेरे ने, आतम धन लूट लिया।
मैं मौन खड़ा निर्बल, बस तेरा शरण लिया।।
विश्वास मुझे तुम पर, आतम बल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा रोग से मैं, प्रभुवर लाचार रहा।
व्यञ्जन की औषध खा, ना कुछ उपचार हुआ।।
प्रभु तू ही सहारा है, यह रोग नशे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर तत्त्व प्रशंसा में, महिमा पर की आई।
नर तन में रहकर भी, निज की ना सुध आई।।
अब ज्ञान ज्योति प्रकटे, आशीष मिले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आँधी में, चेतन गृह बिखर गया।
आया अब दर तेरे, निज आतम निखर गया।।
शुभ ध्यान अनल में ही, वसु कर्म जलें स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पापों का बीज बोया, कैसे शिव फल पाऊँ।
तप धारूँ कर्म नशें, तब सिद्धालय पाऊँ।।

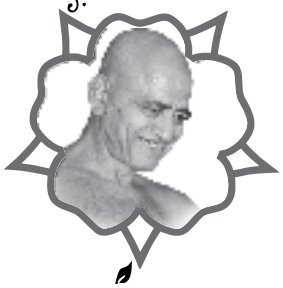

मुझे पास बुला लेना, यह अरज सुनो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्मों ने मिलकर, दिन-रात जलाया है।
गुरुदेव कृपा पाकर, यह अर्घ्य बनाया है।।
यह पद अनर्घ्य अनमोल, हो प्राप्त मुझे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः

(इस मन्त्र का ९, २७ अथवा १०८ बार जाप करें)

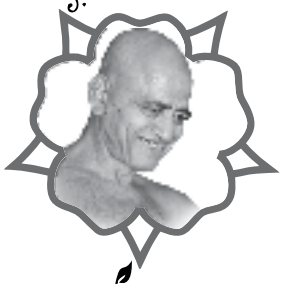

जयमाला

नव देवों की भक्ति से, सब अरिष्ट नश जाय।
आत्मसिद्धि को प्राप्त कर, अष्टम वसुधा पाय।। १।।

जय अरहंत देव जिनराई, तीन लोक में महिमा छाई।
घाति कर्म चउ नाश किए हैं, भव्य-जनों में वास किए हैं।। २।।

दोष अठारह दूर किए हैं, छयालीस गुण पूर्ण हुए हैं।
समवसरण के बीच विराजे, तीर्थंकर पद महिमा राजे।। ३।।

क्षणभंगुर सारा जग जाना, जड़ चेतन को भिन्न पिछाना।
कल्याणक सब पंच मनाए, देव इन्द्र हर्षित गुण गाए।। ४।।

प्रभो ! आपने प्रभुता पायी, दो हमको समता सुखदायी।
दुष्ट करम ने मुझको घेरा, निज स्वभाव से मुख को फेरा।। ५।।

प्रभो ! आप सिद्धालय वासी, दर-दर भटका मैं जगवासी।
अब निज भूल समझ में आई, सिद्धदशा ही मन में भाई।। ६।।

करो नमन स्वीकार हमारा, भवसागर से करो किनारा।
कर्म भँवर में मेरी नैया, गुरुवर तुम बिन कौन खिवैया ।। ७।।

गुण छत्तीस मुनीश्वर धारे, इस कलयुग में आप सहारे।
दीक्षा देकर राह दिखाते, खुद चलते चलना सिखलाते।। ८।।

उपाध्याय पद है तम नाशे, गुण पच्चीस ज्ञान परकासे।
अट्ठाईस गुणों के धारी, साधू पद की महिमा भारी।। ९।।

श्री जिनधर्म अहिंसा प्यारा, गूँज उठा है जग में नारा।
आगम आतम बोध कराता, फिर चेतन का शोध कराता।। १०।।

जिनने आगम को अपनाया, अहो भाग्य तुम सा पद पाया।
अनेकान्त मय धर्म सहारा, द्वादशांग को नमन हमारा।। ११।।

कर्मनिकाचित् निधत्ति विनाशे,बिम्ब जिनेश्वर आत्म प्रकाशे।
निज स्वरूप का बोध कराती, जिन सम जिनमूरत कहलाती।। १२।।

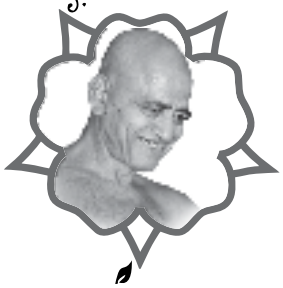

जो जन नित जिन मन्दिर जावें, पाप नशें औ पुण्य बढ़ावें।
परमातम का ध्यान लगावें, शुद्ध होय मुक्तीपुर जावें।। १३।।

नव देवों को शीश झुकाऊँ, गुण गाऊँ और ध्यान लगाऊँ।
रहूँ सदा मैं प्रभुवर चरणा, भव-भव मिले आपकी शरणा।। १४।।

पूर्व पुण्य से हो रहा, नव देवों का दर्श।
अल्प बुद्धि कैसे लहे, अनन्त गुण का स्पर्श।। १५।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर को पूजे, शिवपथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

नन्दीश्वरद्वीप - पूजा

सरब परब में बड़ो अठाई परव है,
नन्दीश्वर सुर जाँहिं लेय वसु दरव है।
हमैं सकति सो नाहिं इहां करि थापना,
पूजैं जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कंचन-मणि-मय भृंगार तीरथ-नीर भरा
तिहुँ धार दई निरवार जामन मरन जरा।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूज करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्दभाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवतप-हर शीतल वास सो चन्दन नाहीं
प्रभु यह गुन कीजै साँच आयो तुम ठाहीं।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूज करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्दभाव धरों।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत जिनराज पुंज धरे सोहै
सब जीते अक्ष समाज तुम सम अरु को है।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूज करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्दभाव धरों।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तुम काम विनाशक देव ध्याऊँ फूलन सों
लहुँ शील-लच्छमी एव छूटों सूलन सौं।

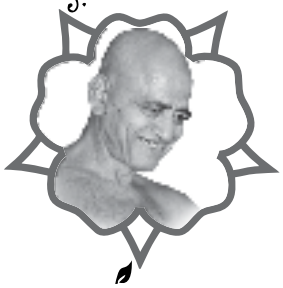

नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूज करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्दभाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज इन्द्रिय बलकार सो तुमने चूरा
चरु तुम ढिग सोहै सार अचरज है पूरा।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूज करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्दभाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योतिप्रकाश तुम तनमाँहि लसै
टूटै करमन की राश ज्ञान-कणी दरसै।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूज करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्दभाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

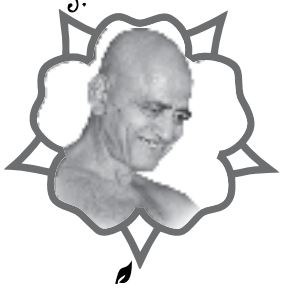

कृष्णागरु-धूप सुवास दश दिशि नारि वरै
अति हरष-भाव परकाश मानो नृत्य करें।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूज करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्दभाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्जाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविधि फल ले तिहुँ काल आनन्द राचत हैं
तुम शिवफल देहु दयाल तुहिं हम जाचत हैं।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूज करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्दभाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अरघ कियो निजहेत तुमको अरपतु हों
'द्यानत' कीजो शिवखेत भूमि समरपतु हों।

नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पूजन करों
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्दभाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

कार्तिक फाल्गुन साढ़ के अन्त आठ दिन माहिं।
नन्दीश्वर सुर जात हैं हम पूजैं इह ठाहिं।।

एक सौ त्रेसठ कोडि जोजन महा
लख चौरासिया एक दिशि में लहा।
आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।। १।।

चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं
सहस चौरासिया एक दिशि छाजहीं।
ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरं।। भौन.।। २।।

एक इक चार दिशि चार शुभ बाबरी।
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी।।
चहुँ दिशा चार वन लाख जोजनवरं।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।। ३।।

सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं।
सहस दश महाजोजन लखत ही सुखं।।
बावरी कोन दो माँहिं दो रतिकरं ।। भौन.।।४।।

शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे।
चार सोलै मिलैं सर्व बावन लहे।।
एक इक सीस पर एक जिनमन्दिरं।।भौन.।।५।।

बिम्ब अठ एक सौ रतनमयी सोहहीं।
देव देवी सरब नयन मन मोहहीं।
पाँच सै धनुष तन पद्म-आसन परं।।भौन.।।६।।

लाल नख-मुख नयन श्याम अरु स्वेत हैं।
स्याम-रंग भोंह सिर-केश छवि देत हैं।।
वचन बोलत मनों हँसत कालुष हरं।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।। ७।।

कोटिशशि-भानु-दुति-तेज छिप जात है।
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है।।
वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यग्धरं।। भौन.।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्य: नम: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

नन्दीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।।

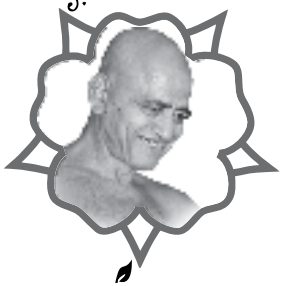

सिद्धभक्ति

असरीरा जीवघणा उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार-मणायारा लक्खण-मेयं तु सिद्धाणं॥ १॥

मूलोत्तर-पयडीणं बंधोदय-सत्त-कम्म-उम्मुक्का।
मंगल-भूदा सिद्धा अट्ठ-गुणातीद-संसारा॥ २॥

अट्ठविय-कम्म-वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ-गुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥ ३॥

सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्धि-सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे॥ ४॥

गमणागमण-विमुक्के विहडिय-कम्म-पयडि-संघादा।
सासय-सुह-संपत्ते ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥ ५॥

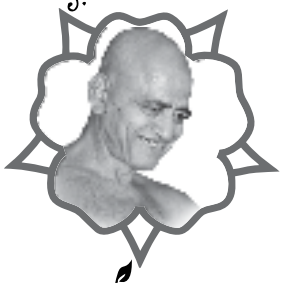

जयमंगल-भूदाणं विमलाणं णाण-दंसणमयाणं।
तइलोय-सेहराणं णमो सया सव्व-सिद्धाणं॥ ६॥

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-मव्वावाहं अट्ठ-गुणा होंति सिद्धाणं॥ ७॥

तव-सिद्धे णय-सिद्धे संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥ ८॥

इच्छामि भंते! सिद्ध-भत्ति काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं अट्ठविह-कम्मविप्प-मुक्काणं, अट्ठ-गुण-संपण्णाणं, उड्ढ-लोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाण-कालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण-संपत्ती होउ मज्झं।

अथ श्रीसिद्धचक्र-मण्डल-विधानम्

मङ्गलाचरणम्

अनुष्टुप् - प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लब्धिसाम्राज्यसंयुतम्।
श्रीसिद्धचक्रयन्त्रस्यार्चां सहस्रगुणां ब्रुवे॥ १॥

अथ यजमानलक्षणम्

विनीतो बुद्धिमान् प्रीतो न्यायोपात्तधनो महान्।
शीलादिगुणसम्पन्नो यष्टा सोऽत्र प्रशस्यते॥ २॥

अथ याजकलक्षणम्

देशकालादिभावज्ञो निर्मलो बुद्धिमान् वरः।
सद्वाण्यादिगुणोपेतो याजकोऽत्र प्रशस्यते॥ ३॥

अथ आचार्यलक्षणम्

दर्शन-ज्ञान-चारित्र-संयुतो ममतातिगः।
प्राज्ञः प्रश्नसहश्चात्र गुरुः स्यात् क्षान्तिनिष्ठितः॥ ४॥

अथ मण्डपलक्षणम्

निर्मलं पृथुलं घण्टातारिकातोरणान्वितम्।
प्रलम्बपुष्पमालाढ्यं चतुर्द्वाकुम्भसंयुतम्॥ ५॥
भेरी-पटह-कंसाल-ताल-मृदङ्गनिस्वनैः।
श्रीकुलीनस्त्रीगीताढ्यं मण्डपं कारयेद् बुधः॥ ६॥

अथ सामग्रीलक्षणम्

स्वभावोत्कर्षणी पूजा नेत्रमानसहारिणी।
सामग्री शस्यते सद्भिर्निखिलानन्दकारिणी॥ ७॥

अथ यन्त्रोद्धारः

शार्दूलविक्रीडितम् - ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रीङ्कार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥ ८॥

अथ मण्डलोपरि अष्टवर्ग-अर्घ्याणि

अनुष्टुप् - **निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।**
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या - **सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।**
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अनुष्टुप् - **हलां चयो विना यैस्तु सुप्रसिद्धोऽर्धमातृकः।**
तैः स्वरैः सहितं पूर्वदिश्यनाहतमर्चये॥ १॥

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहतविद्यायै नमः पूर्वदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय्यां कादिसद्वर्णैरुपेतानाहतं यजे।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगन्धाक्षतादिभिः॥ २॥

ॐ ह्रीं क ख ग घ ङ अनाहतविद्यायै नमः अग्निदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

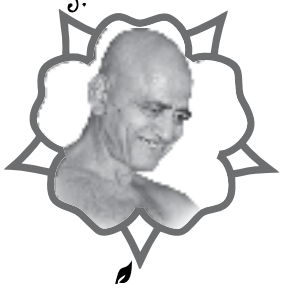

दक्षिणस्यां चवर्गेण युतानाहतमर्चये।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगन्धाक्षतादिभिः॥ ३॥

ॐ ह्रीं च छ ज झ ञ अनाहतविद्यायै नमः दक्षिणदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिणोत्तरकोणे वा टवर्गाद्यमनाहतम्।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगन्धाक्षतादिभिः॥ ४॥

ॐ ह्रीं ट ठ ड ढ ण अनाहतविद्यायै नमः नैऋत्यदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनाहतं च वारुण्यां तवर्गोपेतमर्चये।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगन्धाक्षतादिभिः॥ ५॥

ॐ ह्रीं त थ द ध न अनाहतविद्यायै नमः पश्चिमदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवर्गोपेतमर्हामि वायव्यायामनाहतम्।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगन्धाक्षतादिभिः॥ ६॥

ॐ ह्रीं प फ ब भ म अनाहतविद्यायै नमः वायव्यदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यजे यरलवोपेतं कौवेर्यां दिश्यनाहतम्।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगन्धाक्षतादिभिः॥ ७॥

ॐ ह्रीं य र ल व अनाहतविद्यायै नमः उत्तरदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यजेऽनाहतमैशान्यां युतं शषसहाक्षरैः।
सुगन्धैः सुभगैरुद्धैर्जलगन्धाक्षतादिभिः॥ ८॥

ॐ ह्रीं श ष स ह अनाहतविद्यायै नमः ऐशानदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः**' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ प्रथमपरिधौ अष्टकमलदलपूजा

शार्दूलविक्रीडितम्-ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥

इति पठित्वा कोष्ठकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ स्थापना

अनुष्टुप्- निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या- सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टकम्

वसन्ततिलका - सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यं
हान्यादिभावरहितं भववीतकायम्।
रेवापगा-वर-सरोयमुनोद्भवानां
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रम्॥ १॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्दकन्दजनकं घनकर्ममुक्तं
सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतम्।
सौरभ्यवासितभुवां हरिचन्दनानां
गन्धैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम्॥ २॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वावगाहनगुणं स्वसमाधिनिष्ठं
सिद्धस्वरूपनिपुणं कमलं विशालम्।

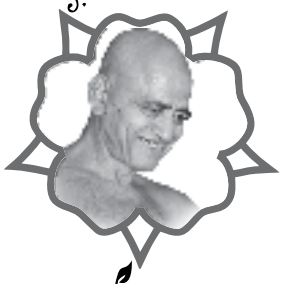

सौगन्ध्यशालिवनशालिवराक्षतानां
पुञ्जैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम्॥ ३॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञं
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम्।
मन्दारकुन्दकमलादिवनस्पतीनां
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम्॥ ४॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं
ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम्।
क्षीरान्नसाज्यवटकैः रसपूर्णगर्भैः
नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम्॥ ५॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्यन् समस्तभुवनं युगपन्नितान्तं
त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम्।
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातै-
र्दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम्॥ ६॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतङ्कशोकभयरोगमदप्रशान्तं
निर्द्वन्द्वभावधरणं महिमानिवेशम्।
सद्द्रव्यगन्धघनसारविमिश्रितानां
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम्॥ ७॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धासुराधिपतियक्षनरेन्द्रचक्रै-
र्ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैश्च वन्द्यम्।

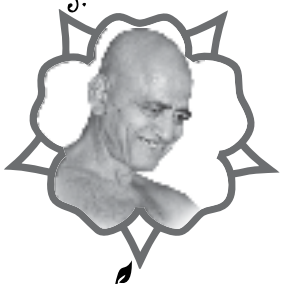

नारङ्ग-पूग-कदलीफलनारिकेलैः
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम्॥ ८॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम्- गन्धाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः सङ्गं वरं चन्दनं
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वाञ्छितम्॥ ९॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसन्ततिलका- ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं
सूक्ष्मस्वभावपरमं जननार्तिवीतम्।
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यबीजं
वन्दे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रम्॥१०॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

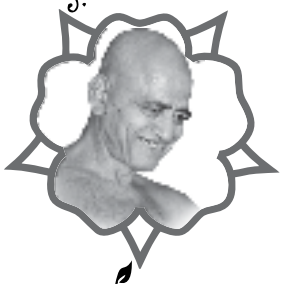

अथ प्रत्येकमन्त्राः

१. ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा।

२. ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा।

३. ॐ ह्रीं दर्शनगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा।

४. ॐ ह्रीं वीर्यगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा।

५. ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा।

६. ॐ ह्रीं अवगाहनगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा।

७. ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा।

८. ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये नमः स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः**' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ जयमाला

घत्ता- पणाविवि परमेसुर णोमि जिणेसुर नासियदुक्कियकम्ममलु।
पुण अक्खिमि भत्तिय णियमणसत्तिय सिद्धचक्कजयमालफलु॥

भुजङ्गप्रयातम्- तमाला-समा-संपडा-सीसके सा
खरा दारुणा लोयणा-रत्तवेसा।
गहा-भूय-वेदाल णासंति चक्कं
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं॥ १॥

ततो भीसणो-छंददाढा कराला
चला-लोयणा दीह-जीहा विसाला।
वसी-हुंति सिंहाइ दाढीन-चक्कं
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं॥ २॥

सरोसा सघोरा महाकाल-रूवा
जनूरारि आसी-विया दुट्ठभावा।
सकोहा ण डंकंति होणाय-चक्कं
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं॥ ३॥

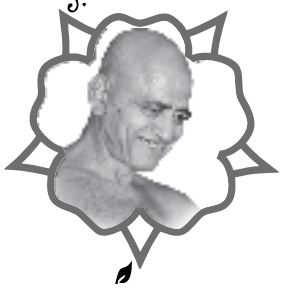

जरो-खेय-रोगावली-गंडमाला
पमेहाइ रूवावना कुट्ठसूला।
विणासंति सासाणिला वाहिचक्कं
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं॥ ४॥

सधूमावली-भीसणा-संजलंता
फुलिंगाइ मेलंति चंडा दिगंता।
न डाहंति देही सिहीजालचक्कं
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं॥ ५॥

सकल्लोल-लोला-वहोलातरंगा
अपारा य घोसावदी सिंधुगंगा।
अगाधा सुतारंति हो णीरचक्कं
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं॥ ६॥

कसापास-कुंतास-भल्लाय-सूला
सकोदंड-वाणा करे भिंडमाला।
न मारंति तं संगरे चोरचक्कं
वरं भावंयणे मणो सिद्धचक्कं॥ ७॥

सगाढा विबंधा घणा घोरबंधा
असेसाणियंगा उबंगा विबंधा।
विमुंचंति सासंखलायं सचक्कं
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं॥ ८॥

सुणीसग्गि-झाणेण कम्मट्ठ-णासं
ललाटे सुवीयं करे मोक्ख-वासं।
कुणेदी यकी दिट्ठि भाणं पहाओ
सुछंदोवि एसो भुयंगप्-पयाओ॥ ९॥

घत्ता - इयवर जयमाला परम रसाला विधुसेणेण वि कहिय थुहिं।
जो पढइ पढावइ णियमणि भावइ सो णरु पावइ सिद्धसुहं॥ १०॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुष्टुप् - चिद्रूपं सिद्धचक्रं यो यजते भक्तिमानसौ।
दिव्याभ्युदयं भुक्त्वा लभते सिद्धसङ्गतिम्॥११॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ द्वितीयपरिधौ षोडशकमलदलपूजा

शार्दूलविक्रीडितम्- ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्ग्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥

इति पठित्वा कोष्ठकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ स्थापना

अनुष्टुप्- निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या- सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

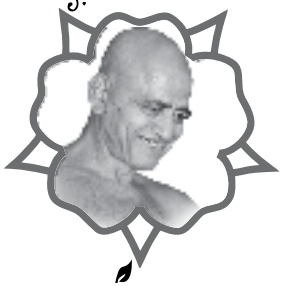

अथाष्टकम्

उपजातिः -

रम्यैर्जलै-र्मिश्रित-चन्दनौघैः
संसार-तापाहतये सुशान्त्यै।
जलाञ्जलि-प्राप्तरजोभि-शान्त्यै
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥ १॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रवज्रा -

सत्कुङ्कुमैः सज्जतरैः सुगन्धैः
सन्तप्तहेम्नश्च रसैरिवेद्धैः।
सच्चन्दनै-र्नन्दित-भृङ्गवृन्दैस्-
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥ २॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पुञ्जै-रिवाखण्ड-वृषस्य दीर्घैः
स्वच्छैर्मुनीनां मनसा समानैः।

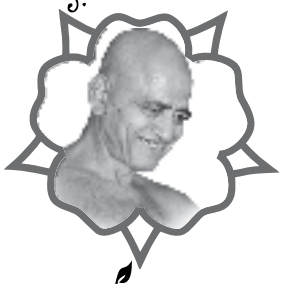

रम्यै-रखण्डाक्षत-नव्यपुञ्जैः
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥ ३॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धाव-लुब्धा-खिल-पुष्पलिड्भिः
सत्पुष्प - बाणा - हतये सुपुष्पैः।
राजीव - जातीशत - पत्रकाद्यैस्-
तत्कर्म - दाहार्थ - मजं यजेऽहम्॥ ४॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

साज्यैः समृद्धैर्वर-शिष्ट-सिद्धैः
नैवेद्यकैर्नव्य-रसात्त-भावैः।
वाष्पाय-मानैर्हृदयाव-भासैस् -
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥ ५॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपैः सुदीप्तैर्दलितान्धकारैः
चन्द्राख्य-रत्नोत्तमजै-रतीद्धैः।
अज्ञान-तामस्य-निवारणाय
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥ ६॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एनःसमूहा-हतये नितान्तं
ज्ञानादि-दाहोद्भव-धूमकैर्वा।
सद्धूप-धूमैर्धृतधर्म-सिद्ध्यै
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥ ७॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

घोटा-सुनारङ्ग-सुलाङ्गलीभि-
र्द्राक्षा-सुराजादन-दाडिमाद्यैः।

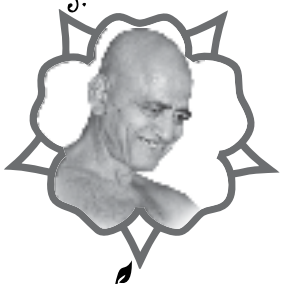

फलैर्निराशा-फल-भावलब्ध्यै
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥ ८॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उपजातिः - दृग्ज्ञान-सम्यक्त्व-सुवीर्य-सूक्ष्मं
सद्गाह-सत्सप्तम-मव्यबाधम्।
विकर्मभावं कुसुमाञ्जलीभिस्-
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥ ९॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम्- सिद्धान् सिद्धमहोदयान् गुणगणा-धीशानहं तोष्टवी-
म्याकारेण हि किञ्चि-दून-वपुषः पूर्वाच्छरीराद् ध्रुवम्।
इष्टानिष्ट-महारि- कर्मनिगडै- र्मुक्तांश्चिदानन्दकां-
स्त्रैलोक्याग्रनिवासिनः श्रितवतो मुक्त्यङ्गनां शाश्वतीम्॥१०॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ प्रत्येकमन्त्राः

१. ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानाय नमः स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः स्वाहा।
४. ॐ ह्रीं अनन्तसुखाय नमः स्वाहा।
५. ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्वाय नमः स्वाहा।
६. ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्माय नमः स्वाहा।
७. ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः स्वाहा।
८. ॐ ह्रीं अवगाहनाय नमः स्वाहा।
९. ॐ ह्रीं अक्षोभाय नमः स्वाहा।
१०. ॐ ह्रीं अचलाय नमः स्वाहा।
११. ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः स्वाहा।
१२. ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः स्वाहा।
१३. ॐ ह्रीं अजराय नमः स्वाहा।
१४. ॐ ह्रीं अमराय नमः स्वाहा।
१५. ॐ ह्रीं अप्रमेयाय नमः स्वाहा।
१६. ॐ ह्रीं अविलीनाय नमः स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ जयमाला

तोटकम् - अपनीत-विकल्प-समूह-रणं भुवि-भस्मित-कर्म-घनाग्नि-गणम्।
गुणराजि-विराजित-भावमहं प्रणमामि सुसिद्ध-गणेश-महम्॥ १॥

धृत-चिन्मय-रूप-मरूपयुतं सुरराज-नराधिप-शेषनुतम्।
गुणराजि-विराजित-भावमहं प्रणमामि सुसिद्ध-गणेश-महम्॥ २॥

विगतातप-साद-विषाद-रतिं गुरु-शान्तिगतं हत-पाप-मतिम्।
गुणराजि-विराजित-भावमहं प्रणमामि सुसिद्ध-गणेश-महम्॥ ३॥

मद-खेद-महीधर-नाशपविं भयभीम-निशाचर-चारुरविम्।
गुणराजि-विराजित-भावमहं प्रणमामि सुसिद्ध-गणेश-महम्॥ ४॥

वर-मुक्तिवधू-रमणं विरणं चिद-नन्तगुणं जित-कामकणम्।
गुणराजि-विराजित-भावमहं प्रणमामि सुसिद्ध-गणेश-महम्॥ ५॥

वरधीक्षण-सौख्य-सुवीर्यमयं निजबोध-विलोकित-वस्तुचयम्।
गुणराजि-विराजित-भावमहं प्रणमामि सुसिद्ध-गणेश-महम्॥ ६॥

गतसंसृति-सागर-पारपरं हतदोष-कषाय-कलङ्कभरम्।
गुणराजि-विराजित-भावमहं प्रणमामि सुसिद्ध-गणेश-महम्॥ ७॥

शुचि-केवलदर्शन-बोधधरं हतसम्भव-जाति-विनाशजरम्।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम्॥ ८॥

स्व-रसामृत-मन्थर-रूपमजं भुवनत्रय-मस्तक-वारगजम्।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम्॥ ९॥

समभावि-विभासित-जीवगुणं परमाचल-नित्यगुणा-भरणम्।
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम्॥ १०॥

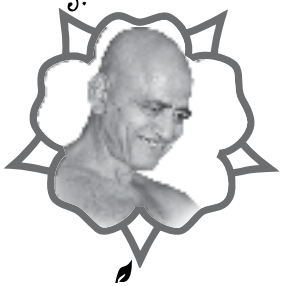

शार्दूलविक्रीडितम्- यन्नामग्रहणादरेषु जगतीपृष्ठे फणीभारयो-
भीमा वारिचरा मृगेशशरभाः सौख्याय यान्ति क्षणात्।
प्राप्यन्ते स्मरणेन दिव्यविषयाश्चार्घ्यं हि तस्मै ददे
वश्या सिद्धगणाय सिद्धिरमणी यद्ध्यानतो जायते॥११॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुष्टुप्- चिद्रूपं सिद्धचक्रं यो यजते भक्तिमानसौ।
पद्मकीर्तिसमो भूत्वा लभते सिद्धिसङ्गतिम्॥१२॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ तृतीयपरिधौ द्वात्रिंशत्कमलदलपूजा

शार्दूलविक्रीडितम्- ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥

इति पठित्वा कोष्ठकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ स्थापना

अनुष्टुप्- निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या- सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टकम्

द्रुतविलम्बितम् - **निज-मनोमणि-भाजन-भारया शम-रसैक-सुधा-रसधारया।**
सकल-बोधकला-रमणीयकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥ १॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज-कर्मकलङ्क-विनाशनै-रमल-भाव-सुवासित-चन्दनैः।
अनुपमान-गुणावलि-नायकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥ २॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजभाव-सुनिर्मल-तण्डुलैः सकल-दोष-विशाल-विशोधनैः।
अनुपरोध-सुबोध-निधानकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥ ३॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

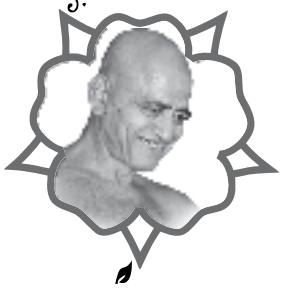

समयसार-सुपुष्प-सुमालया सहज-कर्मकरेण विशोधया।
परम-योगबलेन वशीकृतं सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥ ४॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृतबोध-सुदिव्य-नैवेद्यकैर्विहित-जाति-जरामरणान्तकैः।
निरवधि-प्रचुरात्म-गुणालयं सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥ ५॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज-रत्नरुचि-प्रतिदीपकैः रुचि-विभूति-तमःप्रविनाशनैः।
निरवधिं सुविकाश-प्रकाशनैः सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥ ६॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज-गुणाक्षय-रूप-सुधूपकैः स्वगुण-घाति-मलप्रविनाशनैः।
विशद-बोध-सुदीर्घ-सुखात्मकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥ ७॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

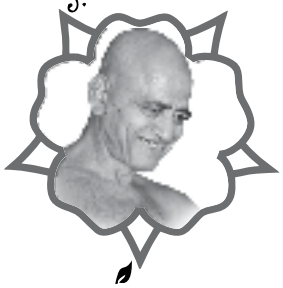

परम-भाव-फलावलि-सम्पदा सहज-भाव-विभाव-विशोधया।
निज-गुणास्फुरणात्म-निरञ्जनं सहज-सिद्धमहं परिपूजये॥ ८॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम्- नेत्रोन्मील-विकाश-भावनिवहै-रत्यन्त-बोधाय वै
वार्गन्धाक्षत-पुष्पदाम-चरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः।
यश्चिन्तामणि-शुद्धभाव-परम-ज्ञानात्मकै-रर्चयेत्
सिद्धः स्यात्तमगाध-बोध-ममलं सञ्चर्चयामो वयम्॥ ९॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम्- त्रैलोक्येश्वर-वन्दनीय-चरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं
यानाराध्य निरुद्ध-चण्डमनसः सन्तोऽपि तीर्थङ्कराः।
सत्सम्यक्त्व-विबोध-वीर्य-विशदा-व्याबाधता-द्यैर्गुणैः
युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान्॥ १०॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ प्रत्येकमन्त्राः

१. ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्याय नमः स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं शुद्धचैतन्याय नमः स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानाय नमः स्वाहा।
४. ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपाय नमः स्वाहा।
५. ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा।
६. ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय नमः स्वाहा।
७. ॐ ह्रीं शुद्धावलोकिने नमः स्वाहा।
८. ॐ ह्रीं शुद्धदृढाय नमः स्वाहा।
९. ॐ ह्रीं शुद्धस्वयम्भुवे नमः स्वाहा।
१०. ॐ ह्रीं शुद्धयोगिने नमः स्वाहा।
११. ॐ ह्रीं शुद्धजाताय नमः स्वाहा।
१२. ॐ ह्रीं शुद्धतपसे नमः स्वाहा।
१३. ॐ ह्रीं शुद्धमूर्तये नमः स्वाहा।
१४. ॐ ह्रीं शुद्धसुखाय नमः स्वाहा।
१५. ॐ ह्रीं शुद्धपावनाय नमः स्वाहा।
१६. ॐ ह्रीं शुद्धशरीराय नमः स्वाहा।
१७. ॐ ह्रीं शुद्धप्रमेयाय नमः स्वाहा।

१८. ॐ ह्रीं शुद्धोपयोगाय नमः स्वाहा।
१९. ॐ ह्रीं शुद्धभोगाय नमः स्वाहा।
२०. ॐ ह्रीं शुद्धात्मने नमः स्वाहा।
२१. ॐ ह्रीं शुद्धार्हज्जाताय नमः स्वाहा।
२२. ॐ ह्रीं शुद्धनिपाताय नमः स्वाहा।
२३. ॐ ह्रीं शुद्धार्हगर्भवासाय नमः स्वाहा।
२४. ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धवासाय नमः स्वाहा।
२५. ॐ ह्रीं शुद्धपरमवासाय नमः स्वाहा।
२६. ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धपरमात्मने नमः स्वाहा।
२७. ॐ ह्रीं शुद्धानन्ताय नमः स्वाहा।
२८. ॐ ह्रीं शुद्धशान्ताय नमः स्वाहा।
२९. ॐ ह्रीं शुद्धभदन्ताय नमः स्वाहा।
३०. ॐ ह्रीं शुद्धनीरूपाय नमः स्वाहा।
३१. ॐ ह्रीं शुद्धनिर्वाणाय नमः स्वाहा।
३२. ॐ ह्रीं शुद्धसन्दर्भगर्भाय नमः स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः**' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ जयमाला

मौक्तिकदाम - विराग सनातन शान्त निरंश निरामय निर्भय निर्मल हंस।
सुधाम विबोधनिधान विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ १॥

विदूरितसंसृतिभाव निरङ्ग शमामृतपूरित देव विसङ्ग।
अबन्ध कषायविहीन विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ २॥

निवारितदुष्कृतकर्मविपाश सदामल-केवल-केलिनिवास।
भवोदधिपारग शान्त विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ ३॥

अनन्त-सुखामृत-सागर धीर कलङ्क-रजोभर-भूरिसमीर।
विखण्डितकाम विराम विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ ४॥

विकारविवर्जित तर्जितशोक विबोधसुनेत्रविलोकितलोक।
विहार विराव विरङ्ग विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ ५॥

रजोमल-खेदविमुक्त विगात्र निरन्तर-नित्यसुखामृतपात्र।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ ६॥

नरामरवन्दितनिर्मलभाव अनन्तमुनीश्वरपूज्य विहाव।
सदोदय विश्वमहेश विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ ७॥

विदम्भ वितृष्ण विदोष विनिद्र परापरशंकरसार वितन्द्र।
विकोप विरूप विशङ्क विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ ८॥

जरामरणोज्झित वीतविहार विचिन्तित निर्मल निरहङ्कार।
अचिन्त्यचरित्र विदर्प विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ ९॥

विवर्ण विगन्ध विमान विलोभ विमाय विकाय विशब्द विशोभ।
अनाकुल केवल सार्व विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥ १०॥

मालिनी - असम-समयसारं चारु-चैतन्य-चिह्नं
पर-परिणति-मुक्तं पद्मनन्दीन्द्र-वन्द्यम्।
निखिल-गुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम्॥ ११॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुष्टुप् - चिद्रूपं सिद्धचक्रं यो यजते भक्तिमानसौ।
दिव्याभ्युदयं भुक्त्वा लभते सिद्धसङ्गतिम्॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ चतुर्थपरिधौ चतुःषष्ठिकमलदलपूजा

शार्दूलविक्रीडितम् - ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥

इति पठित्वा कोष्ठकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ स्थापना

अनुष्टुप् - निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या - सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टकम्

मालिनी - जयति जगति यस्य प्राभवं सम्यगात्मो-
दयविजितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम्।
सुरसरिदमलाम्भो-धारयाऽऽराधनीयं
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ १॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।*

---

* दिगम्बर जैन परम्परा में चार प्रकार के गणधरवलय-मन्त्र प्राप्त होते हैं। जिस प्राचीन संस्करण के आधार पर यह संशोधित संस्करण तैयार किया गया है, उसमें दिए गए गणधरवलय मन्त्र का यह संशोधित रूप है।

चूँकि यह पूजा पद्मनन्दी जी द्वारा रचित है अतः उन्हीं के द्वारा रचित मन्त्र को पूजा में स्थान देना तार्किक रूप से उचित है तथापि प्राचीन प्रति की परम्परानुरूप यह मन्त्र दिया है। दिगम्बर जैन परम्परा में प्राप्त चारों गणधरवलय-मन्त्र एवं उनके सन्दर्भ इस प्रकार हैं -

१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं अष्टचत्वारिंशद्-गणधरवलयाय नमः।
श्रीमट्टिमडिभट्टोपाध्याय एवं महाहोम विधि

२. ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः।
आचार्य सकलकीर्ति एवं प्रतिष्ठारत्नाकर में संकलित

३. ॐ णमो अरहंताण ॐ णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः।
आचार्य पद्मनन्दी

४. ॐ णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः।
प्रभाचन्द्राचार्य

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योति यस्मात्
विशदविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम्।
शुचितर-घनसारोल्लासिभिश्चन्दनौघै-
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ २॥

ॐ ह्रीं इर्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमहमिकयोच्चैः सम्यगाराधनायां
सुरनरखचरेन्द्राः यस्य भक्त्या यतन्ते।
ललित-सदक-पुञ्जैः केवल-ज्ञानहेतो-
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ३॥

ॐ ह्रीं इर्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भवभयगुरु-पारावार-पारं लभन्ते
विहितशिवसमृद्धेः सेवया यस्य सन्तः।
कमल-वकुल-कुन्दो-दार-मन्दारपुष्पै-
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ४॥

ॐ ह्रीं इर्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जनन-वन-हुताशं छिन्न-सन्मोह-पाशं
शमित-मदनमानं विश्वविद्यानिधानम्।
चरुभि-रुरु-गुणौघं प्रीणितप्राणिसङ्घं
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ५॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिदचिदखिल-जीवाजीवभेदादिवेद्यं
सकल-भुवन-नेत्रं ज्ञान-माविष्करोति।
स्मरण-मपि यदीयं दीप-दीप्तप्रभौघैः
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ६॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भवति न भवभाजां ध्यानतो यस्य पीडा
ग्रहदिति-शितिरक्षः-प्रेतभूत-प्रसूता।
अगुरु-तुहिन-भास्वच्चान्दनोद्धूतधूपैः
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ७॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलमतुलमनन्तं मुक्तिसौख्यं प्रदीप्तं
फलति विपुलसेवा सम्यगाविःकृतोच्चैः।
असदृश-महिम-श्रीमन्दिरं मातुलिङ्गै-
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ८॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनव-जलगन्धा-मन्द-मन्दारमाला-
ललित-ममल-मर्घ्यं सन्ददाम्यादरेण।
गणधर-वलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी
सुर-हरि-महितायाः प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः॥ ९॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक मन्त्राः

१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं स्वाहा।
४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं स्वाहा।

५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं स्वाहा।
६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं स्वाहा।
७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं स्वाहा।
८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं स्वाहा।
९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं स्वाहा।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं स्वाहा।
११. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं स्वाहा।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं स्वाहा।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं स्वाहा।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं स्वाहा।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो (अभिण्ण) दसपुव्वियाणं स्वाहा।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चोद्दसपुव्वियाणं स्वाहा।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं स्वाहा।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण(इड्ढि)पत्ताणं स्वाहा।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं स्वाहा।

२०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं स्वाहा।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं स्वाहा।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं स्वाहा।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं स्वाहा।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं स्वाहा।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं स्वाहा।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं स्वाहा।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं स्वाहा।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं स्वाहा।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं स्वाहा।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं स्वाहा।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं स्वाहा।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारीणं स्वाहा।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं स्वाहा।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं स्वाहा।

३५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं स्वाहा।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं स्वाहा।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं स्वाहा।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं स्वाहा।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं स्वाहा।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं स्वाहा।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं स्वाहा।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं स्वाहा।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं स्वाहा।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं स्वाहा।
४५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं स्वाहा।
४६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं स्वाहा।
४७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्वसिद्धायदणाणं स्वाहा।
४८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्धिरिसीणं स्वाहा।
४९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सत्तड्ढिपत्ताणं स्वाहा।
५०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धाणं स्वाहा।

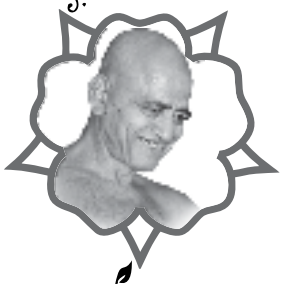

५१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाणं स्वाहा।
५२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ज्झेयसिद्धाणं स्वाहा।
५३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वत्थुबुद्धाणं स्वाहा।
५४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्थिसिद्धाणं स्वाहा।
५५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमप्पसिद्धाणं स्वाहा।
५६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परबंभसिद्धाणं स्वाहा।
५७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमग्गसिद्धाणं स्वाहा।
५८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाससिद्धाणं स्वाहा।
५९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंभूसिद्धाणं स्वाहा।
६०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतगुणसिद्धाणं स्वाहा।
६१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमाणंतगुणसिद्धाणं स्वाहा।
६२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोयग्गवासिसिद्धाणं स्वाहा।
६३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणाइणिहणसिद्धाणं स्वाहा।
६४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अड्ढाइज्जदीवसिद्धाणं स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः**' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ जयमाला

शार्दूलविक्रीडितम् - योगीन्द्रैर्निजमानसे प्रतिदिनं सञ्चिन्तनीयाः स्वयं
देवा इन्द्र-नरेन्द्र-पूजितपदा दुष्कर्म-विच्छित्तये।
कर्मावद्य-विवर्जिता वसुगुणा-लङ्कारभूताः सदा
सिद्धान्तान् जयमालया विमलया भक्त्या स्तवीमि श्रिये॥ १॥

मौक्तिकदाम - महा-दृढ-मोहविधेः परमुक्त स्वकीय-गुणद्रविण-द्युतिरक्त।
चिदात्म-रुचे निजजात विकाय पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय॥ २॥

चिदावरण-क्षय-निश्चित-वास स्वनन्त-पदार्थ-विभेद-समास।
चिदात्म-चितो निजजीत-निकाय पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय॥ ३॥

स्वकातम-वर्जित दर्शनधार स्वलेपित-दर्शन-लोपकभार।
सुकेवल-दर्शनतोय विकाय पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय॥ ४॥

सुदृक्-चिदनन्त-सुशक्तिक-देह क्षयङ्कृत-विघ्नकर-व्रजगेह।
चिदात्म-सुवीर्य-गुणेन विकाय पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय॥ ५॥

क्षयङ्गत-नाम चिरन्धृत-सूक्ष्म समीप-विनिर्मित-तद्गुण-लक्ष्म।
चिदात्मक-सूक्ष्म-गुणेन विकाय पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय॥ ६॥

अरूप्यव-गाहन-भावसुपूर चतुर्विध-पाप-विकर्दम-दूर।
तत-स्वमनन्त-गुणेन विकाय पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय॥ ७॥

निरस्त-गुरुत्व-लघुत्वक-भाव तथा भव-कानन-दुःसह-दाव।
द्विधातुल-कर्मगतेन विकाय पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय॥ ८॥

द्विधाहत-दुःखद-वेदनपक्ष स्वकात्म-समर्पित-शाश्वत-सौख्य।
अबाधक-देवगुणेन विकाय पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय॥ ९॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मालिनी - विधुत-कुविधि-पाशं मुक्ति-लीलाविलासं
परम-गुण-निवासं चित्सरो-राजहंसम्।
विनुत-नृपसुचक्रैः संस्तुतं सिद्धचक्र-
मतनु च निजभक्त्या वन्दते शौभचन्द्रः॥ १०॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ पञ्चमपरिधौ अष्टविंशोत्तरशतकमलदलपूजा

शार्दूलविक्रीडितम् - ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥

इति पठित्वा कोष्ठकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ स्थापना

अनुष्टुप् - निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या - सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

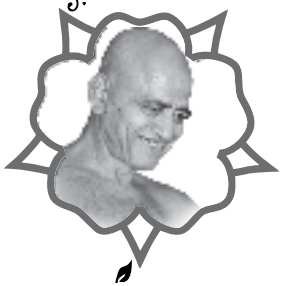

अथाष्टकम्

द्रुतविलम्बितम् - विमल-शीतल-सज्जलधारया
सविध-बन्धुर-केशर-सारया।
प्रथम-बोधक-सत्क-जिनेश्वरं
प्रवियजे नुत-नाक-नरेश्वरम्॥ १॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घुसृण-कुङ्कुम-चन्दन-सद्भवैः
बहु-सुगन्धित-निर्मल-प्रासुकैः।
प्रथम-बोधक-सत्क-जिनेश्वरं
प्रवियजे नुत-नाक-नरेश्वरम्॥ २॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल-तण्डुल-निर्मल-सञ्चयैः
कृत-सुमौक्तिक-कल्प-सुनिश्चयैः।

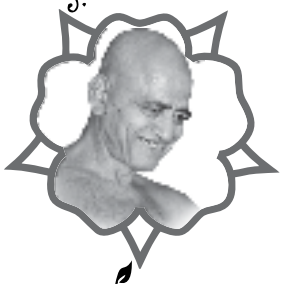

प्रथम-बोधक-सत्क-जिनेश्वरं
प्रवियजे नुत-नाक-नरेश्वरम्॥ ३॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम-चम्पक-पङ्कज-कुन्दकैः
सहज-जात-सुगन्ध-विमोदकैः।
प्रथम-बोधक-सत्क-जिनेश्वरं
प्रवियजे नुत-नाक-नरेश्वरम्॥ ४॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल-लोक-विमोदन-कारकैः
चरुवरैश्च सुधा-कृति-धारकैः।
प्रथम-बोधक-सत्क-जिनेश्वरं
प्रवियजे नुत-नाक-नरेश्वरम्॥ ५॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तरलवार-सुकान्त-सुमण्डनैः
सदन-रत्नचयै-रघ-खण्डनैः।
प्रथम-बोधक-सत्क-जिनेश्वरं
प्रवियजे नुत-नाक-नरेश्वरम्॥ ६॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिनः नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरु-धूप-भवेन सुगन्धिना
भ्रमर-कोटि-समिन्द्रिय-बन्धुना।
प्रथम-बोधक-सत्क-जिनेश्वरं
प्रवियजे नुत-नाक-नरेश्वरम्॥ ७॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद-पक्व-सुशोभन-सत्फलैः
क्रमुक-निम्बुक-मोच-सुलाङ्गलैः।
प्रथम-बोधक-सत्क-जिनेश्वरं
प्रवियजे नुत-नाक-नरेश्वरम्॥ ८॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवरागम-सद्गुरु-मुख्यकान्
प्रवियजे गुरु-सद्गुण-मुख्यकान्।
सुशुभ-चन्द्रतरान् कुसुमोत्करान्
समयसार-परान् सुखसागरे॥ ९॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम् - **ये ज्ञानावरणादिका-नतितरां निर्मूल्य-दोषान् बलात्**
संसारोरु-सरिद्विशोषक-महः सन्दर्शनादीन् गताः।
सिद्धस्तोत्र-विबुद्ध-ज्ञानमहसां कुर्वन्तु सिद्धाः श्रियं
चक्रिप्रह्व-सुरेन्द्र-पूजितपदा भक्तात्मनां सर्वदा॥ १०॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ प्रत्येकमन्त्राः

१ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।
२ ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।
३ ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

४ ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

५ ॐ ह्रीं वस्तुत्वधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

६ ॐ ह्रीं प्रमेयत्वधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

७ ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

८ ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

९ ॐ ह्रीं अमूर्तत्वधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

१० ॐ ह्रीं सम्यक्त्वधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

११ ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

१२ ॐ ह्रीं जीवधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

१३ ॐ ह्रीं सूक्ष्मधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

१४ ॐ ह्रीं अवगाहनधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

१५ ॐ ह्रीं अव्याबाधधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

१६ ॐ ह्रीं स्वसम्वेदनज्ञानधर्मसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

१७ ॐ ह्रीं स्वस्वरूपध्यानसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।

१८ ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।
१९ ॐ ह्रीं सम्यक्त्वादिगुणसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।
२० ॐ ह्रीं पञ्चाचरणसम्पन्नसिद्धाय नमः स्वाहा।
२१ ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
२२ ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
२३ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसंरम्भमुक्त-सिद्धाय नमः स्वाहा।
२४ ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
२५ ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
२६ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
२७ ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
२८ ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
२९ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
३० ॐ ह्रीं मानकृतमनःसंरम्भमुक्त-सिद्धाय नमः स्वाहा।
३१ ॐ ह्रीं मानकारितमनःसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

३२ ॐ ह्रीं मानानुमतमन:संरम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

३३ ॐ ह्रीं मानकृतमन:समारम्भमुक्त-सिद्धाय नम: स्वाहा।

३४ ॐ ह्रीं मानकारितमन:समारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

३५ ॐ ह्रीं मानानुमतमन:समारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

३६ ॐ ह्रीं मानकृतमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

३७ ॐ ह्रीं मानकारितमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

३८ ॐ ह्रीं मानानुमतमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

३९ ॐ ह्रीं मायाकृतमन:संरम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

४० ॐ ह्रीं मायाकारितमन:संरम्भमुक्त-सिद्धाय नम: स्वाहा।

४१ ॐ ह्रीं मायानुमतमन:संरम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

४२ ॐ ह्रीं मायाकृतमन:समारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

४३ ॐ ह्रीं मायाकारित-मन:समारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

४४ ॐ ह्रीं मायानुमतमन:समारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

४५ ॐ ह्रीं मायाकृतमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नम: स्वाहा।

४६ ॐ ह्रीं मायाकारितमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
४७ ॐ ह्रीं मायानुमतमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
४८ ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
४९ ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५० ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५१ ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५२ ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५३ ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५४ ॐ ह्रीं लोभकृतमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५५ ॐ ह्रीं लोभकारितमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५६ ॐ ह्रीं लोभानुमतमनसारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५७ ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५८ ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५९ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

६० ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६१ ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६२ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६३ ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६४ ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६५ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६६ ॐ ह्रीं मानकृतवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६७ ॐ ह्रीं मानकारितवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६८ ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
६९ ॐ ह्रीं मानकृतवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७० ॐ ह्रीं मानकारितवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७१ ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७२ ॐ ह्रीं मानकृतवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७३ ॐ ह्रीं मानकारितवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

७४ ॐ ह्रीं मानानुमतवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७५ ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७६ ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७७ ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७८ ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
७९ ॐ ह्रीं मायाकारित–वचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८० ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८१ ॐ ह्रीं मायाकृतवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८२ ॐ ह्रीं मायाकारितवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८३ ॐ ह्रीं मायानुमतवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८४ ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८५ ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८६ ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८७ ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

८८ ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

८९ ॐ ह्रीं लोभानुमत–वचनसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९० ॐ ह्रीं लोभकृतवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९१ ॐ ह्रीं लोभकारितवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९२ ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९३ ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९४ ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९५ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९६ ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९७ ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९८ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

९९ ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

१०० ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायारम्भमुक्त–सिद्धाय नमः स्वाहा।

१०१ ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

१०२ ॐ ह्रीं मानकृतकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०३ ॐ ह्रीं मानकारित–कायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०४ ॐ ह्रीं मानानुमतकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०५ ॐ ह्रीं मानकृतकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०६ ॐ ह्रीं मानकारितकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०७ ॐ ह्रीं मानानुमतकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०८ ॐ ह्रीं मानकृतकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०९ ॐ ह्रीं मानकारितकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
११० ॐ ह्रीं मानानुमतकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१११ ॐ ह्रीं मायाकृतकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
११२ ॐ ह्रीं मायाकारितकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
११३ ॐ ह्रीं मायानुमतकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
११४ ॐ ह्रीं मायाकृतकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
११५ ॐ ह्रीं मायाकारितकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

११६ ॐ ह्रीं मायानुमतकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
११७ ॐ ह्रीं मायाकृतकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
११८ ॐ ह्रीं मायाकारितकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
११९ ॐ ह्रीं मायानुमतकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२० ॐ ह्रीं लोभकृतकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२१ ॐ ह्रीं लोभकारितकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२२ ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसंरम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२३ ॐ ह्रीं लोभकृतकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२४ ॐ ह्रीं लोभकारितकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२५ ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसमारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२६ ॐ ह्रीं लोभकृतकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२७ ॐ ह्रीं लोभकारितकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२८ ॐ ह्रीं लोभानुमतकायारम्भमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः**' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ जयमाला

भुजङ्गप्रयातम् -

चिदानन्द-मानन्द-लीला-निवासं
अखण्ड-स्वभावं जिनं सिद्धराशिम्।
विषादोज्झितं वीतरागं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ १॥

विशुद्धोदयं प्राप्त-संसार-पारं
सुसम्विन्निधानं परं निर्विकारम्।
विमायं विभायं विनायं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ २॥

विमुक्ता-शयादित्य-विज्ञाननेत्रं
विमोहं समस्फार-पीयूषगात्रम्।
अमेय-प्रभावं विदर्पं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ ३॥

विविक्तं कलं निष्कलङ्कं कविस्थं
सुसेव्यं विपाकं विशङ्कं ह्यपारम्।
विकालं विकायं विकामं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ ४॥

त्रिलोकाति-शायिप्रभं विश्वरूपं
गृहं तेजसा वीतवर्णं विरूपम्।
सदा दृङ्मयं ध्येयरूपं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ ५॥

अगम्यं मुनीना-मपि सुप्रबोधं
कृताहङ्कृति-क्रोध-चिन्तानिरोधम्।
अपारं जरा-मृत्यु-मुक्तं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ ६॥

अनन्तं विरामं विकाराव-मुक्तं
विमुक्त-स्फुरत्-कामिनी-रंगरक्तम्।

निरीहापघातं विहीनं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ ७॥

प्रदुष्टाष्ट-कर्मेन्धनेभ्यो हुताशं
सुसिद्धाष्टकं चिद्गुणं चिद्विलासम्।
उदासीन-मीशान-मीशं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ ८॥

अजं शाश्वतं निर्जरं देवदेवं
विलोभं कृतानेक-भूपालसेवम्।
वषट्-वैकृतं वा विपाशं विचक्रं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ ९॥

प्रयाति क्षयं कर्म यद्ध्यान-योगात्
समत्वं गतानां मुनीनां क्षणेन।
प्रसिद्धं विशुद्धं तथानन्दरूपं
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्॥ १०॥

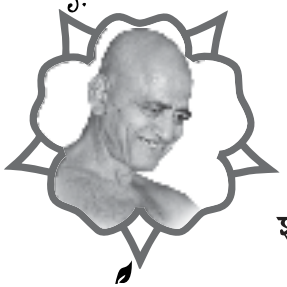

विगत-मदनभेदं दोषसंदोह-रोधं
स्मरति विरसपूर्णं शङ्करं सारभूतम्।
अजर-ममर-वन्द्यं पद्मनन्द्या-दिदेवं
मुनि-निवह-निषेव्यं सिद्धचक्रं सुदेवम्॥ ११॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम् - इत्थं सिद्ध-मुपास्य शर्मसहितं संसार-बाधापहं
नोद्रव्याशुभ-भावकर्म-रहितं सम्पन्न-पर्यापहम्।
यो ध्यायेत्-फलमश्नुते शिवमयं सौमं स हित्वाऽशिवं
संभुक्त्वा-खिलमण्डलेश-विबुध-स्वामिस्थितिं सर्वतः॥ १२॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ षष्ठपरिधौ षट्पञ्चाशदुत्तरद्विशतकमलदलपूजा

शार्दूलविक्रीडितम् - ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्ग्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥

इति पठित्वा कोष्ठकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ स्थापना

अनुष्टुप् - निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या - सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टकम्

मालिनी - शुचिविमलपवित्रैस्तीर्थसम्भूततोयैः
सुरभिवरसुमिश्रैः सेवितैः षट्पदौघैः।
कनककृत-सुपूजादत्त-भृङ्गारनालैः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ १॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परिमल-बहुलीढैश्चन्दनैः कुङ्कुमौघैः
विविध-सुरभिद्रव्यैश्चारु-कर्पूरपुष्टैः।
अलिकुल-मिलितैस्तैर्घ्राणयुक्तै-रमीभिः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ २॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिकर-निकराभैर्भासितै-रक्षतौघैः
कलित-विमलशोभैः शुभ्र-डिण्डीर-पिण्डैः।
हसित-हरिसितैस्तैः पुञ्जितै-रक्षतोद्घैः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ ३॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्धूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल-बकुल-माला-मालतीमल्लिकाभिः
परिमल-बहलाभिर्भ्रामरी-सम्भ्रमाभिः।
सुर-तरु-वर-पुष्पैस्तै-रनेकै-रमीभिः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ ४॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्धूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मृदु-ललित-सुसिद्धैः सालि-सम्भूत-पूतैः
हिमकर-धवलैस्तैस्तण्डुल-व्यञ्जनाढ्यैः।

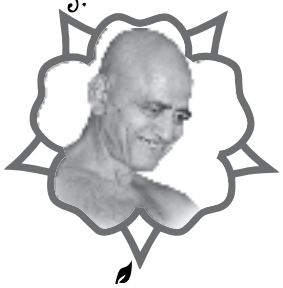

घृत-मधुर-सुपक्वै-श्चारु-पक्वान्न-शोभैः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ ५॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक-मणि-सुरत्नै-र्निर्मितै-र्दीप्त-दीपै-
रुडुगण-धृतकान्ति-त्रासितांहस्तमौघैः।
विकसित-वरबोधैः प्राति-हारार्तिकेन
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ ६॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरु-तगर-शुष्कैः शुद्ध-कर्पूर-पूरैः
मिलित-सुरभि-द्रव्यैश्चन्दनाद्यै-रनेकैः।
दहन-दहित-धूपै-र्निर्जरा-नन्द-भूतैः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ ७॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

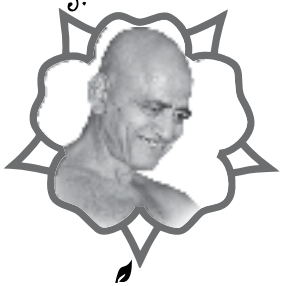

क्रमुक-फल-कपित्थैः श्रीफलाग्रैश्च मोचैः
पनस-बदर-चोचै-र्दाडिमैः पुञ्जपूरैः।
सरस-सुरभि-गन्धै र्भूतये त्मानितै स्तैः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ ८॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर-जल-फल-पुष्पै श्चन्दनै-रक्षतौ घैः
विरचित-कृत-भक्त्या शुक्ल-पुष्पाञ्जलीश्च।
मन-वचन-तनूत्था-कर्म-निर्मूलनेच्छुः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥ ९॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम् - **हेतु-द्वैत-बला-दुदीर्ण-सुदृशः सर्वंसहाः सर्वशस्-**
त्यक्त्वा सङ्ग-मजस्र-सुश्रुत-पराः संयम्य साक्षं मनः।

ध्यात्वा स्वे शमिनः स्वयं स्वममलं निर्मूल्य कर्माखिलं
ये शर्म-प्रगुणैश्चकासति शुभैस्ते भान्तु सिद्धा मयि॥ १०॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ प्रत्येकमन्त्राः

१. ॐ ह्रीं सकलज्ञानावरणकर्मविनाशकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं आभिनिबोधवारककर्मविनाशकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं श्रुतावरणकर्मविनाशकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४. ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरणकर्मविनाशकसिद्धाय नमः स्वाहा।
५. ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरणकर्मविनाशकसिद्धाय नमः स्वाहा।
६. ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरणकर्मविनाशकसिद्धाय नमः स्वाहा।
७. ॐ ह्रीं सर्वकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
८. ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
९. ॐ ह्रीं चक्षुर्दर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०. ॐ ह्रीं अचक्षुर्दर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

११. ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२. ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३. ॐ ह्रीं निद्रादर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४. ॐ ह्रीं निद्रानिद्रादर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५. ॐ ह्रीं प्रचलादर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१६. ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचलादर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१७. ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिदर्शनावरणकर्मविमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१८. ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मनिवारकसिद्धाय नमः स्वाहा।
१९. ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्मनिवारकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२०. ॐ ह्रीं सातावेदनीय-कर्मनिवारकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२१. ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२२. ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२३. ॐ ह्रीं सम्यङ्मिथ्यात्वकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२४. ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृतिकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२५. ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिक्रोधविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।

२६. ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिमानविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२७. ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिमायाविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२८. ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धिलोभविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
२९. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोधविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३०. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३१. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायाविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३२. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३३. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३४. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमानविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३५. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमायाविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३६. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३७. ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३८. ॐ ह्रीं संज्वलनमानविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
३९. ॐ ह्रीं संज्वलनमायाविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४०. ॐ ह्रीं संज्वलनलोभविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।

४१. ॐ ह्रीं हास्यनोकषायकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४२. ॐ ह्रीं रतिनोकषायकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४३. ॐ ह्रीं अरतिनोकषाय-कर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४४. ॐ ह्रीं शोकनोकषायकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४५. ॐ ह्रीं भयनोकषायकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४६. ॐ ह्रीं जुगुप्सानोकषायकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४७. ॐ ह्रीं स्त्रीवेदनोकषाय-कर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४८. ॐ ह्रीं पुम्वेदनोकषायकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
४९. ॐ ह्रीं नपुंसकवेदनोकषायकर्मविध्वंसकसिद्धाय नमः स्वाहा।
५०. ॐ ह्रीं आयुष्यकर्ममुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५१. ॐ ह्रीं नरकायुष्यकर्ममुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५२. ॐ ह्रीं तिर्यगायुष्यकर्ममुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५३. ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्यकर्ममुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५४. ॐ ह्रीं देवायुष्यकर्ममुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
५५. ॐ ह्रीं नामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।

५६. ॐ ह्रीं नारकगतिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
५७. ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
५८. ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
५९. ॐ ह्रीं देवगतिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६०. ॐ ह्रीं एकेन्द्रियजातिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६१. ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय-जातिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६२. ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजातिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६३. ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६४. ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियजातिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६५. ॐ ह्रीं औदारिक-शरीरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६६. ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६७. ॐ ह्रीं आहारकशरीरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६८. ॐ ह्रीं तैजसशरीरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
६९. ॐ ह्रीं कार्मणशरीर-नामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७०. ॐ ह्रीं औदारिकशरीरबन्धननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।

७१. ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरबन्धननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७२. ॐ ह्रीं आहारकशरीरबन्धननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७३. ॐ ह्रीं तैजसशरीरबन्धननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७४. ॐ ह्रीं कार्मणशरीर-बन्धननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७५. ॐ ह्रीं औदारिकशरीरसंघात-नामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७६. ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीरसंघातनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७७. ॐ ह्रीं आहारकशरीरसंघातनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७८. ॐ ह्रीं तैजसशरीरसंघातनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
७९. ॐ ह्रीं कार्मणशरीरसंघातनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८०. ॐ ह्रीं समचतुरस्त्रसंस्थाननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८१. ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थाननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८२. ॐ ह्रीं वल्मीकसंस्थाननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८३. ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थाननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८४. ॐ ह्रीं वामन- संस्थाननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८५. ॐ ह्रीं हुण्डकसंस्थाननामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।

८६. ॐ ह्रीं औदारिकशरीराङ्गोपाङ्गनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८७. ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीराङ्गोपाङ्गनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८८. ॐ ह्रीं आहारकशरीराङ्गोपाङ्गनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
८९. ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननानामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९०. ॐ ह्रीं वज्रनाराच-संहननानामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९१. ॐ ह्रीं नाराचसंहननानामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९२. ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसंहननानामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९३. ॐ ह्रीं कीलकसंहननानामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९४. ॐ ह्रीं असम्प्राप्ता-सृपाटिकासंहननानामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९५. ॐ ह्रीं श्वेतनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९६. ॐ ह्रीं पीतनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९७. ॐ ह्रीं हरितनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९८. ॐ ह्रीं रक्तनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
९९. ॐ ह्रीं कृष्णनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१००. ॐ ह्रीं सुगन्ध-नामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।

१०१. ॐ ह्रीं दुर्गन्धनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०२. ॐ ह्रीं तिक्तरसनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०३. ॐ ह्रीं कटु-रसनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०४. ॐ ह्रीं कषायरसनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०५. ॐ ह्रीं अम्लरसनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०६. ॐ ह्रीं मधुररसनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०७. ॐ ह्रीं मृदुस्पर्शनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०८. ॐ ह्रीं कर्कशस्पर्शनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१०९. ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
११०. ॐ ह्रीं लघुस्पर्श-नामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१११. ॐ ह्रीं शीतस्पर्शनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
११२. ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
११३. ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
११४. ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
११५. ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्विनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।

११६. ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्विनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
११७. ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्विनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
११८. ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्विनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
११९. ॐ ह्रीं अगुरुलघुनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२०. ॐ ह्रीं उपघातनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२१. ॐ ह्रीं परघातनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२२. ॐ ह्रीं आतपनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२३. ॐ ह्रीं उद्योतनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२४. ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वासनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२५. ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायोगतिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२६. ॐ ह्रीं अप्रशस्तविहायोगतिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२७. ॐ ह्रीं त्रसनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२८. ॐ ह्रीं स्थावरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१२९. ॐ ह्रीं बादरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३०. ॐ ह्रीं सूक्ष्मनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।

१३१. ॐ ह्रीं पर्याप्तिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३२. ॐ ह्रीं अपर्याप्तिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३३. ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३४. ॐ ह्रीं साधारणशरीरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३५. ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३६. ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३७. ॐ ह्रीं शुभनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३८. ॐ ह्रीं अशुभनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१३९. ॐ ह्रीं सुभगनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४०. ॐ ह्रीं दुर्भगनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४१. ॐ ह्रीं सुस्वरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४२. ॐ ह्रीं दुःस्वरनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४३. ॐ ह्रीं आदेयनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४४. ॐ ह्रीं अनादेयनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४५. ॐ ह्रीं स्थाननिर्माणनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।

१४६. ॐ ह्रीं प्रमाणनिर्माणनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४७. ॐ ह्रीं यशःकीर्तिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४८. ॐ ह्रीं अयशःकीर्तिनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१४९. ॐ ह्रीं तीर्थङ्करनामकर्मरहितसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५०. ॐ ह्रीं उच्चगोत्रकर्मनाशकसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५१. ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मनाशकसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५२. ॐ ह्रीं दानान्तरायकर्मघातकसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५३. ॐ ह्रीं लाभान्तरायकर्मघातकसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५४. ॐ ह्रीं भोगान्तरायकर्मघातकसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५५. ॐ ह्रीं उपभोगान्तरायकर्मघातकसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५६. ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायकर्मघातकसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५७. ॐ ह्रीं कर्माष्टकविप्रमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५८. ॐ ह्रीं अष्टचत्वारिंशदुत्तरशतकर्मविप्रमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१५९. ॐ ह्रीं संख्यातकर्मविप्रमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१६०. ॐ ह्रीं असंख्यातकर्मविप्रमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।

१६१. ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकर्मविप्रमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१६२. ॐ ह्रीं असंख्यातलोकप्रमाणप्रकृतिकर्मविप्रमुक्तसिद्धाय नमः स्वाहा।
१६३. ॐ ह्रीं आनन्दस्वभावाय नमः स्वाहा।
१६४. ॐ ह्रीं आनन्दधर्माय नमः स्वाहा।
१६५. ॐ ह्रीं आनन्दस्वरूपाय नमः स्वाहा।
१६६. ॐ ह्रीं परमानन्दधर्माय नमः स्वाहा।
१६७. ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय नमः स्वाहा।
१६८. ॐ ह्रीं अनन्तगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा।
१६९. ॐ ह्रीं अनन्तधर्माय नमः स्वाहा।
१७०. ॐ ह्रीं शमस्वभावाय नमः स्वाहा।
१७१. ॐ ह्रीं शमसन्तुष्टाय नमः स्वाहा।
१७२. ॐ ह्रीं शमसन्तोषाय नमः स्वाहा।
१७३. ॐ ह्रीं साम्यस्थानाय नमः स्वाहा।
१७४. ॐ ह्रीं साम्यगुणाय नमः स्वाहा।
१७५. ॐ ह्रीं साम्यकृतकृत्याय नमः स्वाहा।

१७६. ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय नमः स्वाहा।
१७७. ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय नमः स्वाहा।
१७८. ॐ ह्रीं अनन्यप्रमाणाय नमः स्वाहा।
१७९. ॐ ह्रीं प्रमाणभेदमुक्ताय नमः स्वाहा।
१८०. ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय नमः स्वाहा।
१८१. ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय नमः स्वाहा।
१८२. ॐ ह्रीं ब्रह्मचैतन्याय नमः स्वाहा।
१८३. ॐ ह्रीं शुद्धपरिणामकाय नमः स्वाहा।
१८४. ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय नमः स्वाहा।
१८५. ॐ ह्रीं अनन्तदृशे नमः स्वाहा।
१८६. ॐ ह्रीं अशुद्धिरहिताय नमः स्वाहा।
१८७. ॐ ह्रीं शुद्ध्यशुद्धिरहिताय नमः स्वाहा।
१८८. ॐ ह्रीं अनन्तदृक्स्वरूपाय नमः स्वाहा।
१८९. ॐ ह्रीं अनन्तदृगानन्दाय नमः स्वाहा।
१९०. ॐ ह्रीं अनन्तदृगुत्पादाय नमः स्वाहा।

१९१. ॐ ह्रीं अनन्तध्रुवाय नमः स्वाहा।
१९२. ॐ ह्रीं अनन्तव्ययभावाय नमः स्वाहा।
१९३. ॐ ह्रीं अनन्तविलयाय नमः स्वाहा।
१९४. ॐ ह्रीं अनन्ताकाराय नमः स्वाहा।
१९५. ॐ ह्रीं अनन्तभावाय नमः स्वाहा।
१९६. ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय नमः स्वाहा।
१९७. ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नमः स्वाहा।
१९८. ॐ ह्रीं चिद्रूपस्वरूपाय नमः स्वाहा।
१९९. ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरसाय नमः स्वाहा।
२००. ॐ ह्रीं स्वानुभूतिरताय नमः स्वाहा।
२०१. ॐ ह्रीं परमामृताय नमः स्वाहा।
२०२. ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय नमः स्वाहा।
२०३. ॐ ह्रीं परमप्रीतये नमः स्वाहा।
२०४. ॐ ह्रीं परमवल्लभभावाय नमः स्वाहा।
२०५. ॐ ह्रीं व्यक्तस्वभावाय नमः स्वाहा।

२०६. ॐ ह्रीं एकत्वभावाय नमः स्वाहा।
२०७. ॐ ह्रीं एकत्वस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२०८. ॐ ह्रीं द्वित्वविनाशकाय नमः स्वाहा।
२०९. ॐ ह्रीं शाश्वतप्रकाशाय नमः स्वाहा।
२१०. ॐ ह्रीं शाश्वतद्योताय नमः स्वाहा।
२११. ॐ ह्रीं शाश्वतामृतचन्द्राय नमः स्वाहा।
२१२. ॐ ह्रीं शाश्वतामृतमूर्तये नमः स्वाहा।
२१३. ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय नमः स्वाहा।
२१४. ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय नमः स्वाहा।
२१५. ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय नमः स्वाहा।
२१६. ॐ ह्रीं परमसूक्ष्मावकाशाय नमः स्वाहा।
२१७. ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय नमः स्वाहा।
२१८. ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय नमः स्वाहा।
२१९. ॐ ह्रीं निरवधिस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२२०. ॐ ह्रीं अतुलज्ञानाय नमः स्वाहा।

२२१. ॐ ह्रीं अतुलसुखाय नमः स्वाहा।
२२२. ॐ ह्रीं अतुलभावाय नमः स्वाहा।
२२३. ॐ ह्रीं अतुलगुणाय नमः स्वाहा।
२२४. ॐ ह्रीं अतुलप्रकाशाय नमः स्वाहा।
२२५. ॐ ह्रीं अचलाय नमः स्वाहा।
२२६. ॐ ह्रीं अचलगुणाय नमः स्वाहा।
२२७. ॐ ह्रीं अचलस्वभावाय नमः स्वाहा।
२२८. ॐ ह्रीं स्वरूपाय नमः स्वाहा।
२२९. ॐ ह्रीं निरालम्बाय नमः स्वाहा।
२३०. ॐ ह्रीं आलम्बरहिताय नमः स्वाहा।
२३१. ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा।
२३२. ॐ ह्रीं निष्कलङ्काय नमः स्वाहा।
२३३. ॐ ह्रीं नित्यालोकाय नमः स्वाहा।
२३४. ॐ ह्रीं आत्मरतये नमः स्वाहा।
२३५. ॐ ह्रीं स्वरूपगुप्ताय नमः स्वाहा।

२३६. ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय नमः स्वाहा।
२३७. ॐ ह्रीं असंसाराय नमः स्वाहा।
२३८. ॐ ह्रीं आनन्दिताय नमः स्वाहा।
२३९. ॐ ह्रीं स्वानन्दभावाय नमः स्वाहा।
२४०. ॐ ह्रीं स्वानन्दस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२४१. ॐ ह्रीं स्वानन्दगुणाय नमः स्वाहा।
२४२. ॐ ह्रीं स्वानन्दसन्तोषाय नमः स्वाहा।
२४३. ॐ ह्रीं शुद्धभावपर्यायाय नमः स्वाहा।
२४४. ॐ ह्रीं स्वातन्त्र्यधर्माय नमः स्वाहा।
२४५. ॐ ह्रीं आत्मस्वभावाय नमः स्वाहा।
२४६. ॐ ह्रीं परमचित्परिणताय नमः स्वाहा।
२४७. ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय नमः स्वाहा।
२४८. ॐ ह्रीं परमस्नातकाय नमः स्वाहा।
२४९. ॐ ह्रीं स्नातकधर्माय नमः स्वाहा।
२५०. ॐ ह्रीं सर्वावलोकनाय नमः स्वाहा।

२५१. ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय नमः स्वाहा।
२५२. ॐ ह्रीं लोकव्यापकाय नमः स्वाहा।
२५३. ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः स्वाहा।
२५४. ॐ ह्रीं अनादिस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२५५. ॐ ह्रीं अनाद्यनुपमसिद्धाय नमः स्वाहा।
२५६. ॐ ह्रीं अनादिगुणपरिपूर्णाय नमः स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः**' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ जयमाला

स्रग्धरा - **सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान् साधितात्म-स्वभावान्**
वन्दे सिद्धि-प्रसिद्ध्यै तदनुपम-गुण-प्रग्रहा-कृष्टितुष्टः।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणो(णा)च्छादि-दोषापहारात्
योग्यो-पादान-युक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः॥ १॥

नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुण-हतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः
अस्त्यात्मानादि-बद्धः स्वकृतज-फलभुक् तत्क्षयान्मोक्षभागी।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेह-प्रमिति-रुपसमाहार-विस्तार-धर्मा
ध्रौव्योत्पत्ति-व्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः॥ २॥

सत्त्वन्तर्बाह्य-हेतु-प्रभव-विमल-सद्दर्शन-ज्ञान-चर्या
सम्पद्धेति-प्रघात-क्षत-दुरित-तया व्यञ्जिताचिन्त्यसारैः।
कैवल्यज्ञान-दृष्टिप्रवर-सुख-महावीर्य-सम्यक्त्वलब्धि-
ज्योति-र्वातायनादि-स्थिर-परम-गुणै-रद्भुतै-र्भासमानः॥ ३॥

जानन् पश्यन् समस्तं सममनुपरतं सम्प्रतृप्यन् वितन्वन्
धुन्वन् ध्वान्तं नितान्तं निचितमनुपमं प्रीणयन्नीशभावम्।
कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा
आत्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन् सत् (न्) स्वयम्भूः प्रवृत्तः॥ ४॥

छिन्दन् शेषानशेषान्निगलबलकलींस्तैरनन्त-स्वभावैः
सूक्ष्मत्वाग्राऽवगाहा-गुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः।

अन्यैश्चान्य-व्यपोह-प्रवण-विषय-सम्प्राप्ति-लब्धिप्रभावै-
रूर्ध्वव्रज्यास्वभावात्समयमुपगतो धाम्नि सन्तिष्ठतेऽग्र्ये ॥ ५॥

अन्याकाराप्तिहेतुर्न च भवति परो येन तेनाल्पहीनः
प्रागात्मोपात्त-देह-प्रतिकृति-रुचिरा-कार एव ह्यमूर्तः।
क्षुत्तृष्णाश्वास-कास-ज्वर-मरण-जराऽनिष्ट-योग-प्रमोह-
व्यापत्त्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहतः कोऽस्य सौख्यस्य माता॥ ६॥

आत्मोपादान-सिद्धं स्वय-मतिशयवद्वीतबाधं विशालं
वृद्धिह्रास-व्यपेतं विषय-विरहितं निःप्रति-द्वन्द्व-भावम्।
अन्य-द्रव्यानपेक्षं निरुपम-ममितं शाश्वतं सर्व-कालम्
उत्कृष्टा-नन्तसारं परम-सुखमतस्-तस्य सिद्धस्य जातम्॥ ७॥

नार्थः क्षुत्तृड्विनाशाद्विविध-रसयुतै-रन्नपानै-रशुच्या-
नास्पृष्टे-र्गन्धमाल्यै-र्न हि मृदु-शयनै-र्ग्लानि-निद्राद्य-भावात्।
आतङ्कार्त्ते-रभावे तदुपशमन-सद्भेषजानर्थ-तावत्
दीपानार्थक्यवद्वा व्यपगत-तिमिरे दृश्यमाने समस्ते॥ ८॥

तादृक्-सम्पत्-समेता विविध-नयतपःसंयम-ज्ञान-दृष्टि-
चर्यासिद्धाः समन्तात्-प्रवितत-यशसो विश्व-देवाधिदेवाः।
भूता भव्या भवन्तः सकल-जगति ये स्तूयमाना विशिष्टैः
तान्सर्वान्नौम्यनन्तान्निजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम्॥ ९॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुष्टुप् - चिद्रूपं सिद्धचक्रं यो यजते भक्तिमानसौ।
दिव्याभ्युदयं भुक्त्वा लभते सिद्धसङ्गतिम्॥१०॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ सप्तमपरिधौ द्वादशोत्तरपञ्चशतकमलदलपूजा

शार्दूलविक्रीडितम् - ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्ग्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥

इति पठित्वा कोष्ठकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ स्थापना

अनुष्टुप् - निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या - सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टकम्

मालिनी -

जयति जगति यस्य प्राभवं सम्यगात्मो-
दयविजितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम्।
सुरसरिदमलाम्भो-धारयाऽऽराधनीयं
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ १॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योति यस्मात्
विशदविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम्।
शुचितर-घनसारोल्लासिभिश्चन्दनौघै-
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ २॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमहमिकयोच्चैः सम्यगाराधनायां
सुरनरखचरेन्द्राः यस्य भक्त्या यतन्ते।

ललित-सदक-पुञ्जैः केवल-ज्ञान-हेतो-
र्गणधर-वलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भवभयगुरु-पारा-वार-पारं लभन्ते
विहितशिवसमृद्धेः सेवया यस्य सन्तः।
कमल-वकुल-कुन्दो-दार-मन्दारपुष्पै-
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

जनन-वन-हुताशं छिन्न-सन्मोह-पाशं
शमित-मदनमानं विश्वविद्या-निदानम्।
चरुभि-रुरु-गुणौघं प्रीणित-प्राणिसङ्घं
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिदचिदखिल-जीवा-जीव-भेदादिवेद्यं
सकल-भुवन-नेत्रं ज्ञान-माविष्करोति।
स्मरण-मपि यदीयं दीप-दीप्त-प्रभौघैः
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ६॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भवति न भवभाजां ध्यानतो यस्य पीडा
ग्रहदिति-शितिरक्षः-प्रेतभूत-प्रसूता।
अगुरु-तुहिन-भास्वच्चान्दनोद्धूतधूपैः
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ७॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलमतुलमनन्तं मुक्तिसौख्यं प्रदीप्तं
फलति विपुलसेवा सम्यगाविःकृतोच्चैः।
असदृश-महिम-श्रीमन्दिरं मातुलिङ्गै-
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि॥ ८॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनव-जलगन्धा-मन्द-मन्दारमाला-
ललित-ममल-मर्घ्यं सन्ददाम्यादरेण।
गणधर-वलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी
सुरहरि-महितायाः प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः॥ ९॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक मन्त्राः

१. ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं अर्हद्रूपाय नमः स्वाहा।
४. ॐ ह्रीं अर्हद्गुणाय नमः स्वाहा।
५. ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनाय नमः स्वाहा।
६. ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानाय नमः स्वाहा।
७. ॐ ह्रीं अर्हत्सुखाय नमः स्वाहा।
८. ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्याय नमः स्वाहा।

९. ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनगुणाय नमः स्वाहा।
१०. ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानगुणाय नमः स्वाहा।
११. ॐ ह्रीं अर्हत्सुखगुणाय नमः स्वाहा।
१२. ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यगुणाय नमः स्वाहा।
१३. ॐ ह्रीं अर्हत्सम्यक्त्वगुणाय नमः स्वाहा।
१४. ॐ ह्रीं अर्हत्स्वगुणाय नमः स्वाहा।
१५. ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशाङ्गाय नमः स्वाहा।
१६. ॐ ह्रीं अर्हदाभिनिबोधाय नमः स्वाहा।
१७. ॐ ह्रीं अर्हच्छ्रुतबोधगुणाय नमः स्वाहा।
१८. ॐ ह्रीं अर्हदवधिगुणाय नमः स्वाहा।
१९. ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययगुणाय नमः स्वाहा।
२०. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणाय नमः स्वाहा।
२१. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२२. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलदर्शनाय नमः स्वाहा।
२३. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलज्ञानाय नमः स्वाहा।

२४. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलवीर्याय नमः स्वाहा।
२५. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलाय नमः स्वाहा।
२६. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलदर्शनाय नमः स्वाहा।
२७. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलज्ञानाय नमः स्वाहा।
२८. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलवीर्याय नमः स्वाहा।
२९. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलद्वादशाङ्गाय नमः स्वाहा।
३०. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलाभिनिबोधकाय नमः स्वाहा।
३१. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलश्रुताय नमः स्वाहा।
३२. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलावधिज्ञानाय नमः स्वाहा।
३३. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलमनःपर्ययज्ञानाय नमः स्वाहा।
३४. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलकेवलज्ञानाय नमः स्वाहा।
३५. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गल-केवलस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३६. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलकेवलदर्शनाय नमः स्वाहा।
३७. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलकेवलगुणाय नमः स्वाहा।
३८. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलकेवलधर्माय नमः स्वाहा।

३९. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलकेवलधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४०. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय नमः स्वाहा।
४१. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमचिद्रूपाय नमः स्वाहा।
४२. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा।
४३. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलदर्शनाय नमः स्वाहा।
४४. ॐ ह्रीं अर्हत्केवललोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा।
४५. ॐ ह्रीं अर्हत्केवललोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा।
४६. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमद्वादशाङ्गाय नमः स्वाहा।
४७. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधकाय नमः स्वाहा।
४८. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमावधिबोधाय नमः स्वाहा।
४९. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययज्ञानाय नमः स्वाहा।
५०. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानाय नमः स्वाहा।
५१. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः स्वाहा।
५२. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलपर्यायाय नमः स्वाहा।
५३. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलद्रव्याय नमः स्वाहा।

५४. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलभावाय नमः स्वाहा।
५५. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमध्रौव्यभावाय नमः स्वाहा।
५६. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमोत्पादभावाय नमः स्वाहा।
५७. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमस्थिरभावाय नमः स्वाहा।
५८. ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय नमः स्वाहा।
५९. ॐ ह्रीं अर्हद्रूपशरणाय नमः स्वाहा।
६०. ॐ ह्रीं अर्हद्गुणशरणाय नमः स्वाहा।
६१. ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानशरणाय नमः स्वाहा।
६२. ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनशरणाय नमः स्वाहा।
६३. ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यशरणाय नमः स्वाहा।
६४. ॐ ह्रीं अर्हदाभिनिबोधशरणाय नमः स्वाहा।
६५. ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशाङ्गशरणाय नमः स्वाहा।
६६. ॐ ह्रीं अर्हदवधिशरणाय नमः स्वाहा।
६७. ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा।
६८. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणाय नमः स्वाहा।

६९. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणरूपाय नमः स्वाहा।
७०. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलधर्मशरणाय नमः स्वाहा।
७१. ॐ ह्रीं अर्हत्केवलमङ्गलशरणाय नमः स्वाहा।
७२. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलगुणशरणाय नमः स्वाहा।
७३. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलज्ञानगुणशरणाय नमः स्वाहा।
७४. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलदृष्टिशरणाय नमः स्वाहा।
७५. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलबोधशरणाय नमः स्वाहा।
७६. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलमनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा।
७७. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलकेवलशरणाय नमः स्वाहा।
७८. ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलकेवलगुणशरणाय नमः स्वाहा।
७९. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमशरणाय नमः स्वाहा।
८०. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणशरणाय नमः स्वाहा।
८१. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमज्ञानशरणाय नमः स्वाहा।
८२. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमदर्शनशरणाय नमः स्वाहा।
८३. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यशरणाय नमः स्वाहा।

८४. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यगुणशरणाय नमः स्वाहा।
८५. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमद्वादशाङ्गशरणाय नमः स्वाहा।
८६. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधशरणाय नमः स्वाहा।
८७. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमावधिशरणाय नमः स्वाहा।
८८. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा।
८९. ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानशरणाय नमः स्वाहा।
९०. ॐ ह्रीं अर्हद्विभूतिप्रधानाय नमः स्वाहा।
९१. ॐ ह्रीं अर्हद्विभूतिधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा।
९२. ॐ ह्रीं अर्हदनन्तचतुष्टयाय नमः स्वाहा।
९३. ॐ ह्रीं अर्हदनन्तचतुष्टयरूपगुणाय नमः स्वाहा।
९४. ॐ ह्रीं अर्हत्त्रिज्ञानस्वयम्भुवे नमः स्वाहा।
९५. ॐ ह्रीं अर्हद्दशातिशयस्वयम्भुवे नमः स्वाहा।
९६. ॐ ह्रीं अर्हद्दशघातिक्षयजातिशयाय नमः स्वाहा।
९७. ॐ ह्रीं अर्हच्चतुर्दशदेवकृतातिशयाय नमः स्वाहा।
९८. ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानानन्तध्यानाय नमः स्वाहा।

९९. ॐ ह्रीं अर्हत्तपोऽनन्तगुणाय नमः स्वाहा।
१००. ॐ ह्रीं अर्हद्ध्यानानन्तध्येयाय नमः स्वाहा।
१०१. ॐ ह्रीं अर्हदनन्तज्ञानगुणात्मने नमः स्वाहा।
१०२. ॐ ह्रीं अर्हत्परमात्मने नमः स्वाहा।
१०३. ॐ ह्रीं अर्हदनन्तगुणात्मने नमः स्वाहा।
१०४. ॐ ह्रीं अर्हत्स्वरूपगुप्तये नमः स्वाहा।
१०५. ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१०६. ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा।
१०७. ॐ ह्रीं सिद्धगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
१०८. ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा।
१०९. ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनेभ्यो नमः स्वाहा।
११०. ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वेभ्यो नमः स्वाहा।
१११. ॐ ह्रीं सिद्धवीर्येभ्यो नमः स्वाहा।
११२. ॐ ह्रीं सिद्धपादुकेभ्यो नमः स्वाहा।
११३. ॐ ह्रीं संख्यातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।

११४. ॐ ह्रीं असंख्यातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
११५. ॐ ह्रीं अनन्तसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
११६. ॐ ह्रीं असंख्यातलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
११७. ॐ ह्रीं अनन्तानन्तसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
११८. ॐ ह्रीं अनन्तलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
११९. ॐ ह्रीं अनन्तानन्तलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२०. ॐ ह्रीं तिर्यग्लोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२१. ॐ ह्रीं सर्वमुखसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२२. ॐ ह्रीं स्थलसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२३. ॐ ह्रीं गगनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२४. ॐ ह्रीं समुद्घातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२५. ॐ ह्रीं असमुद्घातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२६. ॐ ह्रीं साधारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२७. ॐ ह्रीं असाधारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१२८. ॐ ह्रीं निराभरणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।

१२९. ॐ ह्रीं तीर्थङ्करसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३०. ॐ ह्रीं तीर्थेतरसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३१. ॐ ह्रीं उत्कृष्टावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३२. ॐ ह्रीं मध्यमावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३३. ॐ ह्रीं जघन्यावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३४. ॐ ह्रीं उपसर्गसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३५. ॐ ह्रीं षड्विधकालसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३६. ॐ ह्रीं निरुपसर्गसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३७. ॐ ह्रीं द्वीपसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३८. ॐ ह्रीं उदधिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१३९. ॐ ह्रीं स्वस्थित्यासनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१४०. ॐ ह्रीं पर्यङ्कासनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१४१. ॐ ह्रीं पुम्वेदसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१४२. ॐ ह्रीं क्षपकश्रेण्यारूढसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१४३. ॐ ह्रीं एकसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।

१४४. ॐ ह्रीं द्विसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१४५. ॐ ह्रीं त्रिसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१४६. ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१४७. ॐ ह्रीं त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा।
१४८. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलेभ्यो नमः स्वाहा।
१४९. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलरूपेभ्यो नमः स्वाहा।
१५०. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा।
१५१. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलदर्शनेभ्यो नमः स्वाहा।
१५२. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलवीर्येभ्यो नमः स्वाहा।
१५३. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलसम्यक्त्वेभ्यो नमः स्वाहा।
१५४. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलसूक्ष्मत्वेभ्यो नमः स्वाहा।
१५५. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलावगाहनेभ्यो नमः स्वाहा।
१५६. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलागुरुलघुभ्यो नमः स्वाहा।
१५७. ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलाव्याबाधेभ्यो नमः स्वाहा।
१५८. ॐ ह्रीं सिद्धाष्टगुणेभ्यो नमः स्वाहा।

१५९. ॐ ह्रीं सिद्धाष्टस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा।
१६०. ॐ ह्रीं सिद्धाष्टप्रकाशेभ्यो नमः स्वाहा।
१६१. ॐ ह्रीं मङ्गलसिद्धधर्मेभ्यो नमः स्वाहा।
१६२. ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नमः स्वाहा।
१६३. ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमचिद्रूपाय नमः स्वाहा।
१६४. ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा।
१६५. ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा।
१६६. ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा।
१६७. ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा।
१६८. ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय नमः स्वाहा।
१६९. ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा।
१७०. ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनशरणाय नमः स्वाहा।
१७१. ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानशरणाय नमः स्वाहा।
१७२. ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वशरणाय नमः स्वाहा।
१७३. ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यशरणाय नमः स्वाहा।

१७४. ॐ ह्रीं सिद्धानन्तशरणाय नमः स्वाहा।
१७५. ॐ ह्रीं सिद्धानन्तानन्तगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१७६. ॐ ह्रीं सिद्धत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा।
१७७. ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा।
१७८. ॐ ह्रीं सिद्धसंख्यातलोकशरणाय नमः स्वाहा।
१७९. ॐ ह्रीं सिद्धध्रौव्यगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१८०. ॐ ह्रीं सिद्धोत्पादगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१८१. ॐ ह्रीं सिद्धसाम्यगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१८२. ॐ ह्रीं सिद्धस्वच्छगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१८३. ॐ ह्रीं सिद्धसमाधिगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१८४. ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१८५. ॐ ह्रीं सिद्धाव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१८६. ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्ताव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा।
१८७. ॐ ह्रीं सिद्धगुणगणशरणाय नमः स्वाहा।
१८८. ॐ ह्रीं सिद्धपरमात्मरूपाय नमः स्वाहा।

१८९. ॐ ह्रीं सिद्धाखण्डरूपाय नमः स्वाहा।
१९०. ॐ ह्रीं सिद्धचिदानन्दरूपाय नमः स्वाहा।
१९१. ॐ ह्रीं सिद्धसहजानन्दाय नमः स्वाहा।
१९२. ॐ ह्रीं सिद्धाच्छेद्यस्वरूपाय नमः स्वाहा।
१९३. ॐ ह्रीं सिद्धाभेद्यगुणाय नमः स्वाहा।
१९४. ॐ ह्रीं सिद्धानौपम्यधर्माय नमः स्वाहा।
१९५. ॐ ह्रीं सिद्धामृततत्त्वाय नमः स्वाहा।
१९६. ॐ ह्रीं सिद्धश्रुतप्राप्ताय नमः स्वाहा।
१९७. ॐ ह्रीं सिद्धकेवलप्राप्ताय नमः स्वाहा।
१९८. ॐ ह्रीं सिद्धसाकारनिराकाराय नमः स्वाहा।
१९९. ॐ ह्रीं सिद्धनिरालम्बाय नमः स्वाहा।
२००. ॐ ह्रीं सिद्धनिष्कलङ्काय नमः स्वाहा।
२०१. ॐ ह्रीं सिद्धात्मसम्पन्नाय नमः स्वाहा।
२०२. ॐ ह्रीं सिद्धतेजसे नमः स्वाहा।
२०३. ॐ ह्रीं सिद्धागर्भवासाय नमः स्वाहा।

२०४. ॐ ह्रीं सिद्धलक्ष्मीसन्तर्पकाय नमः स्वाहा।
२०५. ॐ ह्रीं सिद्धान्तरङ्गाय नमः स्वाहा।
२०६. ॐ ह्रीं सिद्धस्वरसिकाय नमः स्वाहा।
२०७. ॐ ह्रीं सिद्धशिखरमण्डनाय नमः स्वाहा।
२०८. ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धानन्तानन्ताय नमः स्वाहा।
२०९. ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः स्वाहा।
२१०. ॐ ह्रीं सूरिगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२११. ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२१२. ॐ ह्रीं सूरिसम्यक्त्वगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२१३. ॐ ह्रीं सूरिज्ञानगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२१४. ॐ ह्रीं सूरिदर्शनगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२१५. ॐ ह्रीं सूरिवीर्यगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२१६. ॐ ह्रीं सूरिषट्त्रिंशद्गुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२१७. ॐ ह्रीं सूरिपञ्चाचाररतेभ्यो नमः स्वाहा।
२१८. ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यगुणेभ्यो नमः स्वाहा।

२१९. ॐ ह्रीं सूरिपर्यायगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२२०. ॐ ह्रीं सूरिमङ्गलेभ्यो नमः स्वाहा।
२२१. ॐ ह्रीं सूरिज्ञानमङ्गलेभ्यो नमः स्वाहा।
२२२. ॐ ह्रीं सूरिदर्शनमङ्गलेभ्यो नमः स्वाहा।
२२३. ॐ ह्रीं सूरिमङ्गलवीर्येभ्यो नमः स्वाहा।
२२४. ॐ ह्रीं सूरिमङ्गलधर्माय नमः स्वाहा।
२२५. ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमेभ्यो नमः स्वाहा।
२२६. ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा।
२२७. ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा।
२२८. ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा।
२२९. ॐ ह्रीं सूरिकेवलधर्माय नमः स्वाहा।
२३०. ॐ ह्रीं सूरितपोभ्यो नमः स्वाहा।
२३१. ॐ ह्रीं सूरिपरमतपोभ्यो नमः स्वाहा।
२३२. ॐ ह्रीं सूरितपोघोरगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
२३३. ॐ ह्रीं सूरिघोरपराक्रमेभ्यो नमः स्वाहा।

२३४. ॐ ह्रीं सूरिसमृद्धिभ्यो नमः स्वाहा।
२३५. ॐ ह्रीं सूरियोगिभ्यो नमः स्वाहा।
२३६. ॐ ह्रीं सूरिध्यानेभ्यो नमः स्वाहा।
२३७. ॐ ह्रीं सूरिधातृभ्यो नमः स्वाहा।
२३८. ॐ ह्रीं सूरिपात्रेभ्यो नमः स्वाहा।
२३९. ॐ ह्रीं सूरिशरणाय नमः स्वाहा।
२४०. ॐ ह्रीं सूरिगुणशरणाय नमः स्वाहा।
२४१. ॐ ह्रीं सूरिधर्मस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा।
२४२. ॐ ह्रीं सूरिसुखस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा।
२४३. ॐ ह्रीं सूरिज्ञानशरणाय नमः स्वाहा।
२४४. ॐ ह्रीं सूरिदर्शनशरणाय नमः स्वाहा।
२४५. ॐ ह्रीं सूरिवीर्यशरणाय नमः स्वाहा।
२४६. ॐ ह्रीं सूरिमङ्गलशरणाय नमः स्वाहा।
२४७. ॐ ह्रीं सूरितपःशरणाय नमः स्वाहा।
२४८. ॐ ह्रीं सूरिचारित्रशरणाय नमः स्वाहा।

२४९. ॐ ह्रीं सूरिध्यानशरणाय नमः स्वाहा।
२५०. ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिशरणाय नमः स्वाहा।
२५१. ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा।
२५२. ॐ ह्रीं सूरित्रिकालशरणाय नमः स्वाहा।
२५३. ॐ ह्रीं सूरित्रिजगन्मङ्गलशरणाय नमः स्वाहा।
२५४. ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमङ्गलशरणाय नमः स्वाहा।
२५५. ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमण्डनशरणाय नमः स्वाहा।
२५६. ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिमङ्गलशरणाय नमः स्वाहा।
२५७. ॐ ह्रीं सूरिमन्त्रस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२५८. ॐ ह्रीं सूरिधर्ममन्त्रस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२५९. ॐ ह्रीं सूरिचैतन्यगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२६०. ॐ ह्रीं सूरिचिदानन्दाय नमः स्वाहा।
२६१. ॐ ह्रीं सूरिसहजानन्दाय नमः स्वाहा।
२६२. ॐ ह्रीं सूरिज्ञानानन्दाय नमः स्वाहा।
२६३. ॐ ह्रीं सूरिदृगानन्दाय नमः स्वाहा।

२६४. ॐ ह्रीं सूरितपसानन्दाय नमः स्वाहा।
२६५. ॐ ह्रीं सूरिदृक्स्वरूपानन्दाय नमः स्वाहा।
२६६. ॐ ह्रीं सूरितपोगुणानन्दाय नमः स्वाहा।
२६७. ॐ ह्रीं सूरितपोगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२६८. ॐ ह्रीं सूरिहंसानन्दाय नमः स्वाहा।
२६९. ॐ ह्रीं सूरिहंसगुणानन्दाय नमः स्वाहा।
२७०. ॐ ह्रीं सूरिमन्त्रगुणानन्दाय नमः स्वाहा।
२७१. ॐ ह्रीं सूरिसद्ध्यानानन्दाय नमः स्वाहा।
२७२. ॐ ह्रीं सूर्यमृतचन्द्राय नमः स्वाहा।
२७३. ॐ ह्रीं सूर्यमृतचन्द्रस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२७४. ॐ ह्रीं सूर्यमृतगुणाय नमः स्वाहा।
२७५. ॐ ह्रीं सूर्यमृतघनाय नमः स्वाहा।
२७६. ॐ ह्रीं सूर्यमृतघनस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२७७. ॐ ह्रीं सूरिद्रव्याय नमः स्वाहा।
२७८. ॐ ह्रीं सूरिगुणद्रव्याय नमः स्वाहा।

२७९. ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२८०. ॐ ह्रीं सूरिगुणपर्यायाय नमः स्वाहा।
२८१. ॐ ह्रीं सूरिपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा।
२८२. ॐ ह्रीं सूरिगुणपर्यायद्रव्याय नमः स्वाहा।
२८३. ॐ ह्रीं सूरिगुणोत्पादाय नमः स्वाहा।
२८४. ॐ ह्रीं सूरिध्रौव्यगुणोत्पादाय नमः स्वाहा।
२८५. ॐ ह्रीं सूरिव्ययगुणोत्पादाय नमः स्वाहा।
२८६. ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वाय नमः स्वाहा।
२८७. ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वगुणाय नमः स्वाहा।
२८८. ॐ ह्रीं सूरिनिजस्वभावाय नमः स्वाहा।
२८९. ॐ ह्रीं सूर्यास्त्रवविलयाय नमः स्वाहा।
२९०. ॐ ह्रीं सूरिबन्धविनाशाय नमः स्वाहा।
२९१. ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्वाय नमः स्वाहा।
२९२. ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्वस्वरूपाय नमः स्वाहा।

२९३. ॐ ह्रीं सूरिसंवरगुणाय नमः स्वाहा।
२९४. ॐ ह्रीं सूरिसंवरधर्माय नमः स्वाहा।
२९५. ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरातत्त्वाय नमः स्वाहा।
२९६. ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणाय नमः स्वाहा।
२९७. ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणरूपाय नमः स्वाहा।
२९८. ॐ ह्रीं सूरिपरमनिर्जराधर्माय नमः स्वाहा।
२९९. ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरानुबन्धाय नमः स्वाहा।
३००. ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरास्वरूपाय नमः स्वाहा।
३०१. ॐ ह्रीं सूरिनिर्जराप्रतापाय नमः स्वाहा।
३०२. ॐ ह्रीं सूरिमोक्षाय नमः स्वाहा।
३०३. ॐ ह्रीं सूरिमोक्षस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३०४. ॐ ह्रीं सूरिबन्धमोक्षाय नमः स्वाहा।
३०५. ॐ ह्रीं सूरिमोक्षगुणाय नमः स्वाहा।
३०६. ॐ ह्रीं सूरिमोक्षानुबन्धाय नमः स्वाहा।

३०७. ॐ ह्रीं सूरिमोक्षप्रकाशकाय नमः स्वाहा।
३०८. ॐ ह्रीं सूरिमोक्षविमण्डनाय नमः स्वाहा।
३०९. ॐ ह्रीं सूरिपरमात्मस्वरूपरताय नमः स्वाहा।
३१०. ॐ ह्रीं सूरिमोक्षप्राप्ताय नमः स्वाहा।
३११. ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः स्वाहा।
३१२. ॐ ह्रीं पाठकगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
३१३. ॐ ह्रीं पाठकगुणस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा।
३१४. ॐ ह्रीं पाठकपर्यायाय नमः स्वाहा।
३१५. ॐ ह्रीं पाठकगुणपर्यायाय नमः स्वाहा।
३१६. ॐ ह्रीं पाठकगुणपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३१७. ॐ ह्रीं पाठकद्रव्याय नमः स्वाहा।
३१८. ॐ ह्रीं पाठकगुणद्रव्याय नमः स्वाहा।
३१९. ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३२०. ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यपर्यायाय नमः स्वाहा।
३२१. ॐ ह्रीं पाठकपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा।

३२२. ॐ ह्रीं पाठकमङ्गलाय नमः स्वाहा।
३२३. ॐ ह्रीं पाठकमङ्गलगुणाय नमः स्वाहा।
३२४. ॐ ह्रीं पाठकमङ्गलगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३२५. ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमङ्गलाय नमः स्वाहा।
३२६. ॐ ह्रीं पाठकमङ्गलद्रव्यगुणाय नमः स्वाहा।
३२७. ॐ ह्रीं पाठकमङ्गलद्रव्यगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३२८. ॐ ह्रीं पाठकमङ्गलपर्यायाय नमः स्वाहा।
३२९. ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमङ्गलपर्यायाय नमः स्वाहा।
३३०. ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यगुणपर्यायाय नमः स्वाहा।
३३१. ॐ ह्रीं पाठकस्वरूपमङ्गलरूपाय नमः स्वाहा।
३३२. ॐ ह्रीं पाठकलोकोत्तमाय नमः स्वाहा।
३३३. ॐ ह्रीं पाठकगुणलोकोत्तमाय नमः स्वाहा।
३३४. ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यलोकोत्तमाय नमः स्वाहा।
३३५. ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाय नमः स्वाहा।
३३६. ॐ ह्रीं पाठकज्ञानलोकोत्तमाय नमः स्वाहा।

३३७. ॐ ह्रीं पाठकदर्शनाय नमः स्वाहा।
३३८. ॐ ह्रीं पाठकदर्शनलोकोत्तमाय नमः स्वाहा।
३३९. ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३४०. ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३४१. ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३४२. ॐ ह्रीं पाठकवीर्याय नमः स्वाहा।
३४३. ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणाय नमः स्वाहा।
३४४. ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपर्यायाय नमः स्वाहा।
३४५. ॐ ह्रीं पाठकवीर्यद्रव्याय नमः स्वाहा।
३४६. ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणपर्यायाय नमः स्वाहा।
३४७. ॐ ह्रीं पाठकदर्शनपर्यायाय नमः स्वाहा।
३४८. ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपपर्यायाय नमः स्वाहा।
३४९. ॐ ह्रीं पाठकज्ञानद्रव्याय नमः स्वाहा।
३५०. ॐ ह्रीं पाठकशरणाय नमः स्वाहा।
३५१. ॐ ह्रीं पाठकगुणशरणाय नमः स्वाहा।

३५२. ॐ ह्रीं पाठकज्ञानगुणशरणाय नमः स्वाहा।
३५३. ॐ ह्रीं पाठकदर्शनशरणाय नमः स्वाहा।
३५४. ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा।
३५५. ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वशरणाय नमः स्वाहा।
३५६. ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा।
३५७. ॐ ह्रीं पाठकवीर्यशरणाय नमः स्वाहा।
३५८. ॐ ह्रीं पाठकवीर्यस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा।
३५९. ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपरमात्मशरणाय नमः स्वाहा।
३६०. ॐ ह्रीं पाठकद्वादशाङ्गाय नमः स्वाहा।
३६१. ॐ ह्रीं पाठकदशपूर्वाय नमः स्वाहा।
३६२. ॐ ह्रीं पाठकचतुर्दशपूर्वाय नमः स्वाहा।
३६३. ॐ ह्रीं पाठकाचाराङ्गाय नमः स्वाहा।
३६४. ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाचाराङ्गाय नमः स्वाहा।
३६५. ॐ ह्रीं पाठकतपसाचाराय नमः स्वाहा।
३६६. ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयाय नमः स्वाहा।

३६७. ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३६८. ॐ ह्रीं पाठकध्रुवसंसाराय नमः स्वाहा।
३६९. ॐ ह्रीं पाठकैकत्वरूपाय नमः स्वाहा।
३७०. ॐ ह्रीं पाठकैकत्वगुणाय नमः स्वाहा।
३७१. ॐ ह्रीं पाठकैकत्वपरात्मने नमः स्वाहा।
३७२. ॐ ह्रीं पाठकधर्माय नमः स्वाहा।
३७३. ॐ ह्रीं पाठकैकत्वचैतन्याय नमः स्वाहा।
३७४. ॐ ह्रीं पाठकैकत्वचैतन्यस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३७५. ॐ ह्रीं पाठकैकत्वद्रव्याय नमः स्वाहा।
३७६. ॐ ह्रीं पाठकचिदानन्दाय नमः स्वाहा।
३७७. ॐ ह्रीं पाठकसिद्धिसाधकाय नमः स्वाहा।
३७८. ॐ ह्रीं पाठकसमृद्धिसम्पूर्णाय नमः स्वाहा।
३७९. ॐ ह्रीं पाठकनिर्ग्रन्थाय नमः स्वाहा।
३८०. ॐ ह्रीं पाठकार्थनिधानाय नमः स्वाहा।
३८१. ॐ ह्रीं पाठकसंसारनिधनाय नमः स्वाहा।

३८२. ॐ ह्रीं पाठककल्याणाय नमः स्वाहा।
३८३. ॐ ह्रीं पाठककल्याणगुणाय नमः स्वाहा।
३८४. ॐ ह्रीं पाठककल्याणस्वरूपाय नमः स्वाहा।
३८५. ॐ ह्रीं पाठककल्याणद्रव्याय नमः स्वाहा।
३८६. ॐ ह्रीं पाठकतत्त्वगुणाय नमः स्वाहा।
३८७. ॐ ह्रीं पाठकतत्त्वचिद्रूपाय नमः स्वाहा।
३८८. ॐ ह्रीं पाठकर्द्धिपूर्णाय नमः स्वाहा।
३८९. ॐ ह्रीं पाठकगुणचैतन्याय नमः स्वाहा।
३९०. ॐ ह्रीं पाठकज्योतिःप्रकाशाय नमः स्वाहा।
३९१. ॐ ह्रीं पाठकज्ञानचैतन्याय नमः स्वाहा।
३९२. ॐ ह्रीं पाठकदर्शनचैतन्याय नमः स्वाहा।
३९३. ॐ ह्रीं पाठकवीर्यचैतन्याय नमः स्वाहा।
३९४. ॐ ह्रीं पाठकजीवविदे नमः स्वाहा।
३९५. ॐ ह्रीं पाठकसकलशरणाय नमः स्वाहा।
३९६. ॐ ह्रीं पाठकत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा।

३९७. ॐ ह्रीं पाठकत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा।
३९८. ॐ ह्रीं पाठकमङ्गलशरणाय नमः स्वाहा।
३९९. ॐ ह्रीं पाठकलोकशरणाय नमः स्वाहा।
४००. ॐ ह्रीं पाठकास्रवविनाशकाय नमः स्वाहा।
४०१. ॐ ह्रीं पाठकास्रवोच्छेदकाय नमः स्वाहा।
४०२. ॐ ह्रीं पाठकबन्धकृतान्तकाय नमः स्वाहा।
४०३. ॐ ह्रीं पाठकबन्धमुक्ताय नमः स्वाहा।
४०४. ॐ ह्रीं पाठकसंवराय नमः स्वाहा।
४०५. ॐ ह्रीं पाठकसंवररूपाय नमः स्वाहा।
४०६. ॐ ह्रीं पाठकसंवरकारणाय नमः स्वाहा।
४०७. ॐ ह्रीं पाठककन्दर्पच्छेदकाय नमः स्वाहा।
४०८. ॐ ह्रीं पाठककर्मविस्फोटकाय नमः स्वाहा।
४०९. ॐ ह्रीं पाठकनिर्जरास्वरूपाय नमः स्वाहा।
४१०. ॐ ह्रीं पाठकमोक्षाय नमः स्वाहा।
४११. ॐ ह्रीं पाठकमोक्षस्वरूपाय नमः स्वाहा।

४१२. ॐ ह्रीं पाठकात्मने नमः स्वाहा।
४१३. ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा।
४१४. ॐ ह्रीं साधुगुणेभ्यो नमः स्वाहा।
४१५. ॐ ह्रीं साधुगुणस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा।
४१६. ॐ ह्रीं साधुद्रव्याय नमः स्वाहा।
४१७. ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणाय नमः स्वाहा।
४१८. ॐ ह्रीं साधुमोक्षाय नमः स्वाहा।
४१९. ॐ ह्रीं साधुदर्शनाय नमः स्वाहा।
४२०. ॐ ह्रीं साधुज्ञानाय नमः स्वाहा।
४२१. ॐ ह्रीं साधुवीर्याय नमः स्वाहा।
४२२. ॐ ह्रीं साधुज्ञानद्रव्याय नमः स्वाहा।
४२३. ॐ ह्रीं साधुद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४२४. ॐ ह्रीं साधुद्रव्यपर्यायाय नमः स्वाहा।
४२५. ॐ ह्रीं साधुदर्शनपर्यायाय नमः स्वाहा।
४२६. ॐ ह्रीं साधुमङ्गलाय नमः स्वाहा।

४२७. ॐ ह्रीं साधुमङ्गलस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४२८. ॐ ह्रीं साधुमङ्गलशरणाय नमः स्वाहा।
४२९. ॐ ह्रीं साधुदर्शनमङ्गलाय नमः स्वाहा।
४३०. ॐ ह्रीं साधुज्ञानमङ्गलाय नमः स्वाहा।
४३१. ॐ ह्रीं साधुवीर्यमङ्गलाय नमः स्वाहा।
४३२. ॐ ह्रीं साधुवीर्यद्रव्याय नमः स्वाहा।
४३३. ॐ ह्रीं साधुवीर्यद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४३४. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय नमः स्वाहा।
४३५. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा।
४३६. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४३७. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमद्रव्याय नमः स्वाहा।
४३८. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा।
४३९. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४४०. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा।
४४१. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्माय नमः स्वाहा।

४४२. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४४३. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा।
४४४. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्यस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४४५. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमातिशयसम्पन्नाय नमः स्वाहा।
४४६. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानाय नमः स्वाहा।
४४७. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४४८. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमजिनाय नमः स्वाहा।
४४९. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमजिनगुणसम्पन्नाय नमः स्वाहा।
४५०. ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमपुरुषाय नमः स्वाहा।
४५१. ॐ ह्रीं साधुशरणाय नमः स्वाहा।
४५२. ॐ ह्रीं साध्वर्हत्स्वरूपाय नमः स्वाहा।
४५३. ॐ ह्रीं साधुगुणशरणाय नमः स्वाहा।
४५४. ॐ ह्रीं साधुदर्शनशरणाय नमः स्वाहा।
४५५. ॐ ह्रीं साधुदर्शनस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा।
४५६. ॐ ह्रीं साधुज्ञानशरणाय नमः स्वाहा।

४५७. ॐ ह्रीं साधुज्ञानस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा।
४५८. ॐ ह्रीं साध्वात्मशरणाय नमः स्वाहा।
४५९. ॐ ह्रीं साधुपरमात्मशरणाय नमः स्वाहा।
४६०. ॐ ह्रीं साधुजिनात्मशरणाय नमः स्वाहा।
४६१. ॐ ह्रीं साधुवीर्यशरणाय नमः स्वाहा।
४६२. ॐ ह्रीं साधुवीर्यात्मशरणाय नमः स्वाहा।
४६३. ॐ ह्रीं साधुलक्ष्म्यलङ्कृताय नमः स्वाहा।
४६४. ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीपरिणताय नमः स्वाहा।
४६५. ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीरूपाय नमः स्वाहा।
४६६. ॐ ह्रीं साधुध्रुवाय नमः स्वाहा।
४६७. ॐ ह्रीं साधुगुणध्रुवाय नमः स्वाहा।
४६८. ॐ ह्रीं साधुद्रव्यध्रुवाय नमः स्वाहा।
४६९. ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणोत्पादाय नमः स्वाहा।
४७०. ॐ ह्रीं साधुद्रव्योत्पादाय नमः स्वाहा।
४७१. ॐ ह्रीं साधुजीवाय नमः स्वाहा।

४७२. ॐ ह्रीं साधुजीवगुणाय नमः स्वाहा।
४७३. ॐ ह्रीं साधुचैतन्याय नमः स्वाहा।
४७४. ॐ ह्रीं साधुचैतन्यस्वरूपाय नमः स्वाहा।
४७५. ॐ ह्रीं साधुचैतन्यगुणाय नमः स्वाहा।
४७६. ॐ ह्रीं साधुपरमात्मप्रकाशाय नमः स्वाहा।
४७७. ॐ ह्रीं साधुज्योतीरूपाय नमः स्वाहा।
४७८. ॐ ह्रीं साधुज्योतिःप्रदीपाय नमः स्वाहा।
४७९. ॐ ह्रीं साधुज्ञानदीपाय नमः स्वाहा।
४८०. ॐ ह्रीं साधुदर्शनप्रदीपाय नमः स्वाहा।
४८१. ॐ ह्रीं साधुसर्वशरणाय नमः स्वाहा।
४८२. ॐ ह्रीं साधुलोकशरणाय नमः स्वाहा।
४८३. ॐ ह्रीं साधुत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा।
४८४. ॐ ह्रीं साधुसंसारच्छेदकाय नमः स्वाहा।
४८५. ॐ ह्रीं साधुत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा।
४८६. ॐ ह्रीं साध्वेकत्वगुणाय नमः स्वाहा।

४८७. ॐ ह्रीं साध्वेकत्वद्रव्याय नमः स्वाहा।
४८८. ॐ ह्रीं साध्वेकत्वस्वभावाय नमः स्वाहा।
४८९. ॐ ह्रीं साधुस्याद्वादाय नमः स्वाहा।
४९०. ॐ ह्रीं साधुशब्दब्रह्मणे नमः स्वाहा।
४९१. ॐ ह्रीं साधुपरब्रह्मणे नमः स्वाहा।
४९२. ॐ ह्रीं साधुपरमागमाय नमः स्वाहा।
४९३. ॐ ह्रीं साधुजिनागमाय नमः स्वाहा।
४९४. ॐ ह्रीं साध्वनेकार्थाय नमः स्वाहा।
४९५. ॐ ह्रीं साधुपरमशुचित्वगुणाय नमः स्वाहा।
४९६. ॐ ह्रीं साधुपरमपवित्राय नमः स्वाहा।
४९७. ॐ ह्रीं साधुबन्धविविक्ताय नमः स्वाहा।
४९८. ॐ ह्रीं साधुबन्धप्रतिबन्धकाय नमः स्वाहा।
४९९. ॐ ह्रीं साधुसंवरकाय नमः स्वाहा।
५००. ॐ ह्रीं साधुनिर्जरद्रव्याय नमः स्वाहा।
५०१. ॐ ह्रीं साधुनिर्जरगुणाय नमः स्वाहा।

५०२. ॐ ह्रीं साधुबोधगुणधर्माय नमः स्वाहा।
५०३. ॐ ह्रीं साधुसुगतभावाय नमः स्वाहा।
५०४. ॐ ह्रीं साधुपरमगतभावाय नमः स्वाहा।
५०५. ॐ ह्रीं साधुविभावरहिताय नमः स्वाहा।
५०६. ॐ ह्रीं साधुस्वभावसहिताय नमः स्वाहा।
५०७. ॐ ह्रीं साधुसिद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा।
५०८. ॐ ह्रीं साधुसूरिप्रकाशाय नमः स्वाहा।
५०९. ॐ ह्रीं साधूपाध्यायपरमेष्ठिने नमः स्वाहा।
५१०. ॐ ह्रीं साध्वात्मरतये नमः स्वाहा।
५११. ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा।
५१२. ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुरत्नत्रयात्मकानन्तगुणेभ्यो नमः स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः**' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ जयमाला

स्रग्धरा - देवाधीशैर्महीशैः फणपतिभि-रिह प्रत्यहं पूज्यपादा-
नर्हत्सिद्धानदेहांस्त्रिविध-मुनिवरान् सूर्युपाध्याय-साधून्।
दोषांस्तैस्तैर्गरिष्ठान् निज-सुगुण-वरै र्भूषणै र्भूषितांश्च
नत्वा दृग्बोध-वृत्तादिभि-रपि सहितान् संस्तुवे तद्गुणाप्त्यै॥ १॥

पादाकुलकम् - सदनन्त-चतुष्टय-गुणविलास हत-घाति-चतुष्टय-कर्मपाश।
सकलातिशयादि-सुगुण-समृद्ध त्वं हेऽर्हन् जिन जय जय समृद्ध॥ २॥

जय कृत-कर्माष्टक-वैरिदूर जय विश्वालोकन-परमसूर।
जय सर्वोत्तम-वसु-गुणसमृद्ध त्वं सिद्धदेव जय जय समृद्ध॥ ३॥

जय पञ्चाचार-सुचरण-धीर जय शिष्यानुग्रह-करणवीर।
स्थितिकल्पदशाऽऽदिशगुणसमृद्ध त्वं सूरे जिन जय जय समृद्ध॥ ४॥

एकादशाङ्ग-कृत-कण्ठहार जय लब्ध-चतुर्दश-पूर्वपार।
सर्वश्रुत-जलनिधि-गुणसमृद्ध त्वं पाठक जय जय सुतपवृद्ध॥ ५॥

आरम्भ-परिग्रह-निखिल-मुक्त सद्दर्शन-बोध-चरित्र-रक्त।
जय मूलोत्तर-गुणनिधि-समृद्ध साधो जय जय सततं प्रबुद्ध॥ ६॥

सम्यग्दर्शन-संविच्चारित्र-तपसाञ्चित-रत्नत्रय-पवित्र।
व्यवहार-परमगुण-भेदपूर्ण त्वं जय मुनिवर कृत-कर्मचूर्ण॥ ७॥

शार्दूलविक्रीडितम् - पञ्चैतान् परमेष्ठिनः सुतपसा रत्नत्रयेणान्वितान्
संसाराम्बुधि-तारकान् भविजना ध्यायन्ति ये नित्यशः।
ते देवेन्द्रपदं नरेन्द्रपदवीं सम्प्राप्य भद्रैर्गुणैः
सार्धं जन्मजरादि-दुःखरहितं पश्चाल्लभन्ते शिवम्॥ ८॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मालिनी - विधुत-कुविधि-पाशं मुक्ति-लीला-विलासं
परमगुण-निवासं चित्सरो-राजहंसम्।
विनुत-नृपसुचक्रैः संस्तुतं सिद्धचक्र-
मतनु च निजभक्त्या वन्दते शौभचन्द्रः॥ ९॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ अष्टमपरिधौ चतुर्विंशत्युत्तरसहस्रकमलदलपूजा

शार्दूलविक्रीडितम् - ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु-सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम्।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः॥

इति पठित्वा कोष्ठकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अथ स्थापना

अनुष्टुप् - निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मान-ममूर्त-मनुपद्रवम्॥ १॥

आर्या - सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम्।
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम्॥ २॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टकम्

मालिनी -

सकलजन-कलङ्कं क्षालयद्भिः सुनीरैस्-
त्रिदिवसरितिजातैर्जैनवाक्योपमानैः।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशतजिनवारं पूजये सिद्धचक्रम्॥ १॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परिमलविमलाढ्यैरिन्दुकाश्मीरमिश्रै-
र्निखिलमिलितद्रव्यैश्चन्दनैर्घ्राणपेयैः।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥ २॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभितहरिताग्रैर्निस्तुषैः शालिजातैः
रजत-सदृश-वर्णै-रक्षतै-रक्षतौघैः।

शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥ ३॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सरसिज-कुसुमौघैः शिञ्जयत्षट्पदौघैः
वर-वकुल-सुपुष्पैः वल्लिभूजातजातैः।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥ ४॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतगिरिनिकामैः शारदाब्जोपमानैः
चरुभि-रमृत-मिश्रै-र्वाष्पपूरै-रुदारैः।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥ ५॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविभिरिव-सुदीप्तैः स्वर्णकान्तैः प्रदीपैः
रविकुकुभ-विलोपि त्रासितं यैस्तमौघम्।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥ ६॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभि-रचित-गन्धैर्व्योमनि-व्याप्त-धूपैः
मिलित-सुरभिद्रव्यैर्नासिकाप्रीणयद्भिः।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥ ७॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रुचिर-कनक-वर्णैश्चोचमोचैः फलौघै-
रभिनव-फलपक्वै- रूर्जितं मोदयद्भिः।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशतजिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥ ८॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर-जल-फल-पुष्पैश्-चन्दनै-रक्षतौघै-
र्विरचित-कृतभक्त्या-युक्तपुष्पाञ्जलीभिः।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशत-जिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥ ९॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकमन्त्राः

१. ॐ ह्रीं श्रीमते नमः स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं स्वयम्भुवे नमः स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा।
४. ॐ ह्रीं शम्भवाय नमः स्वाहा।
५. ॐ ह्रीं शम्भवे नमः स्वाहा।
६. ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः स्वाहा।
७. ॐ ह्रीं स्वयम्प्रभाय नमः स्वाहा।
८. ॐ ह्रीं प्रभवे नमः स्वाहा।
९. ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः स्वाहा।
१०. ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः स्वाहा।
११. ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः स्वाहा।
१२. ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः स्वाहा।
१३. ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः स्वाहा।
१४. ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः स्वाहा।
१५. ॐ ह्रीं अक्षराय नमः स्वाहा।
१६. ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः स्वाहा।

१७. ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः स्वाहा।
१८. ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः स्वाहा।
१९. ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः स्वाहा।
२०. ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः स्वाहा।
२१. ॐ ह्रीं विभवे नमः स्वाहा।
२२. ॐ ह्रीं धात्रे नमः स्वाहा।
२३. ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः स्वाहा।
२४. ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः स्वाहा।
२५. ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः स्वाहा।
२६. ॐ ह्रीं विधये नमः स्वाहा।
२७. ॐ ह्रीं वेधसे नमः स्वाहा।
२८. ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः स्वाहा।
२९. ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः स्वाहा।
३०. ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः स्वाहा।
३१. ॐ ह्रीं जगज्ज्येष्ठाय नमः स्वाहा।
३२. ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः स्वाहा।
३३. ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः स्वाहा।
३४. ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः स्वाहा।
३५. ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः स्वाहा।
३६. ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः स्वाहा।
३७. ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः स्वाहा।
३८. ॐ ह्रीं जिनाय नमः स्वाहा।
३९. ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः स्वाहा।
४०. ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः स्वाहा।
४१. ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः स्वाहा।
४२. ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः स्वाहा।
४३. ॐ ह्रीं अनन्तजिते नमः स्वाहा।
४४. ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः स्वाहा।
४५. ॐ ह्रीं भव्यबन्धवे नमः स्वाहा।
४६. ॐ ह्रीं अबन्धनाय नमः स्वाहा।

४७. ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः स्वाहा।
४८. ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः स्वाहा।
४९. ॐ ह्रीं पञ्चब्रह्ममयाय नमः स्वाहा।
५०. ॐ ह्रीं शिवाय नमः स्वाहा।
५१. ॐ ह्रीं पराय नमः स्वाहा।
५२. ॐ ह्रीं परतराय नमः स्वाहा।
५३. ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः स्वाहा।
५४. ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः स्वाहा।
५५. ॐ ह्रीं सनातनाय नमः स्वाहा।
५६. ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः स्वाहा।
५७. ॐ ह्रीं अजाय नमः स्वाहा।
५८. ॐ ह्रीं अजन्मने नमः स्वाहा।
५९. ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः स्वाहा।
६०. ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः स्वाहा।
६१. ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः स्वाहा।
६२. ॐ ह्रीं जेत्रे नमः स्वाहा।
६३. ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः स्वाहा।
६४. ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः स्वाहा।
६५. ॐ ह्रीं प्रशान्तारये नमः स्वाहा।
६६. ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः स्वाहा।
६७. ॐ ह्रीं योगिने नमः स्वाहा।
६८. ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः स्वाहा।
६९. ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः स्वाहा।
७०. ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः स्वाहा।
७१. ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः स्वाहा।
७२. ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः स्वाहा।
७३. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः स्वाहा।
७४. ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः स्वाहा।
७५. ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः स्वाहा।
७६. ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः स्वाहा।

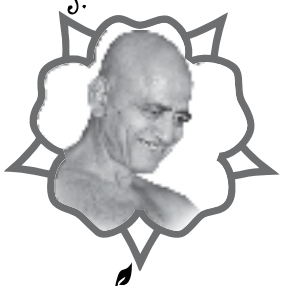

७७. ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः स्वाहा।
७८. ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः स्वाहा।
७९. ॐ ह्रीं सिद्धान्तविदे नमः स्वाहा।
८०. ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः स्वाहा।
८१. ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः स्वाहा।
८२. ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः स्वाहा।
८३. ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः स्वाहा।
८४. ॐ ह्रीं अच्युताय नमः स्वाहा।
८५. ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः स्वाहा।
८६. ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः स्वाहा।
८७. ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः स्वाहा।
८८. ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः स्वाहा।
८९. ॐ ह्रीं अजराय नमः स्वाहा।
९०. ॐ ह्रीं अजर्याय नमः स्वाहा।
९१. ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः स्वाहा।
९२. ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः स्वाहा।
९३. ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः स्वाहा।
९४. ॐ ह्रीं विभावसवे नमः स्वाहा।
९५. ॐ ह्रीं असम्भूष्णवे नमः स्वाहा।
९६. ॐ ह्रीं स्वयम्भूष्णवे नमः स्वाहा।
९७. ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः स्वाहा।
९८. ॐ ह्रीं परमात्मने नमः स्वाहा।
९९. ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः स्वाहा।
१००. ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः स्वाहा।
१०१. ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः स्वाहा।
१०२. ॐ ह्रीं दिव्याय नमः स्वाहा।
१०३. ॐ ह्रीं पूतवाचे नमः स्वाहा।
१०४. ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः स्वाहा।
१०५. ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः स्वाहा।
१०६. ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः स्वाहा।

१०७. ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः स्वाहा।
१०८. ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः स्वाहा।
१०९. ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः स्वाहा।
११०. ॐ ह्रीं भगवते नमः स्वाहा।
१११. ॐ ह्रीं अर्हते नमः स्वाहा।
११२. ॐ ह्रीं अरजसे नमः स्वाहा।
११३. ॐ ह्रीं विरजसे नमः स्वाहा।
११४. ॐ ह्रीं शुचये नमः स्वाहा।
११५. ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः स्वाहा।
११६. ॐ ह्रीं केवलिने नमः स्वाहा।
११७. ॐ ह्रीं ईशानाय नमः स्वाहा।
११८. ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः स्वाहा।
११९. ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः स्वाहा।
१२०. ॐ ह्रीं अमलाय नमः स्वाहा।
१२१. ॐ ह्रीं अनन्तदीप्तये नमः स्वाहा।
१२२. ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः स्वाहा।
१२३. ॐ ह्रीं स्वयम्बुद्धाय नमः स्वाहा।
१२४. ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः स्वाहा।
१२५. ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः स्वाहा।
१२६. ॐ ह्रीं शक्ताय नमः स्वाहा।
१२७. ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः स्वाहा।
१२८. ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः स्वाहा।
१२९. ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः स्वाहा।
१३०. ॐ ह्रीं निरञ्जनाय नमः स्वाहा।
१३१. ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः स्वाहा।
१३२. ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये नमः स्वाहा।
१३३. ॐ ह्रीं अनामयाय नमः स्वाहा।
१३४. ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः स्वाहा।
१३५. ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः स्वाहा।
१३६. ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः स्वाहा।

१३७. ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः स्वाहा।
१३८. ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः स्वाहा।
१३९. ॐ ह्रीं अग्रण्यै नमः स्वाहा।
१४०. ॐ ह्रीं ग्रामण्यै नमः स्वाहा।
१४१. ॐ ह्रीं नेत्रे नमः स्वाहा।
१४२. ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नमः स्वाहा।
१४३. ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः स्वाहा।
१४४. ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः स्वाहा।
१४५. ॐ ह्रीं धर्मपतये नमः स्वाहा।
१४६. ॐ ह्रीं धर्म्याय नमः स्वाहा।
१४७. ॐ ह्रीं धर्मात्मने नमः स्वाहा।
१४८. ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते नमः स्वाहा।
१४९. ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः स्वाहा।
१५०. ॐ ह्रीं वृषाधीशाय नमः स्वाहा।
१५१. ॐ ह्रीं वृषकेतवे नमः स्वाहा।
१५२. ॐ ह्रीं वृषायुधाय नमः स्वाहा।
१५३. ॐ ह्रीं वृषाय नमः स्वाहा।
१५४. ॐ ह्रीं वृषपतये नमः स्वाहा।
१५५. ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः स्वाहा।
१५६. ॐ ह्रीं वृषभाङ्काय नमः स्वाहा।
१५७. ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय नमः स्वाहा।
१५८. ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नमः स्वाहा।
१५९. ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः स्वाहा।
१६०. ॐ ह्रीं भूतभृते नमः स्वाहा।
१६१. ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः स्वाहा।
१६२. ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः स्वाहा।
१६३. ॐ ह्रीं विभवाय नमः स्वाहा।
१६४. ॐ ह्रीं भास्वते नमः स्वाहा।
१६५. ॐ ह्रीं भवाय नमः स्वाहा।
१६६. ॐ ह्रीं भावाय नमः स्वाहा।

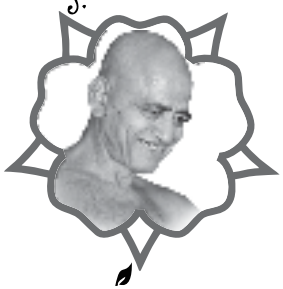

१६७. ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः स्वाहा।
१६८. ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः स्वाहा।
१६९. ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः स्वाहा।
१७०. ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः स्वाहा।
१७१. ॐ ह्रीं अभवाय नमः स्वाहा।
१७२. ॐ ह्रीं स्वयम्प्रभवे नमः स्वाहा।
१७३. ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः स्वाहा।
१७४. ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः स्वाहा।
१७५. ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः स्वाहा।
१७६. ॐ ह्रीं सर्वादये नमः स्वाहा।
१७७. ॐ ह्रीं सर्वदृशे नमः स्वाहा।
१७८. ॐ ह्रीं सार्वाय नमः स्वाहा।
१७९. ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः स्वाहा।
१८०. ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः स्वाहा।
१८१. ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः स्वाहा।
१८२. ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः स्वाहा।
१८३. ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः स्वाहा।
१८४. ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते नमः स्वाहा।
१८५. ॐ ह्रीं सुगतये नमः स्वाहा।
१८६. ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः स्वाहा।
१८७. ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः स्वाहा।
१८८. ॐ ह्रीं सुवाचे नमः स्वाहा।
१८९. ॐ ह्रीं सूरये नमः स्वाहा।
१९०. ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः स्वाहा।
१९१. ॐ ह्रीं विश्रुताय नमः स्वाहा।
१९२. ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय नमः स्वाहा।
१९३. ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नमः स्वाहा।
१९४. ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः स्वाहा।
१९५. ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय नमः स्वाहा।
१९६. ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः स्वाहा।

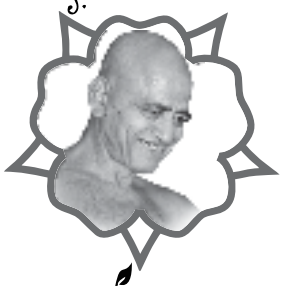

१९७. ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय नमः स्वाहा।
१९८. ॐ ह्रीं सहस्रपादे नमः स्वाहा।
१९९. ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः स्वाहा।
२००. ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः स्वाहा।
२०१. ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय नमः स्वाहा।
२०२. ॐ ह्रीं स्थविराय नमः स्वाहा।
२०३. ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः स्वाहा।
२०४. ॐ ह्रीं प्रष्ठाय नमः स्वाहा।
२०५. ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः स्वाहा।
२०६. ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये नमः स्वाहा।
२०७. ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय नमः स्वाहा।
२०८. ॐ ह्रीं गरिष्ठाय नमः स्वाहा।
२०९. ॐ ह्रीं बंहिष्ठाय नमः स्वाहा।
२१०. ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः स्वाहा।
२११. ॐ ह्रीं अणिष्ठाय नमः स्वाहा।
२१२. ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे नमः स्वाहा।
२१३. ॐ ह्रीं विश्वभृते नमः स्वाहा।
२१४. ॐ ह्रीं विश्वसृजे नमः स्वाहा।
२१५. ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः स्वाहा।
२१६. ॐ ह्रीं विश्वभुजे नमः स्वाहा।
२१७. ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः स्वाहा।
२१८. ॐ ह्रीं विश्वासिने नमः स्वाहा।
२१९. ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नमः स्वाहा।
२२०. ॐ ह्रीं विश्वजिते नमः स्वाहा।
२२१. ॐ ह्रीं विजितान्तकाय नमः स्वाहा।
२२२. ॐ ह्रीं विभवाय नमः स्वाहा।
२२३. ॐ ह्रीं विभयाय नमः स्वाहा।
२२४. ॐ ह्रीं वीराय नमः स्वाहा।
२२५. ॐ ह्रीं विशोकाय नमः स्वाहा।
२२६. ॐ ह्रीं विजराय नमः स्वाहा।

२२७. ॐ ह्रीं जरते नमः स्वाहा।
२२८. ॐ ह्रीं विरागाय नमः स्वाहा।
२२९. ॐ ह्रीं विरताय नमः स्वाहा।
२३०. ॐ ह्रीं असङ्गाय नमः स्वाहा।
२३१. ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः स्वाहा।
२३२. ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः स्वाहा।
२३३. ॐ ह्रीं विनेयजनताबन्धवे नमः स्वाहा।
२३४. ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नमः स्वाहा।
२३५. ॐ ह्रीं वियोगाय नमः स्वाहा।
२३६. ॐ ह्रीं योगविदे नमः स्वाहा।
२३७. ॐ ह्रीं विदुषे नमः स्वाहा।
२३८. ॐ ह्रीं विधात्रे नमः स्वाहा।
२३९. ॐ ह्रीं सुविधये नमः स्वाहा।
२४०. ॐ ह्रीं सुधिये नमः स्वाहा।
२४१. ॐ ह्रीं क्षान्तिभाजे नमः स्वाहा।
२४२. ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये नमः स्वाहा।
२४३. ॐ ह्रीं शान्तिभाजे नमः स्वाहा।
२४४. ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः स्वाहा।
२४५. ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नमः स्वाहा।
२४६. ॐ ह्रीं असङ्गात्मने नमः स्वाहा।
२४७. ॐ ह्रीं वह्निमूर्तये नमः स्वाहा।
२४८. ॐ ह्रीं अधर्मदुहे नमः स्वाहा।
२४९. ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः स्वाहा।
२५०. ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः स्वाहा।
२५१. ॐ ह्रीं सुत्वने नमः स्वाहा।
२५२. ॐ ह्रीं सुत्रामपूजिताय नमः स्वाहा।
२५३. ॐ ह्रीं ऋत्विजे नमः स्वाहा।
२५४. ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः स्वाहा।
२५५. ॐ ह्रीं याज्याय नमः स्वाहा।
२५६. ॐ ह्रीं यज्ञाङ्गाय नमः स्वाहा।

२५७. ॐ ह्रीं अमृताय नमः स्वाहा।
२५८. ॐ ह्रीं हविषे नमः स्वाहा।
२५९. ॐ ह्रीं व्योममूर्तये नमः स्वाहा।
२६०. ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने नमः स्वाहा।
२६१. ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा।
२६२. ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः स्वाहा।
२६३. ॐ ह्रीं अचलाय नमः स्वाहा।
२६४. ॐ ह्रीं सोममूर्तये नमः स्वाहा।
२६५. ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने नमः स्वाहा।
२६६. ॐ ह्रीं सूर्यमूर्तये नमः स्वाहा।
२६७. ॐ ह्रीं महाप्रभाय नमः स्वाहा।
२६८. ॐ ह्रीं मन्त्रविदे नमः स्वाहा।
२६९. ॐ ह्रीं मन्त्रकृते नमः स्वाहा।
२७०. ॐ ह्रीं मन्त्रिणे नमः स्वाहा।
२७१. ॐ ह्रीं मन्त्रमूर्तये नमः स्वाहा।
२७२. ॐ ह्रीं अनन्तगाय नमः स्वाहा।
२७३. ॐ ह्रीं स्वतन्त्राय नमः स्वाहा।
२७४. ॐ ह्रीं तन्त्रकृते नमः स्वाहा।
२७५. ॐ ह्रीं स्वान्ताय नमः स्वाहा।
२७६. ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय नमः स्वाहा।
२७७. ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः स्वाहा।
२७८. ॐ ह्रीं कृतिने नमः स्वाहा।
२७९. ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः स्वाहा।
२८०. ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः स्वाहा।
२८१. ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः स्वाहा।
२८२. ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नमः स्वाहा।
२८३. ॐ ह्रीं नित्याय नमः स्वाहा।
२८४. ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयाय नमः स्वाहा।
२८५. ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः स्वाहा।
२८६. ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः स्वाहा।

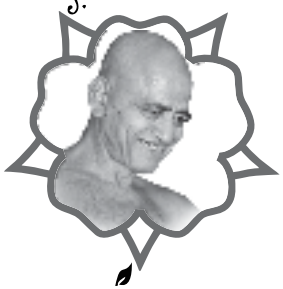

२८७. ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः स्वाहा।
२८८. ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः स्वाहा।
२८९. ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः स्वाहा।
२९०. ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः स्वाहा।
२९१. ॐ ह्रीं ब्रह्मसम्भवाय नमः स्वाहा।
२९२. ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः स्वाहा।
२९३. ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः स्वाहा।
२९४. ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः स्वाहा।
२९५. ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः स्वाहा।
२९६. ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः स्वाहा।
२९७. ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः स्वाहा।
२९८. ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः स्वाहा।
२९९. ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः स्वाहा।
३००. ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः स्वाहा।
३०१. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय नमः स्वाहा।
३०२. ॐ ह्रीं अशोकाय नमः स्वाहा।
३०३. ॐ ह्रीं काय नमः स्वाहा।
३०४. ॐ ह्रीं स्त्रष्ट्रे नमः स्वाहा।
३०५. ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय नमः स्वाहा।
३०६. ॐ ह्रीं पद्मेशाय नमः स्वाहा।
३०७. ॐ ह्रीं पद्मसम्भूतये नमः स्वाहा।
३०८. ॐ ह्रीं पद्मनाभये नमः स्वाहा।
३०९. ॐ ह्रीं अनुत्तराय नमः स्वाहा।
३१०. ॐ ह्रीं पद्मयोनये नमः स्वाहा।
३११. ॐ ह्रीं जगद्योनये नमः स्वाहा।
३१२. ॐ ह्रीं इत्याय नमः स्वाहा।
३१३. ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः स्वाहा।
३१४. ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय नमः स्वाहा।
३१५. ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय नमः स्वाहा।
३१६. ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः स्वाहा।

३१७. ॐ ह्रीं जितजेयाय नमः स्वाहा।
३१८. ॐ ह्रीं कृतक्रियाय नमः स्वाहा।
३१९. ॐ ह्रीं गणाधिपाय नमः स्वाहा।
३२०. ॐ ह्रीं गणज्येष्ठाय नमः स्वाहा।
३२१. ॐ ह्रीं गण्याय नमः स्वाहा।
३२२. ॐ ह्रीं पुण्याय नमः स्वाहा।
३२३. ॐ ह्रीं गणाग्रण्यै नमः स्वाहा।
३२४. ॐ ह्रीं गुणाकराय नमः स्वाहा।
३२५. ॐ ह्रीं गुणाम्भोधये नमः स्वाहा।
३२६. ॐ ह्रीं गुणज्ञाय नमः स्वाहा।
३२७. ॐ ह्रीं गुणनायकाय नमः स्वाहा।
३२८. ॐ ह्रीं गुणादरिणे नमः स्वाहा।
३२९. ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः स्वाहा।
३३०. ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः स्वाहा।
३३१. ॐ ह्रीं पुण्यगिरे नमः स्वाहा।
३३२. ॐ ह्रीं गुणाय नमः स्वाहा।
३३३. ॐ ह्रीं शरण्याय नमः स्वाहा।
३३४. ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः स्वाहा।
३३५. ॐ ह्रीं पूताय नमः स्वाहा।
३३६. ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः स्वाहा।
३३७. ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय नमः स्वाहा।
३३८. ॐ ह्रीं अगण्याय नमः स्वाहा।
३३९. ॐ ह्रीं पुण्यधिये नमः स्वाहा।
३४०. ॐ ह्रीं गुण्याय नमः स्वाहा।
३४१. ॐ ह्रीं पुण्यकृते नमः स्वाहा।
३४२. ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय नमः स्वाहा।
३४३. ॐ ह्रीं धर्मारामाय नमः स्वाहा।
३४४. ॐ ह्रीं गुणग्रामाय नमः स्वाहा।
३४५. ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधकाय नमः स्वाहा।
३४६. ॐ ह्रीं पापापेताय नमः स्वाहा।

३४७. ॐ ह्रीं विपापात्मने नमः स्वाहा।
३४८. ॐ ह्रीं विपाप्मने नमः स्वाहा।
३४९. ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय नमः स्वाहा।
३५०. ॐ ह्रीं निर्द्वन्द्वाय नमः स्वाहा।
३५१. ॐ ह्रीं निर्मदाय नमः स्वाहा।
३५२. ॐ ह्रीं शान्ताय नमः स्वाहा।
३५३. ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः स्वाहा।
३५४. ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय नमः स्वाहा।
३५५. ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः स्वाहा।
३५६. ॐ ह्रीं निराहाराय नमः स्वाहा।
३५७. ॐ ह्रीं निःक्रियाय नमः स्वाहा।
३५८. ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः स्वाहा।
३५९. ॐ ह्रीं निष्कलङ्काय नमः स्वाहा।
३६०. ॐ ह्रीं निरस्तैनसे नमः स्वाहा।
३६१. ॐ ह्रीं निर्धूतागसे नमः स्वाहा।
३६२. ॐ ह्रीं निरास्त्रवाय नमः स्वाहा।
३६३. ॐ ह्रीं विशालाय नमः स्वाहा।
३६४. ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे नमः स्वाहा।
३६५. ॐ ह्रीं अतुलाय नमः स्वाहा।
३६६. ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवाय नमः स्वाहा।
३६७. ॐ ह्रीं सुसंवृताय नमः स्वाहा।
३६८. ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः स्वाहा।
३६९. ॐ ह्रीं सुभृते नमः स्वाहा।
३७०. ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे नमः स्वाहा।
३७१. ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः स्वाहा।
३७२. ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः स्वाहा।
३७३. ॐ ह्रीं मुनये नमः स्वाहा।
३७४. ॐ ह्रीं परिवृढाय नमः स्वाहा।
३७५. ॐ ह्रीं पत्यै नमः स्वाहा।
३७६. ॐ ह्रीं धीशाय नमः स्वाहा।

३७७. ॐ ह्रीं विद्यानिधये नमः स्वाहा।
३७८. ॐ ह्रीं साक्षिणे नमः स्वाहा।
३७९. ॐ ह्रीं विनेत्रे नमः स्वाहा।
३८०. ॐ ह्रीं विहतान्तकाय नमः स्वाहा।
३८१. ॐ ह्रीं पित्रे नमः स्वाहा।
३८२. ॐ ह्रीं पितामहाय नमः स्वाहा।
३८३. ॐ ह्रीं पात्रे नमः स्वाहा।
३८४. ॐ ह्रीं पवित्राय नमः स्वाहा।
३८५. ॐ ह्रीं पावनाय नमः स्वाहा।
३८६. ॐ ह्रीं गतये नमः स्वाहा।
३८७. ॐ ह्रीं त्रात्रे नमः स्वाहा।
३८८. ॐ ह्रीं भिषग्वराय नमः स्वाहा।
३८९. ॐ ह्रीं वर्याय नमः स्वाहा।
३९०. ॐ ह्रीं वरदाय नमः स्वाहा।
३९१. ॐ ह्रीं परमाय नमः स्वाहा।
३९२. ॐ ह्रीं पुंसे नमः स्वाहा।
३९३. ॐ ह्रीं कवये नमः स्वाहा।
३९४. ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः स्वाहा।
३९५. ॐ ह्रीं वर्षीयसे नमः स्वाहा।
३९६. ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा।
३९७. ॐ ह्रीं पुरवे नमः स्वाहा।
३९८. ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय नमः स्वाहा।
३९९. ॐ ह्रीं हेतवे नमः स्वाहा।
४००. ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः स्वाहा।
४०१. ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः स्वाहा।
४०२. ॐ ह्रीं श्लक्ष्णाय नमः स्वाहा।
४०३. ॐ ह्रीं लक्षण्याय नमः स्वाहा।
४०४. ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः स्वाहा।
४०५. ॐ ह्रीं निरक्षाय नमः स्वाहा।
४०६. ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षाय नमः स्वाहा।

४०७. ॐ ह्रीं पुष्कलाय नमः स्वाहा।
४०८. ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय नमः स्वाहा।
४०९. ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः स्वाहा।
४१०. ॐ ह्रीं सिद्धसङ्कल्पाय नमः स्वाहा।
४११. ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः स्वाहा।
४१२. ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय नमः स्वाहा।
४१३. ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय नमः स्वाहा।
४१४. ॐ ह्रीं महाबोधये नमः स्वाहा।
४१५. ॐ ह्रीं वर्धमानाय नमः स्वाहा।
४१६. ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय नमः स्वाहा।
४१७. ॐ ह्रीं वेदाङ्गाय नमः स्वाहा।
४१८. ॐ ह्रीं वेदविदे नमः स्वाहा।
४१९. ॐ ह्रीं वेद्याय नमः स्वाहा।
४२०. ॐ ह्रीं जातरूपाय नमः स्वाहा।
४२१. ॐ ह्रीं विदांवराय नमः स्वाहा।
४२२. ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः स्वाहा।
४२३. ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः स्वाहा।
४२४. ॐ ह्रीं विवेदाय नमः स्वाहा।
४२५. ॐ ह्रीं वदतांवराय नमः स्वाहा।
४२६. ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः स्वाहा।
४२७. ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः स्वाहा।
४२८. ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे नमः स्वाहा।
४२९. ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः स्वाहा।
४३०. ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः स्वाहा।
४३१. ॐ ह्रीं युगाधाराय नमः स्वाहा।
४३२. ॐ ह्रीं युगादये नमः स्वाहा।
४३३. ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः स्वाहा।
४३४. ॐ ह्रीं अतीन्द्राय नमः स्वाहा।
४३५. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय नमः स्वाहा।
४३६. ॐ ह्रीं धीन्द्राय नमः स्वाहा।

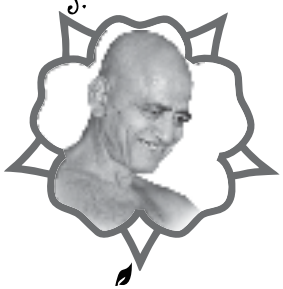

४३७. ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः स्वाहा।
४३८. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः स्वाहा।
४३९. ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाय नमः स्वाहा।
४४०. ॐ ह्रीं अहमिन्द्रार्च्याय नमः स्वाहा।
४४१. ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय नमः स्वाहा।
४४२. ॐ ह्रीं महते नमः स्वाहा।
४४३. ॐ ह्रीं उद्भवाय नमः स्वाहा।
४४४. ॐ ह्रीं कारणाय नमः स्वाहा।
४४५. ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः स्वाहा।
४४६. ॐ ह्रीं पारगाय नमः स्वाहा।
४४७. ॐ ह्रीं भवतारकाय नमः स्वाहा।
४४८. ॐ ह्रीं अगाह्याय नमः स्वाहा।
४४९. ॐ ह्रीं गहनाय नमः स्वाहा।
४५०. ॐ ह्रीं गुह्याय नमः स्वाहा।
४५१. ॐ ह्रीं परार्घ्याय नमः स्वाहा।
४५२. ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः स्वाहा।
४५३. ॐ ह्रीं अनन्तर्द्धये नमः स्वाहा।
४५४. ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये नमः स्वाहा।
४५५. ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्धये नमः स्वाहा।
४५६. ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः स्वाहा।
४५७. ॐ ह्रीं प्राग्र्याय नमः स्वाहा।
४५८. ॐ ह्रीं प्राग्रहराय नमः स्वाहा।
४५९. ॐ ह्रीं अभ्यग्राय नमः स्वाहा।
४६०. ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय नमः स्वाहा।
४६१. ॐ ह्रीं अग्र्याय नमः स्वाहा।
४६२. ॐ ह्रीं अग्रिमाय नमः स्वाहा।
४६३. ॐ ह्रीं अग्रजाय नमः स्वाहा।
४६४. ॐ ह्रीं महातपसे नमः स्वाहा।
४६५. ॐ ह्रीं महातेजसे नमः स्वाहा।
४६६. ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः स्वाहा।

४६७. ॐ ह्रीं महोदयाय नमः स्वाहा।
४६८. ॐ ह्रीं महायशसे नमः स्वाहा।
४६९. ॐ ह्रीं महाधाम्ने नमः स्वाहा।
४७०. ॐ ह्रीं महासत्त्वाय नमः स्वाहा।
४७१. ॐ ह्रीं महाधृतये नमः स्वाहा।
४७२. ॐ ह्रीं महाधैर्याय नमः स्वाहा।
४७३. ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः स्वाहा।
४७४. ॐ ह्रीं महासम्पदे नमः स्वाहा।
४७५. ॐ ह्रीं महाबलाय नमः स्वाहा।
४७६. ॐ ह्रीं महाशक्तये नमः स्वाहा।
४७७. ॐ ह्रीं महाज्योतिषे नमः स्वाहा।
४७८. ॐ ह्रीं महाभूतये नमः स्वाहा।
४७९. ॐ ह्रीं महाद्युतये नमः स्वाहा।
४८०. ॐ ह्रीं महामतये नमः स्वाहा।
४८१. ॐ ह्रीं महानीतये नमः स्वाहा।
४८२. ॐ ह्रीं महाक्षान्तये नमः स्वाहा।
४८३. ॐ ह्रीं महादयाय नमः स्वाहा।
४८४. ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः स्वाहा।
४८५. ॐ ह्रीं महाभागाय नमः स्वाहा।
४८६. ॐ ह्रीं महानन्दाय नमः स्वाहा।
४८७. ॐ ह्रीं महाकवये नमः स्वाहा।
४८८. ॐ ह्रीं महामहसे नमः स्वाहा।
४८९. ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः स्वाहा।
४९०. ॐ ह्रीं महाकान्तये नमः स्वाहा।
४९१. ॐ ह्रीं महावपुषे नमः स्वाहा।
४९२. ॐ ह्रीं महादानाय नमः स्वाहा।
४९३. ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः स्वाहा।
४९४. ॐ ह्रीं महायोगाय नमः स्वाहा।
४९५. ॐ ह्रीं महागुणाय नमः स्वाहा।
४९६. ॐ ह्रीं महामहपतये नमः स्वाहा।

४९७. ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याणपञ्चकाय नमः स्वाहा।
४९८. ॐ ह्रीं महाप्रभवे नमः स्वाहा।
४९९. ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः स्वाहा।
५००. ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः स्वाहा।
५०१. ॐ ह्रीं महामुनये नमः स्वाहा।
५०२. ॐ ह्रीं महामौनिने नमः स्वाहा।
५०३. ॐ ह्रीं महाध्यानाय नमः स्वाहा।
५०४. ॐ ह्रीं महादमाय नमः स्वाहा।
५०५. ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः स्वाहा।
५०६. ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः स्वाहा।
५०७. ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः स्वाहा।
५०८. ॐ ह्रीं महामखाय नमः स्वाहा।
५०९. ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः स्वाहा।
५१०. ॐ ह्रीं मह्याय नमः स्वाहा।
५११. ॐ ह्रीं महाकान्तिधराय नमः स्वाहा।
५१२. ॐ ह्रीं अधिपाय नमः स्वाहा।
५१३. ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः स्वाहा।
५१४. ॐ ह्रीं अमेयाय नमः स्वाहा।
५१५. ॐ ह्रीं महोपायाय नमः स्वाहा।
५१६. ॐ ह्रीं महोमयाय नमः स्वाहा।
५१७. ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः स्वाहा।
५१८. ॐ ह्रीं मन्त्रे नमः स्वाहा।
५१९. ॐ ह्रीं महामन्त्राय नमः स्वाहा।
५२०. ॐ ह्रीं महायतये नमः स्वाहा।
५२१. ॐ ह्रीं महानादाय नमः स्वाहा।
५२२. ॐ ह्रीं महाघोषाय नमः स्वाहा।
५२३. ॐ ह्रीं महेज्याय नमः स्वाहा।
५२४. ॐ ह्रीं महसाम्पतये नमः स्वाहा।
५२५. ॐ ह्रीं महाध्वरधराय नमः स्वाहा।
५२६. ॐ ह्रीं धुर्याय नमः स्वाहा।

५२७. ॐ ह्रीं महौदार्याय नमः स्वाहा।
५२८. ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे नमः स्वाहा।
५२९. ॐ ह्रीं महात्मने नमः स्वाहा।
५३०. ॐ ह्रीं महसांधाम्ने नमः स्वाहा।
५३१. ॐ ह्रीं महर्षये नमः स्वाहा।
५३२. ॐ ह्रीं महितोदयाय नमः स्वाहा।
५३३. ॐ ह्रीं महाक्लेशाङ्कुशाय नमः स्वाहा।
५३४. ॐ ह्रीं शूराय नमः स्वाहा।
५३५. ॐ ह्रीं महाभूतपतये नमः स्वाहा।
५३६. ॐ ह्रीं गुरवे नमः स्वाहा।
५३७. ॐ ह्रीं महापराक्रमाय नमः स्वाहा।
५३८. ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः स्वाहा।
५३९. ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे नमः स्वाहा।
५४०. ॐ ह्रीं वशिने नमः स्वाहा।
५४१. ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसन्तारिणे नमः स्वाहा।
५४२. ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय नमः स्वाहा।
५४३. ॐ ह्रीं महागुणाकराय नमः स्वाहा।
५४४. ॐ ह्रीं क्षान्ताय नमः स्वाहा।
५४५. ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः स्वाहा।
५४६. ॐ ह्रीं शमिने नमः स्वाहा।
५४७. ॐ ह्रीं महाध्यानपतये नमः स्वाहा।
५४८. ॐ ह्रीं ध्यातमहाधर्माय नमः स्वाहा।
५४९. ॐ ह्रीं महाव्रताय नमः स्वाहा।
५५०. ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने नमः स्वाहा।
५५१. ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय नमः स्वाहा।
५५२. ॐ ह्रीं महादेवाय नमः स्वाहा।
५५३. ॐ ह्रीं महेशित्रे नमः स्वाहा।
५५४. ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहराय नमः स्वाहा।
५५५. ॐ ह्रीं साधवे नमः स्वाहा।
५५६. ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय नमः स्वाहा।

५५७. ॐ ह्रीं हराय नमः स्वाहा।
५५८. ॐ ह्रीं असंख्येयाय नमः स्वाहा।
५५९. ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने नमः स्वाहा।
५६०. ॐ ह्रीं शमात्मने नमः स्वाहा।
५६१. ॐ ह्रीं प्रशमाकराय नमः स्वाहा।
५६२. ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय नमः स्वाहा।
५६३. ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः स्वाहा।
५६४. ॐ ह्रीं श्रुतात्मने नमः स्वाहा।
५६५. ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः स्वाहा।
५६६. ॐ ह्रीं दान्तात्मने नमः स्वाहा।
५६७. ॐ ह्रीं दमतीर्थेशाय नमः स्वाहा।
५६८. ॐ ह्रीं योगात्मने नमः स्वाहा।
५६९. ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय नमः स्वाहा।
५७०. ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः स्वाहा।
५७१. ॐ ह्रीं आत्मने नमः स्वाहा।
५७२. ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः स्वाहा।
५७३. ॐ ह्रीं परमाय नमः स्वाहा।
५७४. ॐ ह्रीं परमोदयाय नमः स्वाहा।
५७५. ॐ ह्रीं प्रक्षीणबन्धाय नमः स्वाहा।
५७६. ॐ ह्रीं कर्मारये नमः स्वाहा।
५७७. ॐ ह्रीं क्षेमकृते नमः स्वाहा।
५७८. ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय नमः स्वाहा।
५७९. ॐ ह्रीं प्रणवाय नमः स्वाहा।
५८०. ॐ ह्रीं प्रणताय नमः स्वाहा।
५८१. ॐ ह्रीं प्राणाय नमः स्वाहा।
५८२. ॐ ह्रीं प्राणदाय नमः स्वाहा।
५८३. ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय नमः स्वाहा।
५८४. ॐ ह्रीं प्रमाणाय नमः स्वाहा।
५८५. ॐ ह्रीं प्रणधये नमः स्वाहा।
५८६. ॐ ह्रीं दक्षाय नमः स्वाहा।

५८७. ॐ ह्रीं दक्षिणाय नमः स्वाहा।
५८८. ॐ ह्रीं अध्वर्यवे नमः स्वाहा।
५८९. ॐ ह्रीं अध्वराय नमः स्वाहा।
५९०. ॐ ह्रीं आनन्दाय नमः स्वाहा।
५९१. ॐ ह्रीं नन्दनाय नमः स्वाहा।
५९२. ॐ ह्रीं नन्दाय नमः स्वाहा।
५९३. ॐ ह्रीं वन्द्याय नमः स्वाहा।
५९४. ॐ ह्रीं अनिन्द्याय नमः स्वाहा।
५९५. ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय नमः स्वाहा।
५९६. ॐ ह्रीं कामघ्ने नमः स्वाहा।
५९७. ॐ ह्रीं कामदाय नमः स्वाहा।
५९८. ॐ ह्रीं काम्याय नमः स्वाहा।
५९९. ॐ ह्रीं कामधेनवे नमः स्वाहा।
६००. ॐ ह्रीं अरिञ्जयाय नमः स्वाहा।
६०१. ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः स्वाहा।
६०२. ॐ ह्रीं प्राकृताय नमः स्वाहा।
६०३. ॐ ह्रीं वैकृतान्तकृते नमः स्वाहा।
६०४. ॐ ह्रीं अन्तकृते नमः स्वाहा।
६०५. ॐ ह्रीं कान्तगवे नमः स्वाहा।
६०६. ॐ ह्रीं कान्ताय नमः स्वाहा।
६०७. ॐ ह्रीं चिन्तामणये नमः स्वाहा।
६०८. ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः स्वाहा।
६०९. ॐ ह्रीं अजिताय नमः स्वाहा।
६१०. ॐ ह्रीं जितकामारये नमः स्वाहा।
६११. ॐ ह्रीं अमिताय नमः स्वाहा।
६१२. ॐ ह्रीं अमितशासनाय नमः स्वाहा।
६१३. ॐ ह्रीं जितक्रोधाय नमः स्वाहा।
६१४. ॐ ह्रीं जितामित्राय नमः स्वाहा।
६१५. ॐ ह्रीं जितक्लेशाय नमः स्वाहा।
६१६. ॐ ह्रीं जितान्तकाय नमः स्वाहा।

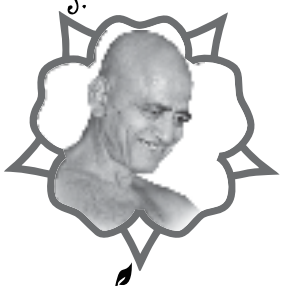

६१७. ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।
६१८. ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः स्वाहा।
६१९. ॐ ह्रीं मुनीन्द्राय नमः स्वाहा।
६२०. ॐ ह्रीं दुन्दुभिस्वनाय नमः स्वाहा।
६२१. ॐ ह्रीं महेन्द्रवन्द्याय नमः स्वाहा।
६२२. ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नमः स्वाहा।
६२३. ॐ ह्रीं यतीन्द्राय नमः स्वाहा।
६२४. ॐ ह्रीं नाभिनन्दनाय नमः स्वाहा।
६२५. ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः स्वाहा।
६२६. ॐ ह्रीं नाभिजाय नमः स्वाहा।
६२७. ॐ ह्रीं अजाताय नमः स्वाहा।
६२८. ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः स्वाहा।
६२९. ॐ ह्रीं मनवे नमः स्वाहा।
६३०. ॐ ह्रीं उत्तमाय नमः स्वाहा।
६३१. ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः स्वाहा।]
६३२. ॐ ह्रीं अनत्ययाय नमः स्वाहा।
६३३. ॐ ह्रीं अनाश्वते नमः स्वाहा।
६३४. ॐ ह्रीं अधिकाय नमः स्वाहा।
६३५. ॐ ह्रीं अधिगुरवे नमः स्वाहा।
६३६. ॐ ह्रीं सुगिरे नमः स्वाहा।
६३७. ॐ ह्रीं सुमेधसे नमः स्वाहा।
६३८. ॐ ह्रीं विक्रमिणे नमः स्वाहा।
६३९. ॐ ह्रीं स्वामिने नमः स्वाहा।
६४०. ॐ ह्रीं दुराधर्षाय नमः स्वाहा।
६४१. ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नमः स्वाहा।
६४२. ॐ ह्रीं विशिष्टाय नमः स्वाहा।
६४३. ॐ ह्रीं शिष्टभुजे नमः स्वाहा।
६४४. ॐ ह्रीं शिष्टाय नमः स्वाहा।
६४५. ॐ ह्रीं प्रत्ययाय नमः स्वाहा।
४६६. ॐ ह्रीं कामनाय नमः स्वाहा।

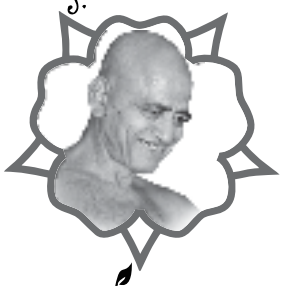

६४७. ॐ ह्रीं अनघाय नमः स्वाहा।
६४८. ॐ ह्रीं क्षेमिणे नमः स्वाहा।
६४९. ॐ ह्रीं क्षेमङ्कराय नमः स्वाहा।
६५०. ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः स्वाहा।
६५१. ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये नमः स्वाहा।
६५२. ॐ ह्रीं क्षमिणे नमः स्वाहा।
६५३. ॐ ह्रीं अग्राह्याय नमः स्वाहा।
६५४. ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राह्याय नमः स्वाहा।
६५५. ॐ ह्रीं ध्यानगम्याय नमः स्वाहा।
६५६. ॐ ह्रीं निरुत्तराय नमः स्वाहा।
६५७. ॐ ह्रीं सुकृतिने नमः स्वाहा।
६५८. ॐ ह्रीं धातवे नमः स्वाहा।
६५९. ॐ ह्रीं इज्यार्हाय नमः स्वाहा।
६६०. ॐ ह्रीं सुनयाय नमः स्वाहा।
६६१. ॐ ह्रीं चतुराननाय नमः स्वाहा।
६६२. ॐ ह्रीं श्रीनिवासाय नमः स्वाहा।
६६३. ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय नमः स्वाहा।
६६४. ॐ ह्रीं चतुरास्याय नमः स्वाहा।
६६५. ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः स्वाहा।
६६६. ॐ ह्रीं सत्यात्मने नमः स्वाहा।
६६७. ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय नमः स्वाहा।
६६८. ॐ ह्रीं सत्यवाचे नमः स्वाहा।
६६९. ॐ ह्रीं सत्यशासनाय नमः स्वाहा।
६७०. ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः स्वाहा।
६७१. ॐ ह्रीं सत्यसन्धानाय नमः स्वाहा।
६७२. ॐ ह्रीं सत्याय नमः स्वाहा।
६७३. ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय नमः स्वाहा।
६७४. ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः स्वाहा।
६७५. ॐ ह्रीं स्थवीयसे नमः स्वाहा।
६७६. ॐ ह्रीं नेदीयसे नमः स्वाहा।

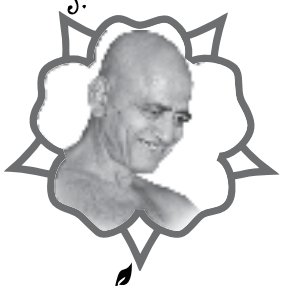

६७७. ॐ ह्रीं दवीयसे नमः स्वाहा।
६७८. ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय नमः स्वाहा।
६७९. ॐ ह्रीं अणोरणीयसे नमः स्वाहा।
६८०. ॐ ह्रीं अनणवे नमः स्वाहा।
६८१. ॐ ह्रीं गरीयसामाद्यगुरवे नमः स्वाहा।
६८२. ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः स्वाहा।
६८३. ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः स्वाहा।
६८४. ॐ ह्रीं सदातृप्ताय नमः स्वाहा।
६८५. ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः स्वाहा।
६८६. ॐ ह्रीं सदागतये नमः स्वाहा।
६८७. ॐ ह्रीं सदासौख्याय नमः स्वाहा।
६८८. ॐ ह्रीं सदाविद्याय नमः स्वाहा।
६८९. ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः स्वाहा।
६९०. ॐ ह्रीं सुघोषाय नमः स्वाहा।
६९१. ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः स्वाहा।
६९२. ॐ ह्रीं सौम्याय नमः स्वाहा।
६९३. ॐ ह्रीं सुखदाय नमः स्वाहा।
६९४. ॐ ह्रीं सुहिताय नमः स्वाहा।
६९५. ॐ ह्रीं सुहृदे नमः स्वाहा।
६९६. ॐ ह्रीं सुगुप्ताय नमः स्वाहा।
६९७. ॐ ह्रीं गुप्तिभृते नमः स्वाहा।
६९८. ॐ ह्रीं गोप्त्रे नमः स्वाहा।
६९९. ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः स्वाहा।
७००. ॐ ह्रीं दमेश्वराय नमः स्वाहा।
७०१. ॐ ह्रीं बृहद्बृहस्पतये नमः स्वाहा।
७०२. ॐ ह्रीं वाग्मिने नमः स्वाहा।
७०३. ॐ ह्रीं वाचस्पतये नमः स्वाहा।
७०४. ॐ ह्रीं उदारधिये नमः स्वाहा।
७०५. ॐ ह्रीं मनीषिणे नमः स्वाहा।
७०६. ॐ ह्रीं धिषणाय नमः स्वाहा।

७०७. ॐ ह्रीं धीमते नमः स्वाहा।
७०८. ॐ ह्रीं शेमुषीशाय नमः स्वाहा।
७०९. ॐ ह्रीं गिराम्पतये नमः स्वाहा।
७१०. ॐ ह्रीं नैकरूपाय नमः स्वाहा।
७११. ॐ ह्रीं नयोत्तुङ्गाय नमः स्वाहा।
७१२. ॐ ह्रीं नैकात्मने नमः स्वाहा।
७१३. ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते नमः स्वाहा।
७१४. ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय नमः स्वाहा।
७१५. ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः स्वाहा।
७१६. ॐ ह्रीं कृतज्ञाय नमः स्वाहा।
७१७. ॐ ह्रीं कृतलक्षणाय नमः स्वाहा।
७१८. ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भाय नमः स्वाहा।
७१९. ॐ ह्रीं दयागर्भाय नमः स्वाहा।
७२०. ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः स्वाहा।
७२१. ॐ ह्रीं प्रभास्वराय नमः स्वाहा।
७२२. ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय नमः स्वाहा।
७२३. ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय नमः स्वाहा।
७२४. ॐ ह्रीं हेमगर्भाय नमः स्वाहा।
७२५. ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः स्वाहा।
७२६. ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते नमः स्वाहा।
७२७. ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय नमः स्वाहा।
७२८. ॐ ह्रीं दृढीयसे नमः स्वाहा।
७२९. ॐ ह्रीं इनाय नमः स्वाहा।
७३०. ॐ ह्रीं ईशित्रे नमः स्वाहा।
७३१. ॐ ह्रीं मनोहराय नमः स्वाहा।
७३२. ॐ ह्रीं मनोज्ञाङ्गाय नमः स्वाहा।
७३३. ॐ ह्रीं धीराय नमः स्वाहा।
७३४. ॐ ह्रीं गम्भीरशासनाय नमः स्वाहा।
७३५. ॐ ह्रीं धर्मयूपाय नमः स्वाहा।
७३६. ॐ ह्रीं दयायागाय नमः स्वाहा।

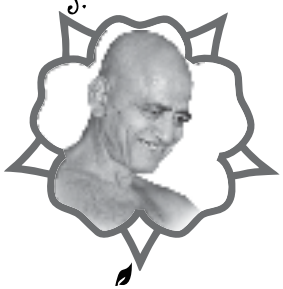

७३७. ॐ ह्रीं धर्मनेमये नमः स्वाहा।
७३८. ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः स्वाहा।
७३९. ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः स्वाहा।
७४०. ॐ ह्रीं देवाय नमः स्वाहा।
७४१. ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः स्वाहा।
७४२. ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः स्वाहा।
७४३. ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः स्वाहा।
७४४. ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः स्वाहा।
७४५. ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः स्वाहा।
७४६. ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः स्वाहा।
७४७. ॐ ह्रीं सुरूपाय नमः स्वाहा।
७४८. ॐ ह्रीं सुभगाय नमः स्वाहा।
७४९. ॐ ह्रीं त्यागिने नमः स्वाहा।
७५०. ॐ ह्रीं समयज्ञाय नमः स्वाहा।
७५१. ॐ ह्रीं समाहिताय नमः स्वाहा।
७५२. ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः स्वाहा।
७५३. ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे नमः स्वाहा।
७५४. ॐ ह्रीं स्वस्थाय नमः स्वाहा।
७५५. ॐ ह्रीं नीरजस्काय नमः स्वाहा।
७५६. ॐ ह्रीं निरुद्धवाय नमः स्वाहा।
७५७. ॐ ह्रीं अलेपाय नमः स्वाहा।
७५८. ॐ ह्रीं निष्कलङ्कात्मने नमः स्वाहा।
७५९. ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः स्वाहा।
७६०. ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः स्वाहा।
७६१. ॐ ह्रीं वश्येन्द्रियाय नमः स्वाहा।
७६२. ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने नमः स्वाहा।
७६३. ॐ ह्रीं निःसपत्नाय नमः स्वाहा।
७६४. ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय नमः स्वाहा।
७६५. ॐ ह्रीं प्रशान्ताय नमः स्वाहा।
७६६. ॐ ह्रीं अनन्तधामर्षये नमः स्वाहा।

७६७. ॐ ह्रीं मङ्गलाय नमः स्वाहा।
७६८. ॐ ह्रीं मलघ्ने नमः स्वाहा।
७६९. ॐ ह्रीं अनघाय नमः स्वाहा।
७७०. ॐ ह्रीं अनीदृशे नमः स्वाहा।
७७१. ॐ ह्रीं उपमाभूताय नमः स्वाहा।
७७२. ॐ ह्रीं दिष्टये नमः स्वाहा।
७७३. ॐ ह्रीं दैवाय नमः स्वाहा।
७७४. ॐ ह्रीं अगोचराय नमः स्वाहा।
७७५. ॐ ह्रीं अमूर्ताय नमः स्वाहा।
७७६. ॐ ह्रीं मूर्तिमते नमः स्वाहा।
७७७. ॐ ह्रीं एकस्मै नमः स्वाहा।
७७८. ॐ ह्रीं नैकस्मै नमः स्वाहा।
७७९. ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे नमः स्वाहा।
७८०. ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय नमः स्वाहा।
७८१. ॐ ह्रीं अगम्यात्मने नमः स्वाहा।
७८२. ॐ ह्रीं योगविदे नमः स्वाहा।
७८३. ॐ ह्रीं योगिवन्दिताय नमः स्वाहा।
७८४. ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय नमः स्वाहा।
७८५. ॐ ह्रीं सदाभाविने नमः स्वाहा।
७८६. ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः स्वाहा।
७८७. ॐ ह्रीं शङ्कराय नमः स्वाहा।
७८८. ॐ ह्रीं शंवदाय नमः स्वाहा।
७८९. ॐ ह्रीं दान्ताय नमः स्वाहा।
७९०. ॐ ह्रीं दमिने नमः स्वाहा।
७९१. ॐ ह्रीं क्षान्तिपरायणाय नमः स्वाहा।
७९२. ॐ ह्रीं अधिपाय नमः स्वाहा।
७९३. ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः स्वाहा।
७९४. ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय नमः स्वाहा।
७९५. ॐ ह्रीं परात्पराय नमः स्वाहा।
७९६. ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः स्वाहा।

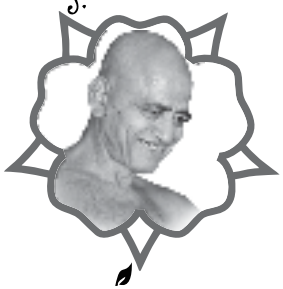

७९७. ॐ ह्रीं अभ्यर्च्याय नमः स्वाहा।
७९८. ॐ ह्रीं त्रिजगन्मङ्गलोदयाय नमः स्वाहा।
७९९. ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रये नमः स्वाहा।
८००.ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः स्वाहा।
८०१. ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने नमः स्वाहा।
८०२. ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः स्वाहा।
८०३. ॐ ह्रीं लोकधात्रे नमः स्वाहा।
८०४. ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः स्वाहा।
८०५. ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय नमः स्वाहा।
८०६. ॐ ह्रीं पूज्याय नमः स्वाहा।
८०७. ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये नमः स्वाहा।
८०८. ॐ ह्रीं पुराणाय नमः स्वाहा।
८०९. ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः स्वाहा।
८१०. ॐ ह्रीं पूर्वस्मै नमः स्वाहा।
८११.ॐ ह्रीं कृतपूर्वाङ्गविस्तराय नमः स्वाहा।

८१२. ॐ ह्रीं आदिदेवाय नमः स्वाहा।
८१३. ॐ ह्रीं पुराणाद्याय नमः स्वाहा।
८१४. ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः स्वाहा।
८१५. ॐ ह्रीं अधिदेवतायै नमः स्वाहा।
८१६. ॐ ह्रीं युगमुख्याय नमः स्वाहा।
८१७. ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय नमः स्वाहा।
८१८. ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय नमः स्वाहा।
८१९. ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय नमः स्वाहा।
८२०. ॐ ह्रीं कल्याणाय नमः स्वाहा।
८२१. ॐ ह्रीं कल्याय नमः स्वाहा।
८२२. ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय नमः स्वाहा।
८२३. ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः स्वाहा।
८२४. ॐ ह्रीं दीप्तकल्याणात्मने नमः स्वाहा।
८२५. ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः स्वाहा।
८२६. ॐ ह्रीं विकलङ्काय नमः स्वाहा।

८२७. ॐ ह्रीं कलातीताय नमः स्वाहा।
८२८. ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः स्वाहा।
८२९. ॐ ह्रीं कलाधराय नमः स्वाहा।
८३०. ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः स्वाहा।
८३१. ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः स्वाहा।
८३२. ॐ ह्रीं जगद्बन्धवे नमः स्वाहा।
८३३. ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः स्वाहा।
८३४. ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे नमः स्वाहा।
८३५. ॐ ह्रीं लोकज्ञाय नमः स्वाहा।
८३६. ॐ ह्रीं सर्वगाय नमः स्वाहा।
८३७. ॐ ह्रीं जगदग्रगाय नमः स्वाहा।
८३८. ॐ ह्रीं चराचरगुरवे नमः स्वाहा।
८३९. ॐ ह्रीं गोप्याय नमः स्वाहा।
८४०. ॐ ह्रीं गूढात्मने नमः स्वाहा।
८४१. ॐ ह्रीं गूढगोचराय नमः स्वाहा।
८४२. ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः स्वाहा।
८४३. ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने नमः स्वाहा।
८४४. ॐ ह्रीं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः स्वाहा।
८४५. ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय नमः स्वाहा।
८४६. ॐ ह्रीं भर्माभाय नमः स्वाहा।
८४७. ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः स्वाहा।
८४८. ॐ ह्रीं कनकप्रभाय नमः स्वाहा।
८४९. ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय नमः स्वाहा।
८५०. ॐ ह्रीं रुक्माभाय नमः स्वाहा।
८५१. ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः स्वाहा।
८५२. ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय नमः स्वाहा।
८५३. ॐ ह्रीं तुङ्गाय नमः स्वाहा।
८५४. ॐ ह्रीं बालार्काभाय नमः स्वाहा।
८५५. ॐ ह्रीं अनलप्रभाय नमः स्वाहा।
८५६. ॐ ह्रीं सन्ध्याभ्रबभ्रवे नमः स्वाहा।

८५७. ॐ ह्रीं हेमाभाय नमः स्वाहा।
८५८. ॐ ह्रीं तप्तचामीकरच्छवये नमः स्वाहा।
८५९. ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः स्वाहा।
८६०. ॐ ह्रीं कनत्काञ्चनसन्निभाय नमः स्वाहा।
८६१. ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः स्वाहा।
८६२. ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः स्वाहा।
८६३. ॐ ह्रीं शातकुम्भनिभप्रभाय नमः स्वाहा।
८६४. ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय नमः स्वाहा।
८६५. ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नमः स्वाहा।
८६६. ॐ ह्रीं दीप्तजाम्बूनदद्युतये नमः स्वाहा।
८६७. ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये नमः स्वाहा।
८६८. ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः स्वाहा।
८६९. ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः स्वाहा।
८७०. ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः स्वाहा।
८७१. ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः स्वाहा।
८७२. ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः स्वाहा।
८७३. ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः स्वाहा।
८७४. ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः स्वाहा।
८७५. ॐ ह्रीं क्षमाय नमः स्वाहा।
८७६. ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः स्वाहा।
८७७. ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः स्वाहा।
८७८. ॐ ह्रीं अमोघाय नमः स्वाहा।
८७९. ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे नमः स्वाहा।
८८०. ॐ ह्रीं शासित्रे नमः स्वाहा।
८८१. ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः स्वाहा।
८८२. ॐ ह्रीं शान्तिनिष्ठाय नमः स्वाहा।
८८३. ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय नमः स्वाहा।
८८४. ॐ ह्रीं शिवतातये नमः स्वाहा।
८८५. ॐ ह्रीं शिवप्रदाय नमः स्वाहा।
८८६. ॐ ह्रीं शान्तिदाय नमः स्वाहा।

८८७. ॐ ह्रीं शान्तिकृते नमः स्वाहा।
८८८. ॐ ह्रीं शान्तये नमः स्वाहा।
८८९. ॐ ह्रीं कान्तिमते नमः स्वाहा।
८९०. ॐ ह्रीं कामितप्रदाय नमः स्वाहा।
८९१. ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये नमः स्वाहा।
८९२. ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय नमः स्वाहा।
८९३. ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय नमः स्वाहा।
८९४. ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय नमः स्वाहा।
८९५. ॐ ह्रीं सुस्थिराय नमः स्वाहा।
८९६. ॐ ह्रीं स्थावराय नमः स्वाहा।
८९७. ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः स्वाहा।
८९८. ॐ ह्रीं प्रथीयसे नमः स्वाहा।
८९९. ॐ ह्रीं प्रथिताय नमः स्वाहा।
९००. ॐ ह्रीं पृथवे नमः स्वाहा।
९०१. ॐ ह्रीं दिग्वाससे नमः स्वाहा।
९०२. ॐ ह्रीं वातरशनाय नमः स्वाहा।
९०३. ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थेशाय नमः स्वाहा।
९०४. ॐ ह्रीं निरम्बराय नमः स्वाहा।
९०५. ॐ ह्रीं निष्किञ्चनाय नमः स्वाहा।
९०६. ॐ ह्रीं निराशंसाय नमः स्वाहा।
९०७. ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे नमः स्वाहा।
९०८. ॐ ह्रीं अमोमुहाय नमः स्वाहा।
९०९. ॐ ह्रीं तेजोराशये नमः स्वाहा।
९१०. ॐ ह्रीं अनन्तौजसे नमः स्वाहा।
९११. ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धये नमः स्वाहा।
९१२. ॐ ह्रीं शीलसागराय नमः स्वाहा।
९१३. ॐ ह्रीं तेजोमयाय नमः स्वाहा।
९१४. ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे नमः स्वाहा।
९१५. ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये नमः स्वाहा।
९१६. ॐ ह्रीं तमोऽपहाय नमः स्वाहा।

९१७. ॐ ह्रीं जगच्चूडामणये नमः स्वाहा।
९१८. ॐ ह्रीं दीप्ताय नमः स्वाहा।
९१९. ॐ ह्रीं शंवते नमः स्वाहा।
९२०. ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय नमः स्वाहा।
९२१. ॐ ह्रीं कलिघ्नाय नमः स्वाहा।
९२२. ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय नमः स्वाहा।
९२३. ॐ ह्रीं लोकोलोकप्रकाशकाय नमः स्वाहा।
९२४. ॐ ह्रीं अनिन्द्रालवे नमः स्वाहा।
९२५. ॐ ह्रीं अतन्द्रालवे नमः स्वाहा।
९२६. ॐ ह्रीं जागरूकाय नमः स्वाहा।
९२७. ॐ ह्रीं प्रमामयाय नमः स्वाहा।
९२८. ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये नमः स्वाहा।
९२९. ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः स्वाहा।
९३०. ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः स्वाहा।
९३१. ॐ ह्रीं प्रजाहिताय नमः स्वाहा।
९३२. ॐ ह्रीं मुमुक्षवे नमः स्वाहा।
९३३. ॐ ह्रीं बन्धमोक्षज्ञाय नमः स्वाहा।
९३४. ॐ ह्रीं जिताक्षाय नमः स्वाहा।
९३५. ॐ ह्रीं जितमन्मथाय नमः स्वाहा।
९३६. ॐ ह्रीं प्रशान्तरसशैलूषाय नमः स्वाहा।
९३७. ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय नमः स्वाहा।
९३८. ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे नमः स्वाहा।
९३९. ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे नमः स्वाहा।
९४०. ॐ ह्रीं मलघ्नाय नमः स्वाहा।
९४१. ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः स्वाहा।
९४२. ॐ ह्रीं आप्ताय नमः स्वाहा।
९४३. ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः स्वाहा।
९४४. ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः स्वाहा।
९४५. ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः स्वाहा।
९४६. ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः स्वाहा।

९४७. ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः स्वाहा।
९४८. ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः स्वाहा।
९४९. ॐ ह्रीं मारजिते नमः स्वाहा।
९५०. ॐ ह्रीं विश्वभावविदे नमः स्वाहा।
९५१. ॐ ह्रीं सुतनवे नमः स्वाहा।
९५२. ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्ताय नमः स्वाहा।
९५३. ॐ ह्रीं सुगताय नमः स्वाहा।
९५४. ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय नमः स्वाहा।
९५५. ॐ ह्रीं श्रीशाय नमः स्वाहा।
९५६. ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः स्वाहा।
९५७. ॐ ह्रीं वीतभिये नमः स्वाहा।
९५८. ॐ ह्रीं अभयङ्कराय नमः स्वाहा।
९५९. ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय नमः स्वाहा।
९६०. ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः स्वाहा।
९६१. ॐ ह्रीं निश्चलाय नमः स्वाहा।
९६२. ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय नमः स्वाहा।
९६३. ॐ ह्रीं लोकोत्तराय नमः स्वाहा।
९६४. ॐ ह्रीं लोकपतये नमः स्वाहा।
९६५. ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे नमः स्वाहा।
९६६. ॐ ह्रीं अपारधिये नमः स्वाहा।
९६७. ॐ ह्रीं धीरधिये नमः स्वाहा।
९६८. ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय नमः स्वाहा।
९६९. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः स्वाहा।
९७०. ॐ ह्रीं सूनृतपूतवाचे नमः स्वाहा।
९७१. ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः स्वाहा।
९७२. ॐ ह्रीं प्राज्ञाय नमः स्वाहा।
९७३. ॐ ह्रीं यतये नमः स्वाहा।
९७४. ॐ ह्रीं नियमितेन्द्रियाय नमः स्वाहा।
९७५. ॐ ह्रीं भदन्ताय नमः स्वाहा।
९७६. ॐ ह्रीं भद्रकृते नमः स्वाहा।

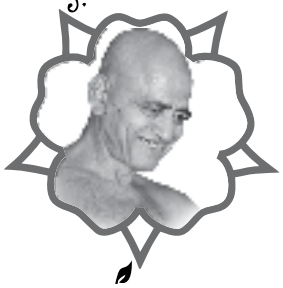

९७७. ॐ ह्रीं भद्राय नमः स्वाहा।
९७८. ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय नमः स्वाहा।
९७९. ॐ ह्रीं वरप्रदाय नमः स्वाहा।
९८०. ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारये नमः स्वाहा।
९८१. ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः स्वाहा।
९८२. ॐ ह्रीं कर्मण्याय नमः स्वाहा।
९८३. ॐ ह्रीं कर्मठाय नमः स्वाहा।
९८४. ॐ ह्रीं प्रांशवे नमः स्वाहा।
९८५. ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणाय नमः स्वाहा।
९८६. ॐ ह्रीं अनन्तशक्तये नमः स्वाहा।
९८७. ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः स्वाहा।
९८८. ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः स्वाहा।
९८९. ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः स्वाहा।
९९०. ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः स्वाहा।
९९१. ॐ ह्रीं त्र्यम्बकाय नमः स्वाहा।
९९२. ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः स्वाहा।
९९३. ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः स्वाहा।
९९४. ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः स्वाहा।
९९५. ॐ ह्रीं शान्तारये नमः स्वाहा।
९९६. ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः स्वाहा।
९९७. ॐ ह्रीं दयानिधये नमः स्वाहा।
९९८. ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः स्वाहा।
९९९. ॐ ह्रीं जितानङ्गाय नमः स्वाहा।
१०००. ॐ ह्रीं कृपालवे नमः स्वाहा।
१००१. ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः स्वाहा।
१००२. ॐ ह्रीं शुभंयवे नमः स्वाहा।
१००३. ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः स्वाहा।
१००४. ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः स्वाहा।

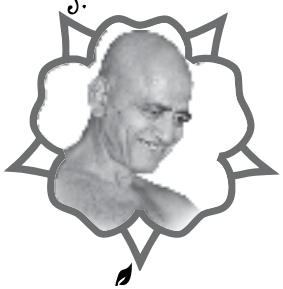

१००५. ॐ ह्रीं अनामयाय नमः स्वाहा।

१००६. ॐ ह्रीं धर्मपालाय नमः स्वाहा।

१००७. ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः स्वाहा।

१००८. ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः स्वाहा।

१००९. ॐ ह्रीं उदितोदितमाहात्म्याय नमः स्वाहा।

१०१०. ॐ ह्रीं व्यवहारसुषुप्ताय नमः स्वाहा।

१०११. ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षगुणाय नमः स्वाहा।

१०१२. ॐ ह्रीं सिद्धिपुरीपान्थाय नमः स्वाहा।

१०१३. ॐ ह्रीं संहृतध्वनये नमः स्वाहा।

१०१४. ॐ ह्रीं योगकिट्टिनिर्लेपनोद्यताय नमः स्वाहा।

१०१५. ॐ ह्रीं त्रुटत्कर्मपाशाय नमः स्वाहा।

१०१६. ॐ ह्रीं परमनिर्जराय नमः स्वाहा।

१०१७. ॐ ह्रीं निष्पीतानन्तपर्यायाय नमः स्वाहा।

१०१८. ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रशीलेशाय नमः स्वाहा।

१०१९. ॐ ह्रीं पञ्चलघ्वक्षरस्थितये नमः स्वाहा।

१०२०. ॐ ह्रीं द्रव्यसिद्धाय नमः स्वाहा।

१०२१. ॐ ह्रीं द्वासप्ततिप्रकृत्याशिषे नमः स्वाहा।

१०२२. ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकृतिप्रणुते नमः स्वाहा।

१०२३. ॐ ह्रीं ज्ञाननिर्भराय नमः स्वाहा।

१०२४. ॐ ह्रीं ज्ञानैकचिज्जीवघनाय नमः स्वाहा।

अथ जाप्यमन्त्रः

'**ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः**' इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतेन जपेत्।

अथ जयमाला

मालिनी -

त्रिभुवनपतिपूज्यं पुण्यपापाद्विमुक्तं
विगतकलुषभावं छिन्नसंसारभावम्।
जगतिपति-सुसेव्यं संयजे भक्तिपूर्वं
वर-शिव-सुगुणं तं लोक-मूर्धावभासम्॥ १॥

मौक्तिकदाम - अपार-जवं जव-जीवन-कर्म-प्रभेद-विदारण-केशरिधर्म।
त्रिलोक-शिरोयुत-पुण्यविबुद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ २॥

अखण्डित-चिन्मय-शान्तिकरण्ड-घनैक-परोन्नत-शक्ति-सुपिण्ड।
समुद्भव-भीति-विमुक्त समृद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ ३॥

सुरासुर-मानुष-नाग-परीज सुदूरित-दुर्भर-भाव-समीज।
सुकेवलबोध सुदृष्टि-समृद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ ४॥

दिवारवि-चन्द्र-विमृष्ट-विकाश महोभर-भूषित सहज-निरास।
विपत्कुल-कन्दकुठार विक्रुद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ ५॥

जिनाधिपमान-निरूपित-भाव सुसूक्ष्म-गुणेश विरूप विराव।
विबाध विकस्वर-दूरविरुद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ ६॥

तपोऽन्तर-भूषित-निर्मलयोग समाप्त-विबाध विशोक विरोग।
प्रदुःख-दवानल-मेघ विरुद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ ७॥

चिरन्तन-काल-कलाकृतवास भवोदधि-सातन-शुद्धसमास।
मनोऽति-हृषीक-विमुक्त विशुद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ ८॥

अनादि-निरन्त-पदस्थितरूप रसादिविमुक्त विविक्त विधूप।
जरादि-दशा-दलनार्थ-विशुद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ ९॥

महेश सुशङ्कर निर्जर शक्र मुनीन्द्र सुचन्द्र सुभास्करचक्र।
पराच्युत-भाव सुशीतल-बुद्ध महासुखमग्न महो जय रिद्ध॥ १०॥

मालिनी - समय-रस-समग्रं पूर्णभावं विभावं
जनित-शिव-सुसारं यः स्मरेत् सिद्धचक्रम्।

अखिल-नर-सुपूज्यं शौभ-चन्द्रादि-सेव्यं
भजति शिव-सुशान्तिं संविभुज्याखिलार्थम्॥ ११॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम् - इत्थं सिद्ध-मुपास्य शर्मसहितं संसारबाधापहं
नोद्रव्या-शुभ-भावकर्म-कलितं सम्पन्नपर्यापहम्।
यो ध्यायेत्फल-मश्नुते शिवमयं सौमं स हित्वाऽशिवं
सम्भुक्त्वा-खिल-मण्डलेश-विबुध-स्वामिस्थितिं सर्वतः॥ १२॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

इति श्रीशुभचन्द्रकृतसहस्रनामगुणितपूजा सम्पूर्णा।

॥ भद्रं भूयात्॥

अर्घ्यावली

चौबीसी का अर्घ्य

जल फल आठों शुचि सार ताको अर्घ्य करों
तुमको अरपों भव तार भव तरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचन्द्र चरनन चन्द लगे
मन-वच-तन जजत अमन्द आतम ज्योति जगे॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान् का अर्घ्य

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय,
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान् का अर्घ्य

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द, चरनन चंद लगै
मन-वच-तन जजत अमंद, आतमज्योति जगै।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ भगवान् का अर्घ्य

वसुद्रव्य सँवारी, तुम ढिंगधारी, आनन्दकारी दृगप्यारी
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातैं थारी शरनारी।
श्री शान्ति-जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं
हनि अरि चक्रेशं हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

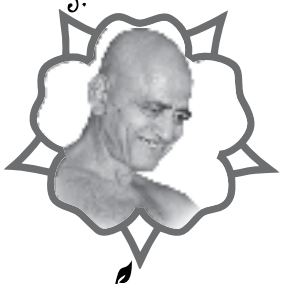

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान् का अर्घ्य

जल गंध आदि मिलाय, आठों दरब अरघ सजों वरों
पूजों चरन रज भगत जुत, जाते जगत सागर तरों।
शिव साथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनि गुन माल हैं
वसु चरण आनन्द भरन, तारण तरण विरद विशाल हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान् का अर्घ्य

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिए
दीप-धूप-श्रीफलादि अर्घ तैं जजीजिए।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा
दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान् का अर्घ्य

जलफल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीबाहुबलि स्वामी का अर्घ्य

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भवलोक हमारा वासा न
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातैं शिवपद को पाया न।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ्य संजोकर लाया हूँ
हे बाहुबली तुव चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मनलाय
परमगुरु हो, जय-जय नाथ परम गुरु हो।
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर पददाय
परमगुरु हो, जय-जय नाथ परमगुरु हो।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारभावनाभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमेरु का अर्घ्य

आठदरब मय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिए।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

जल गन्ध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं
'द्यानत' करो निरभय जगत सों, जोर कर विनती करौं।
सम्मेदगिरि गिरनार चम्पा पावापुर कैलाश कों
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत फूल चरु , अरु दीप धूप अति फल लावैं
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावैं।
तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनी अंग रचे चुनि ज्ञानमई
सो जिनवर वानी शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं-निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी का अर्घ्य

श्री विद्यासागर के चरणों में मैं झुका रहा अपना माथा
जिनके जीवन की हर चर्या बन पड़ी स्वयं ही नवगाथा।
जैनागम का वह सुधा कलश जो बिखराते हैं गली गली
जिनके दर्शन को पाकर के खिलती मुरझाई हृदय कली।।
भावों की निर्मल सरिता में अवगाहन करने आया हूँ
मेरा सारा दुख दर्द हरो यह अर्घ भेंटने लाया हूँ।
हे तपो मूर्ति ! हे आराधक ! हे योगीश्वर ! हे महासन्त !।
यह 'अरुण' कामना देख सकें, युग-युग तक आगामी वसन्त।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरैकशत-श्रीविभूषित-आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिश्री १०८ प्रमाणागर जी का अर्घ्य

जिनका विरागमय ही जीवन, आगम-प्रमाण की मूरत है
ये विद्यासिन्धु नहीं फिर भी, ये उन जैसी ही सूरत है।
भावों की सेज बना करके, उस पर तुमको पधराते हैं
गुरुवर प्रमाणसागर जी की, हम पूजन आज रचाते हैं।।

ॐ ह्रीं मुनिश्री१०८प्रमाणसागरमुनीन्द्राय नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अरहन्त पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।

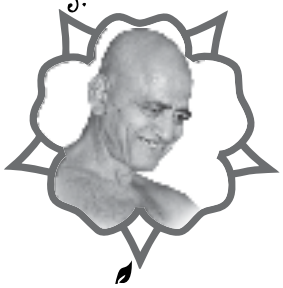

त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पनमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुरपूजित भजूँ।।
कैलाश श्री सम्मेदश्री, गिरनारगिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहसवसु जय होय पतिशिव गेह के।।
जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो द्वादशाङ्गजिनागमेभ्य उत्तम-क्षमादि-दशलक्षण-धर्माय दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यः त्रिलोकस्थित-कृत्रिमाकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यः पञ्चमेरु-सम्बन्ध्यशीति-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नन्दीश्वरद्वीपस्थित-द्विपञ्चाशज्-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः श्रीसम्मेदाष्टापदोर्जयन्तगिरि-चम्पापुर-पावापुरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यः सातिशयक्षेत्रेभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो-ऽष्टाधिकसहस्रजिननामभ्यः श्रीवृषभादि-चतुर्विंशतितीर्थङ्करेभ्यो नमः मुन्यार्यिकाणां श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्याहवाचन

ॐ पुण्याहं पुण्याहं त्रिलोकोद्योतनकरा अतीतकालसञ्जाता निर्वाणसागर-महासाधु-विमलप्रभ-शुद्धप्रभ-श्रीधर-सुदत्तामलप्रभोद्धाराग्नि-सन्मति-सिन्धु-कुसुमाञ्जलि-शिवगणोत्साह-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर-विमलेश्वर-यशोधर-कृष्ण-मतिज्ञानमति-शुद्धमति-श्रीभद्रातिक्रान्तशान्ताश्चेति चतुर्विंशति-भूतपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ १ ॥

ॐ सम्प्रतिकालजाताः श्रेयस्कर-स्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञान-निर्वाणकल्याणक-विभूति-विभूषित-महाभ्युदयाः श्रीवृषभाजित-सम्भव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्त-शीतल-श्रेयो-वासुपूज्य-विमलानन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमानाश्चेति चतुर्विंशति-वर्तमानपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ २ ॥

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवाः महापद्म-सुरदेव-सुपार्श्व-स्वयंप्रभ-सर्वात्मभूत-देवपुत्र-कुलपुत्रोदङ्क-प्रोष्ठिल-जयकीर्ति-मुनिसुव्रतार-निष्पाप-निष्कषाय-विपुल-निर्मल-चित्रगुप्त-समाधिगुप्त-स्वयम्भू-कन्दर्प-जयनाथ-विमलनाथ-देवपालानन्त-वीर्याश्चेति चतुर्विंशतिभविष्यत्तीर्थङ्करपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ ३ ॥

ॐ त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर-युगमन्धर-बाहु-सुबाहु-सञ्जातक-स्वयम्प्रभ-वृषभानन-अनन्तवीर्य-सुरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु-भुजङ्गमेश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्याश्चेति पञ्चविदेह-क्षेत्रविहरमाण-विंशतितीर्थङ्कर-परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ ४ ॥

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ ५ ॥

ॐ कोष्ठबीज-पादानुसारि-बुद्धि-सम्भिन्नश्रोतृ-प्रज्ञाश्रमणाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ ६ ॥

ॐ आमर्ष-क्ष्वेल-जल्ल-मल-विडुत्सर्ग-सर्वौषधयश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ ७ ॥

ॐ जलफल-जङ्घा-जन्तु-पुष्प-श्रेणि-पत्राग्नि-शिखाकाश-चारणाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ ८ ॥

ॐ अक्षीणमहानस-अक्षीणमहालयाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ ९ ॥

ॐ दीप्त-तप्त-महोग्र-घोरपराक्रमाः घोरगुणतपसश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ १० ॥

ॐ मनोवाक्काय-बलिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ ११ ॥

ॐ क्रियाविक्रिया-धारिणश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ १२ ॥

ॐ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥१३ ॥

ॐ अङ्गाङ्गबाह्यज्ञानदिवाकराः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ १४ ॥

इह वान्य-नगर-ग्राम-देवता-मनुजाः सर्वे गुरुभक्ताः जिनधर्म-परायणा भवन्तु ॥ धारा ॥१५ ॥

दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु ॥ धारा ॥ १६ ॥

मातृ-पितृ-भ्रातृ-पुत्र-पौत्र-कलत्र-सुहृत्स्वजन-सम्बन्धि-बन्धुसहितस्य अनुष्ठानकर्त्तुः धन-धान्यान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्धन्ताम् ॥ धारा ॥ १७ ॥

तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्टसम्पत्तिरस्तु। काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु। निर्वाणपर्वोत्सवाः सन्तु। पापानि शाम्यन्तु। घोराणि शाम्यन्तु। धर्मो वर्धताम्। पुण्यं वर्धताम्। श्रीर्वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु ह्रीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणारविन्देष्वानन्द-भक्तिः सदास्तु।

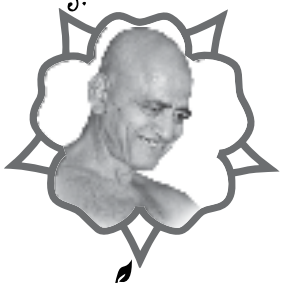

शान्तिपाठः (संस्कृत)

शान्तिजिनं शशि-निर्मल-वक्त्रं शील-गुण-व्रत-संयम-पात्रम्।
अष्टशतार्चित-लक्षण-गात्रं नौमि जिनोत्तम-मम्बुज-नेत्रम्॥ १॥

पञ्चम-मीप्सित-चक्रधराणां पूजितमिन्द्र-नरेन्द्र-गणैश्च।
शान्तिकरं गण-शान्तिमभीप्सुः षोडश-तीर्थकरं प्रणमामि॥ २॥

दिव्य-तरुः सुर-पुष्प-सुवृष्टि-र्दुन्दुभि-रासन-योजन-घोषौ।
आतपवारण-चामर-युग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः॥ ३॥

तं जगदर्चित-शान्ति-जिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं पठते परमां च॥ ४॥

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हाररत्नैः
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः।
ते मे जिनाः प्रवर-वंश-जगत्प्रदीपास्-
तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु॥ ५॥

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोति शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥ ६॥

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः
काले काले च सम्यग् विकिरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्।
दुर्भिक्षं चौर-मारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीव-लोके
जैनेन्द्र धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व-सौख्य-प्रदायि॥ ७॥

प्रध्वस्त-घाति-कर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः॥ ८॥

॥ प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः॥

शास्त्राभ्यासो जिनपति-नुतिः संगतिः सर्वदार्यैः
सद्वृत्तानां गुण-गण-कथा दोष-वादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रिय-हित-वचो भावना चात्मतत्त्वे
संपद्यन्तां मम भव-भवे याव-देतेऽपवर्गः॥ ९॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पद-द्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद् यावन् निर्वाण-सम्प्राप्तिः॥ १०॥

अक्खर-पयत्थ-हीणं मत्ता-हीणं च जं मए भणियं।
तं खमउ णाणदेव य मज्झ वि दुक्खक्खयं दिंतु॥ ११॥

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाओ य।
मम होउ जगद-बंधव तव जिणवर चरण सरणेण॥ १२॥

इति शान्तिभक्तिं समाधिभक्तिं च पठित्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

॥ यहाँ पर नौ बार णमोकार मन्त्र जपना चाहिए॥

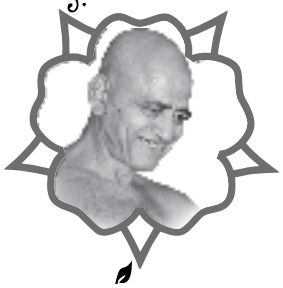

विसर्जन पाठ

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर॥ १॥

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥ २॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर॥ ३॥

आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमम्।
ते मयाभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यान्तु यथास्थितिम्॥ ४॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादिपञ्चपरमेष्ठिनः पूजाविधि-विसर्जनं करोमि, अपराध क्षमापणं भवतु यःयःयः।

धारयामि शिरस्येवं श्रीमज्जिनवराशिषम्।
नैकजन्मकृतं पापं दुःखं च यान्तु संक्षयम्॥

॥ यहाँ पर नौ बार णमोकार मन्त्र जपना चाहिए॥

शान्तिपाठ भाषा

(शान्तिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिए)

दोधक

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं।।
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शान्तिहित शान्तिविधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रतिहार्य मनहारी।।
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढ़ै तिन्हें पुनि चार संघ को।।

वसन्ततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।

सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप
मेरे लिए करहिं शान्ति सदा अनूप।।

(निम्न श्लोक को पढ़कर जल छोड़ना चाहिए)

उपजाति

सम्पूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे।।

स्रग्धरा

होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म-धारी नरेशा
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा।
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी
सारे ही देश धारैं, जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी।।

(निम्न श्लोक पढ़कर चन्दन छोड़ना चाहिए)

दोहा

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

मन्द्राक्रान्ता

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ
तो लों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ।।

आर्या

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाओं भव दुख से।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

इति शान्तिभक्तिं समाधिभक्तिं च पठित्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि कायोत्सर्गं करोम्यहम्

विसर्जन पाठ

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय।।
पूजनविधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।
मन्त्रही धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहूँ राखहुँ मुझे, देहुँ चरण की सेव।।
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करुँ, सदा करो कल्याण।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादिपञ्चपरमेष्ठिनः पूजाविधि-विसर्जनं करोमि, अपराध क्षमापणं भवतु यःयःयः।

(निम्न श्लोक पढ़कर विसर्जन करना चाहिए)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।

अथ श्रीसिद्धचक्रमण्डलविधान का अर्थ

मङ्गलाचरण

नव क्षायिकलब्धि रूप साम्राज्य से सहित श्री सिद्ध परमात्मा को नमस्कार करके श्री सिद्धचक्र यन्त्र की हजारगुणी पूजा को कहता हूँ ॥१ ॥

यजमानलक्षण

इस सिद्धचक्र विधान में जो विनम्र, बुद्धिमान्, प्रसन्नचित्त, न्यायपूर्वक धन का अर्जन करने वाला महान् शील आदि गुणों से सहित है, वह यजमान है ॥२ ॥

याजकलक्षण

इस सिद्धचक्र विधान में जो देश-काल आदि भावों को जानने वाला, शुद्ध अन्त:करण वाला, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ, शास्त्रसम्मत वाणी से युक्त हो, वह याजक (अनुष्ठानकर्ता)-विधानाचार्य कहलाता है ॥३ ॥

आचार्यलक्षण

इस सिद्धचक्र विधान में जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, चारित्र से युक्त, ममत्वभाव से रहित, शास्त्रज्ञ, प्रश्नसहिष्णु और क्षमागुण से युक्त हो, वह गुरु है ॥४ ॥

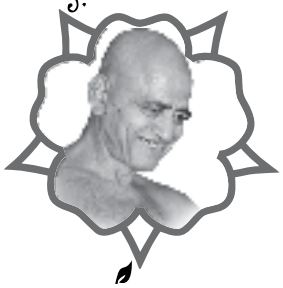

मण्डपलक्षण

बुद्धिमान् याजक विधानाचार्य घण्टा, तारागण एवं तोरण से समन्वित, लटकती हुई पुष्पमालाओं से सहित, चारों कोनों में कुम्भों से सहित, भेरी, पटह, कंसाल, झांझर, मजीरों के शब्दों के साथ, कुलीन स्त्रियों के गीतों से परिपूर्ण मण्डप को बनावे ॥५-६ ॥

सामग्रीलक्षण

सज्जन लोग पूजा की सामग्री को पूजक के भावों को उत्कृष्ट बनाने वाली, नेत्रों और मन को आकर्षित करने वाली तथा सभी को आनन्द करने वाली कहते हैं ॥७ ॥

अथ यन्त्रोद्धार

इस पद्य का अर्थ प्रथम पूजा में स्थापना से पूर्व दिया गया है, वहाँ से देखें।

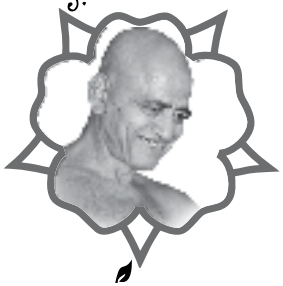

अथ मण्डलोपरि अष्टवर्ग-अर्घ्याणि

(मण्डल के ऊपर आठ दिशाओं में आठ अक्षरसमूह के अर्घ्य)

अथ स्थापना

मैं कर्म सम्बन्ध को नष्ट करने वाले, सूक्ष्म, स्वभाव की अपेक्षा नित्य, भव-रोग अर्थात् जन्म-जरा-मरण एवं सांसारिक आधि-व्याधियों से रहित, कर्मरहित होने से अमूर्त, सांसारिक हेतुओं का अभाव हो जाने से उपद्रव रहित सिद्ध परमात्मा की वन्दना करता हूँ ॥१ ॥

सभी प्रकार के देवों अर्थात् चतुर्णिकाय के देवों एवं चक्रवर्तियों के द्वारा पूजा-अर्चना के योग्य, ज्ञानरूपी अमृत का पान करने से निज स्वभाव में ही तृप्त होने वाले एवं कर्म रूपी जंगल की आग को बुझाने के लिए मेघ समूह अर्थात् बादलों के समान सिद्ध परमेष्ठी को यहाँ स्थापित करता हूँ ॥२ ॥

अथ अर्घ्यसमर्पण

जिनके बिना व्यञ्जनों का समूह अर्द्धमात्रा वाला सुप्रसिद्ध है, ऐसे उन स्वरों अर्थात् '**अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः**' से सहित सिद्ध परमेष्ठी की मैं पूर्वदिशा में अर्चना करता हूँ ॥१ ॥

कवर्ग के सद्वर्णों अर्थात् '**क ख ग घ ङ**' इन वर्णों से सहित सिद्ध परमेष्ठी की मैं आग्नेय दिशा में सुगन्धित, सुन्दर एवं उत्तम जल, चन्दन, अक्षत आदि के द्वारा पूजा करता हूँ ॥२ ॥

चवर्ग के सद्वर्णों अर्थात् '**च छ ज झ ञ**' इन वर्णों से सहित सिद्ध परमेष्ठी की मैं दक्षिण दिशा में सुगन्धित, सुन्दर एवं उत्तम जल, चन्दन, अक्षत आदि के द्वारा अर्चना करता हूँ ॥३ ॥

टवर्ग के सद्वर्णों अर्थात् '**ट ठ ड ढ ण**' इन वर्णों से सहित सिद्ध परमेष्ठी की मैं नैऋत्य दिशा में सुगन्धित, सुन्दर एवं उत्तम जल, चन्दन, अक्षत आदि के द्वारा पूजा करता हूँ ॥४ ॥

तवर्ग के सद्वर्णों अर्थात् '**त थ द ध न**' इन वर्णों से सहित सिद्ध परमेष्ठी की मैं पश्चिम दिशा में सुगन्धित, सुन्दर एवं उत्तम जल, चन्दन, अक्षत आदि के द्वारा पूजा करता हूँ ॥५ ॥

पवर्ग के सद्वर्णों अर्थात् '**प फ ब भ म**' इन वर्णों से सहित सिद्ध परमेष्ठी की मैं वायव्य दिशा में सुगन्धित, सुन्दर एवं उत्तम जल, चन्दन, अक्षत आदि के द्वारा अर्चना करता हूँ ॥६ ॥

'**य र ल व**' इन वर्णों से सहित सिद्ध परमेष्ठी की मैं उत्तर दिशा में सुगन्धित, सुन्दर एवं उत्तम जल, चन्दन, अक्षत आदि के द्वारा पूजा करता हूँ ॥७ ॥

'**श ष स ह**' इन वर्णों से सहित सिद्ध परमेष्ठी की मैं ऐशान दिशा में सुगन्धित, सुन्दर एवं उत्तम जल, चन्दन, अक्षत आदि के द्वारा पूजा करता हूँ ॥८ ॥

अथ प्रथमपरिधौ अष्टकमलदलपूजा

(प्रथम वलय पर आठ कमलदल पूजा)

ऊपर और नीचे रेफ से युक्त, बाद में बिन्दुसहित, हकार (**र्ह्रं**) है, जो ब्रह्मस्वर अर्थात् मूलस्वरों से चारों ओर से वेष्टित (घिरा हुआ) है। आठ दिशाओं में फैली हुई अष्टदलकमल की आठ पंखुड़ियों पर वर्ग (अक्षरसमूह) समाहित हैं अर्थात् पहली पंखुड़ी पर '**अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः**', दूसरी पंखुड़ी पर '**क ख ग घ ङ**', तीसरी पंखुड़ी पर '**च छ ज झ ञ**', चौथी पंखुड़ी पर '**ट ठ ड ढ ण**', पाँचवी पंखुड़ी पर '**त थ द ध न**', छठी पंखुड़ी पर '**प फ ब भ म**', सातवीं पंखुड़ी पर '**य र ल व**' और आठवीं पंखुड़ी पर '**श ष स ह**' इस प्रकार आठ वर्ग (अक्षरसमूह) भरे हुए हैं। इन पंखुड़ियों के सन्धिस्थल अर्थात् जोड़भाग पर तत्त्व अर्थात् **णमो अरहंताणं** उल्लिखित है। अन्त:पत्र अर्थात् पंखुड़ियों के भीतरी किनारों पर ॐ से युक्त एवं बाहरी भाग पर ह्रींकार (**ह्रीं**)से तीन बार वेष्टित इस प्रकार अनाहत अर्थात् अक्षयस्वभावी एवं अक्षरात्मक स्वरूप वाले सिद्ध परमेष्ठी का जो ध्यान करता है, कर्मरूपी हाथी को सिंह के समान नष्ट करने वाला वह पुरुष मुक्ति अंगना का प्रिय होता है अर्थात् मुक्ति को प्राप्त करता है॥

अथ स्थापना

मैं कर्म सम्बन्ध को नष्ट करने वाले, सूक्ष्म, स्वभाव की अपेक्षा नित्य, भव-रोग अर्थात् जन्म-जरा-मरण एवं सांसारिक आधि-व्याधियों से रहित, कर्मरहित होने से अमूर्त, सांसारिक हेतुओं का अभाव हो जाने से उपद्रव रहित सिद्ध परमात्मा की वन्दना करता हूँ ॥१ ॥

सभी प्रकार के देवों अर्थात् चतुर्णिकाय के देवों एवं चक्रवर्तियों के द्वारा पूजा-अर्चना के योग्य, ज्ञानरूपी अमृत का पान करने से निज स्वभाव में ही तृप्त होने वाले एवं कर्म रूपी जंगल की आग को बुझाने के लिए मेघ समूह अर्थात् बादलों के समान सिद्ध परमेष्ठी को यहाँ स्थापित करता हूँ ॥२ ॥

अथ द्रव्याष्टक

सिद्धि अर्थात् निर्वाण को प्राप्त होने पर लोक के अग्रभाग पर निवास करने वाले अथवा सिद्धशिला के ऊपर विराजमान, परमात्मा अर्थात् सर्वज्ञ के द्वारा जानने योग्य, शरीर अथवा आत्मा की हानि-वृद्धि आदि विकारीभावों से रहित, सांसारिक शरीर अर्थात् कर्मशरीर से रहित (ज्ञानशरीरी), ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं रेवानदी, उत्तम सरोवर तथा यमुना नदी से लाए हुए एवं कलशों में भरे हुए जल से पूजा करता हूँ ॥१ ॥

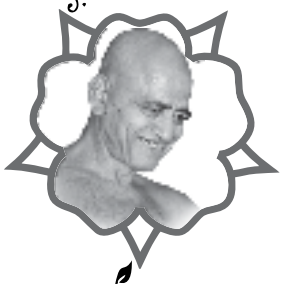

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं जल समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो।१।

आनन्दरूपी कन्द को उत्पन्न करने वाले, सम्पूर्ण कर्मों से रहित, क्षायिक सम्यक्त्व एवं अनन्तसुख से सहित होने से गरिमापूर्ण, संसार में जन्म लेने के कष्ट से रहित, आत्मगुणों की सुरभिरूपी सुगन्धता के आश्रयभूत, ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं उत्तम चन्दन की सुगन्ध से पूजा करता हूँ॥२॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं चन्दन समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो।२।

आयुकर्म के क्षय से उत्पन्न पूर्ण अवगाहनत्व गुण के धारक, आत्मसमाधि अर्थात् आत्मगुणों में लीन, तीन लोक में प्रसिद्ध अपने आत्मस्वरूप के अनुभवी एवं विशाल जलराशि के समान अपने स्वरूप अथवा गुणों में गाम्भीर्ययुक्त, ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं सुगन्धित धान

से सुशोभित उत्तम अक्षतों के चन्द्रमा के समान उज्ज्वल एवं सुन्दर पुञ्जों (अक्षतपुञ्जों) से पूजा करता हूँ॥३॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं अक्षतसमूह समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो।३।

शुद्धस्वभावी आत्मा में ही शाश्वत् रमण करने से नित्य, अन्तिम मनुष्यपर्याय में धारण किए हुए शरीर से कुछ कम अपने ज्ञानशरीर के परिमाण में अवस्थित, अनादिसंज्ञा वाले अनादिकाल से प्रसिद्ध 'सिद्ध' इस संज्ञा अर्थात् नाम वाले, पुद्गल आदि अन्य द्रव्यों से निरपेक्ष, अपनी सिद्धावस्था से च्युत न होने से अमृत रूप तथा मरण आदि सांसारिक दोषों से रहित, ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं मन्दार, कुन्द, कमल आदि वृक्षों के अत्यन्त प्रशस्त पुष्पों से पूजा करता हूँ॥४॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं पुष्प समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो।४।

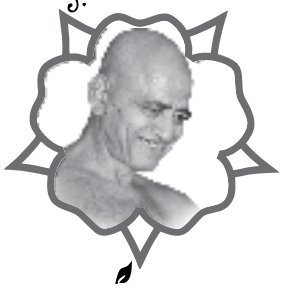

कर्मबन्धन के नष्ट हो जाने से स्वभाव से ऊर्ध्वगमन करने वाले, इन्द्रिय मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होने वाले द्रव्य मन एवं भाव मन से रहित, आत्मा के सहज स्वभाविक गुणों से युक्त, आकाश के समान निर्मल अमूर्तिक एवं पारदर्शी स्वरूप वाले अथवा आकाश के समान सर्वव्यापी ज्ञान से युक्त, ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं दूध, अन्न तथा घी से बने हुए, रस से भरे हुए अथवा आनन्ददायक अनेक प्रकार के श्रेष्ठ व्यञ्जनों से प्रतिदिन पूजा करता हूँ ॥५ ॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं नैवेद्य समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो ।५ ।

केवलज्ञान के द्वारा सम्पूर्ण लोक को एक साथ भलीभाँति देखने वाले तथा भूत, वर्तमान तथा भविष्य इस प्रकार तीन कालवर्ती पदार्थों को जानने-देखने के लिए जो सदाप्रकाशी दीपक के समान हैं, ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं कपूर की बत्तियों से भरे हुए, स्वर्णनिर्मित, सुन्दर एवं उत्तम दीपों से पूजा करता हूँ ॥६ ॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं दीप समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो ।६ ।

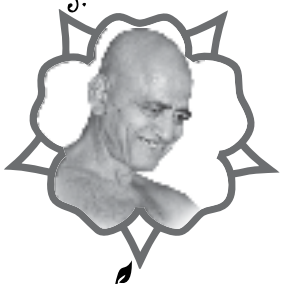

शारीरिक कष्ट, शोक, भय, रोग, एवं मान को नष्ट करने वाले अर्थात् इनसे रहित, निर्द्वन्द्व अर्थात् आत्मा और कर्मों के द्वन्द्वभाव (दुविधा) से रहित, आत्मस्वभाव की महिमा के शाश्वत् धाम, ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं उत्तम द्रव्य, चन्दन, कपूर, अगर आदि पदार्थों से बनी हुई सुगन्धित धूप से पूजा करता हूँ ॥७॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं धूप समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो ।७।

जो प्रसिद्ध असुरकुमार, यक्ष एवं चक्रवर्तियों के द्वारा ध्यान करने योग्य है, कल्याण रूप हैं, सभी भव्यपुरुषों के द्वारा वन्दनीय हैं, ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं संतरा, सुपारी, केला तथा श्रीफल आदि श्रेष्ठ फलों से पूजा करता हूँ ॥८॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं फल समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो ।८।

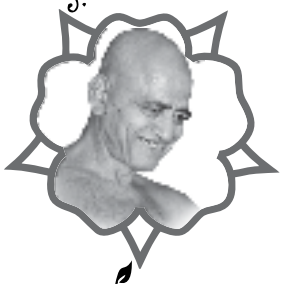

सुगन्धित निर्मल जल, भँवरों के समूह जिस पर मंडरा रहे हैं, ऐसा श्रेष्ठ चन्दन, उज्ज्वल अक्षतों का समूह, पुष्पों का समूह, मनोहर नैवेद्य, दीपक, सुगन्धित धूप तथा अनेक प्रकार के उत्तम फलों को मिलाकर बनाया हुआ अर्घ्य उत्तम फल की प्राप्ति के लिए सिद्धों के दोनों चरणों में समर्पित करता हूँ ॥९ ॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रम अर्थात् अनन्त बल के धारी, सभी कर्म समूह से नितान्त रहित, सिद्ध अर्थात् आत्मरमण करने वालों के अधिपति श्री सिद्धपरमेष्ठी को नमस्कार हो, मैं अर्घ्य समर्पित करता हूँ, यह मेरे कल्याण के लिए हो ।९ ।

जिनका ज्ञानोपयोग सभी मलों अर्थात् विकारों से रहित है, कर्ममल के नष्ट हो जाने से जिनका आत्मस्वरूप स्पष्ट अर्थात् प्रकट हो गया है, जो औदारिकादि पाँच शरीरों से रहित होने से परम सूक्ष्म हैं, संसार में जन्मधारण रूप कष्ट से रहित हैं, कर्मसमूह रूपी वन को जलाने वाले, सुख रूपी फसल को उत्पन्न करने के लिए बीजभूत एवं सभी उपमाओं से परे, ऐसे श्रेष्ठ सिद्धों के समूह की मैं वन्दना करता हूँ ॥१० ॥

अथ जयमाला

दुष्कृत-पापरूपी कर्ममलों को जिन्होंने सर्वथा नष्ट कर दिया है, ऐसे परमेश्वर जिनेश्वर भगवान को प्रणाम और नमस्कार करके भक्तिपूर्वक और अपनी मन:शक्ति के द्वारा सिद्धचक्र की जयमाला का वर्णन करता हूँ ॥ १ ॥

मन में अच्छी तरह से जो सिद्धचक्र का ध्यान करता है उसका; काले बिखरे हुए और भयंकर हैं शिर के केश जिसके, रूक्ष और दारुण हैं नेत्र जिसके, ऐसी रक्तवर्ण वाली व्यन्तरी का अथवा ग्रह तथा भूत वेताल आदि का भय नष्ट हो जाया करता है ॥ १ ॥

भीषण है उत्संग-क्रोड-बाहुमध्य और दाढ जिसकी तथा उनके कारण जो विकराल है, जिसके नेत्र चलायमान हैं, जिह्वा अत्यन्त दीर्घ है, ऐसे विशाल सिंह और दाढवाले सभी जीवों का समूह सिद्धचक्र की भावना करने वाले के वश में हो जाया करता है ॥ २ ॥

रोषयुक्त घोर महाकाल रूप दुष्ट भावों वाले क्रुद्ध आशीविष जाति के सर्प भी उसको नहीं काटते जो मन में सिद्धचक्र की भले प्रकार भावना किया करता है ॥ ३ ॥

ज्वर, क्षय, गंडमाला, कुष्ट, शूल आदि रोग अथवा श्वास और वातादि व्याधियाँ उनकी नष्ट हो जाया करती हैं, जो मन में सिद्धचक्र का अच्छी तरह चिन्तवन किया करते हैं ॥ ४ ॥

इस सिद्धचक्र की भावना करने वाले को धूमसहित भीषण जलती हुई, जिसके प्रचण्ड स्फुलिंग सब तरफ उड़ रहे हैं, अग्नि की ज्वालाओं का समूह दग्ध नहीं कर सकता ॥५॥

कल्लोलों से चंचल, बहुत तरंगवाली, अपार शब्द करती हुई, अगाध गंगा-सिंधु आदि नदियाँ उस मनुष्य को पार कर देती हैं, जो इस सिद्धचक्र का मन में चिन्तवन किया करता है ॥६॥

कशा, पाश कुंत-बर्छी, भाला, शूल आदि धारण करने वाले या जिनके हाथ में धनुष-बाण भिंडमाल है, ऐसे व्यक्ति और चोरों का समूह युद्ध में उस व्यक्ति को नहीं मार सकते, जो सिद्धचक्र का मन में भले प्रकार चिन्तवन करता है ॥७॥

अत्यन्त गाढ और सघन भी बंधन जिन्होने कि समस्त अंग-उपांगो को जकड़ रखा है, खुल जाते हैं और उन व्यक्तियों की शृंखलाएँ टूट जाती हैं, जो कि इस सिद्धचक्र का मन में स्मरण करते हैं ॥८॥

उस सिद्धचक्र का नि:संग ध्यान करने से आठो ही कर्मों का विनाश होता है, ललाट में सुवीर्य प्रकट होता और हाथ में मोक्ष लक्षमी का निवास हुआ करता है, तथा जिसके दृष्टिपात से सूर्य के समान तेज प्राप्त हुआ करता है, जिसका कि यहाँ भुजंगप्रयात छन्द के द्वारा वर्णन किया गया है ॥९॥

इस प्रकार चन्द्रसेन के द्वारा जिस अत्यन्त रसाल-रसवती उत्तम जयमाला का वर्णन किया गया है, उसको जो पढ़ेंगे, पढ़ावेंगे या अपने मन में धारण करेंगे वे मनुष्य सिद्धि सुख को प्राप्त करेंगे ॥१०॥

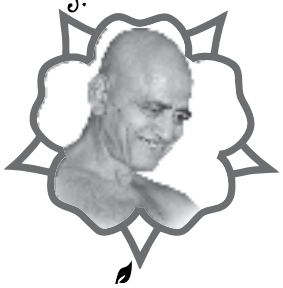

अथ आशीर्वादः

भक्तिभाव से सहित जो भव्यजीव चैतन्यरूप सिद्धचक्र की पूजा करता है, वह स्वर्गों के भोगों को भोगकर सिद्धों की संगति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है ॥११ ॥

अथ द्वितीयपरिधौ षोडशकमलदलपूजा

(द्वितीय वलय पर सोलह कमलदल पूजा)

पुष्पाञ्जलि एवं स्थापना प्रथम पूजा के समान ही है, अतः उन पद्यों के अर्थ प्रथम पूजा से देखें।

अथ द्रव्याष्टक

विविध चन्दनों के समूह से युक्त, जल की अञ्जुलि में प्राप्त पराग वाले रमणीय जलों से संसार के सन्ताप के विनाश के लिए एवं शाश्वत् शान्ति की प्राप्ति के लिए तथा उन कर्मों के विनाश के लिए मैं सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥१ ॥

अच्छे कुंकुमों से अच्छी तरह से सजाए गए, तपे हुए सोने के रस की तरह चमक वाले, भ्रमरों के समूह को आनन्दित करने वाले सुगन्धित एवं उत्तम कोटि के चन्दनों से उन कर्मों के विनाश के लिए मैं सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥२ ॥

अखण्ड पुण्य के विशाल पुञ्ज की तरह, मुनियों के मन के समान स्वच्छ (निर्मल), रमणीय एवं अखण्ड अक्षतों के नव्य पुञ्ज से उन कर्मों के विनाश के लिए मैं सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥३ ॥

गन्धों के लोलुपी भँवरों वाले सुन्दर पुष्पों से, कमल, जाति (चमेली) और शतदल कमल आदि के द्वारा कामबाण के नाश के लिए तथा उन कर्मों के विनाश के लिए मैं सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥४ ॥

घृतयुक्त, अच्छी तरह से पकाए गए, नवीन रसों से भावित द्रवित हृदय की तरह प्रतीत होने वाले समृद्ध नैवेद्य से मैं उन कर्मों के विनाश के लिए मैं सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥५ ॥

अच्छी तरह से प्रकाशित, अन्धकार को दूर करने वाले, चन्द्रकान्त मणियों से समृद्ध दीपों के द्वारा अज्ञान अन्धकार को दूर करने के लिए तथा उन कर्मों के विनाश के लिए मैं सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥६ ॥

ज्ञानादि अग्नि से उत्पन्न धुएँ के समान उत्तम धूपों के धुओं को धारण किए गए धर्म की सिद्धि के लिए, पूर्ण रूप से पाप के समूह को नष्ट करने के लिए तथा उन कर्मों के विनाश के लिए मैं सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥७ ॥

उत्तम प्रकार की मीठी ककड़ी, अच्छी नारङ्गी, उत्तम नारिकेल, अङ्गूर, अनार आदि फलों से निष्कामता के फल को प्राप्त करने के लिए तथा उन कर्मों के विनाश के लिए मै सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥८ ॥

अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, सम्यक्त्व, अनन्तवीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व और अव्याबाधत्व गुणों से युक्त तथा कर्मों से रहित सिद्धसमूह की उन कर्मों के विनाश के लिए पुष्पाञ्जलि से मैं सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥९ ॥

महान् गुणों से प्रसिद्ध, अष्टगुणों के अधिपति, पूर्व शरीर से कुछ कम शरीर वाले, इष्ट और अनिष्ट अर्थात् राग-द्वेषभूत महाशत्रु रूपी कर्म की बेड़ियों से मुक्त, चिदानन्द स्वरूप, तीन लोक के अग्रभाग में निवास करने वाले, शाश्वत् मुक्ति-वधू का आश्रय लेने वाले सिद्धों की मैं स्तुति करता हूँ ॥१० ॥

अथ जयमाला

दूर कर दिया है विकल्प समूह–अनेक तरह के संकल्प विकल्पों के रण–कोलाहल को जिन्होंने, लोक में कर्मरूपी सघन अग्नि के समूह को जिन्होंने भस्म–शान्त कर दिया है, और जिनके भाव अनेक गुणों से शोभित हैं ऐसे परमात्मरूप सिद्धों के समूह को मैं नमस्कार करता हूँ॥ १ ॥

चैतन्यस्वरूप को जो प्राप्त हो गए हैं, देवेन्द्र, नरेन्द्र और धरणीन्द्र के द्वारा भी जिनको नमस्कार किया गया है, आतप, साद–खेद, विषाद और रति से जो रहित हैं, महान् शान्ति को प्राप्त, नष्ट कर दिया है पापरूप मति को जिन्होंने, मद और खेद–रूपी पर्वत का नाश करने के लिए जो वज्र के समान हैं, भयरूपी भयंकर निशाचर के लिए जो सुन्दर सूर्य के समान हैं, जो उत्तम मुक्तिरूपी वधू के रमण, शब्द अथवा गति से रहित तथा चित्स्वरूप अनन्त गुणों के धारक हैं, जिन्होने काम के अंश को भी जीत लिया है; जो उत्तम ज्ञान, दर्शन, सुख और वीर्य, इस तरह अनन्त चतुष्टय स्वरूप हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा समस्त वस्तुओं को देख लिया है, जो संसाररूपी समुद्र के पार को भले प्रकार प्राप्त हो गए हैं, जिन्होने सर्वसाधारण संसारी जीवों में पाए जाने वाले दोष–क्षुधा–पिपासा–चिन्ता, आश्चर्य आदि तथा कषायरूपी कलंक के भार को नष्ट कर दिया है, पवित्र केवल ज्ञान और दर्शन को जो धारण करने वाले हैं, जिन्होंने संसार के

जन्म मरण और जरा रूप क्लेश का नाश कर दिया है, आत्म रस रूपी अमृत से जो मंथर हैं; पुनः जन्म धारण करने वाले नहीं हैं, भुवनत्रय के मस्तकरूपी द्वार का उद्घाटन करने के लिए गज के समान हैं, समभाव के द्वारा जिन्होंने जीव के अपनी आत्मा के या जीवों के गुणों को प्रकाशित कर दिया है, उत्कृष्ट निश्चल और नित्य गुण ही हैं आभरण जिनके, ऐसे अनेक गुणों से शोभायमान परमात्मा सिद्ध परमेष्ठियों को मेरा नमस्कार हो ॥ २-१० ॥

इस जगत में जिनके नाम मात्र का स्मरण करने में आदरभाव रखने वाले व्यक्तियों को सर्प, हाथी आदि घात करने वाले तथा भयंकर जलचर जीव या सिंह, अष्टापद आदि क्षणभर में उल्टे सुख-शान्ति के निमित्त बन जाते हैं, जिनका चिन्तवन करने से दिव्य विषयों की प्राप्ति हुआ करती है एवं जिनका ध्यान करने से सिद्धिरूपी रमणी वशीभूत हो जाया करती है, उन सिद्ध परमेष्ठियों को मैं अर्घ-पूर्णार्घ अर्पण करता हूँ ॥ ११ ॥

भक्ति से परिपूर्ण है मन जिसका ऐसा जो व्यक्ति चिद्रूप सिद्ध भगवान का अतिशय करके और पुनः-पुनः पूजन करता है वह 'पद्मकीर्ति' के समान होकर सिद्धि को प्राप्त किया करता है ॥ १२ ॥

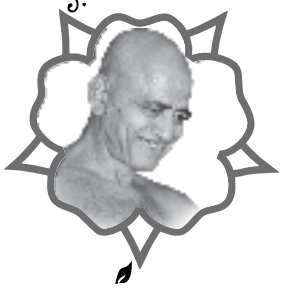

अथ तृतीयपरिधौ द्वात्रिंशत्कमलदलपूजा

(तृतीय वलय पर बत्तीस कमलदल पूजा)

पुष्पाञ्जलि एवं स्थापना प्रथम पूजा के समान ही है, अतः उन पद्यों के अर्थ प्रथम पूजा से देखें।

सभी प्रकार के देवों अर्थात् चतुर्णिकाय के देवों एवं चक्रवर्तियों के द्वारा पूजा-अर्चना के योग्य, ज्ञानरूपी अमृत का पान करने से निज स्वभाव में ही तृप्त होने वाले एवं कर्म रूपी जंगल की आग को बुझाने के लिए मेघ समूह अर्थात् बादलों के समान सिद्ध परमेष्ठी को यहाँ स्थापित करता हूँ ॥२ ॥

अथ द्रव्याष्टक

अपने मन रूपी मणि के पात्र में भरे हुए समता रस रूपी अनुपम रस की धारा से केवलज्ञानरूपी कला से मनोहर सहज सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥१ ॥

सहज रूप से कर्म कलङ्क को नष्ट करने वाले, ऐसे निर्मल भावरूपी सुगन्धित चन्दन से अनुपम गुण समूह के नायक सहज सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥२ ॥

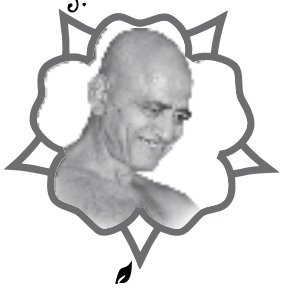

बड़े से बड़े समस्त दोषों का शोधन करने में समर्थ स्वभावरूपी स्वच्छ चावलों से अप्रतिहत ज्ञान के धारी सहज सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥३ ॥

सहज क्रियारूप कर अर्थात् हाथ के द्वारा शोधी गई आत्मस्वभावरूपी सुन्दर फूलों की सुशोभित माला से उत्कृष्ट योग के बल से वश में किए गए सहज सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥४ ॥

जन्म, जरा और मरण को नष्ट करने वाले सहजज्ञानरूपी सुन्दर नैवेद्य से अमर्यादित और प्रचुर आत्म–गुणों के निकेतन सहज सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥५ ॥

भोगाकांक्षा रूपी अन्धकार को नष्ट करने वाले, सहज सम्यक्त्वरूपी दीपक से अनन्त आत्मविकास द्वारा विकास को प्राप्त हुए सहज सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥६ ॥

आत्मगुणों के घातक कर्ममलों को नष्ट करने वाली, अपने अक्षयगुणरूपी धूप से विशद बोध और अनन्त सुखस्वरूप सहज सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥७ ॥

सहज रूप से कुभाव भावों का शोधन करने वाली उत्कृष्ट भाव रूपी फलसम्पत्ति से अपने गुणों का स्फुरण होने से निरञ्जन पद को प्राप्त हुए सहज सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥८ ॥

नेत्रोन्मीली विकास को प्राप्त हुए भावसमूह के द्वारा जो पुरुष चिन्तामणि के समान शुद्ध भाव और उत्तम ज्ञानरूपी जल, गन्ध, अक्षत, पुष्पमाला, नैवेद्य, दीप, धूप और फलों से आत्मस्वादी, बाधारहित ज्ञान के स्वामी और जो अचल ज्ञान सिद्ध परमात्मा की पूजा करता है, उसके लिए यह पूजा अनन्त ज्ञान का कारण होती है, अत: हम भी उन सिद्ध परमात्मा की पूजा करते हैं ॥९ ॥

जिन (सिद्ध परमेष्ठी) की आराधना करके, तीन लोक के स्वामियों अर्थात् अधोलोक का स्वामी धरणेन्द्र, मध्यलोक का स्वामी चक्रवर्ती और ऊर्ध्वलोक का स्वामी इन्द्र भी जिनके चरणों की वन्दना करता है, ऐसे अत्यधिक चञ्चल मन को रोकने वाले अर्थात् मन पर विजय प्राप्त करने वाले तीर्थंकरों ने शाश्वत् लक्ष्मी अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर लिया है, ऐसे क्षायिक सम्यक्त्व, अनन्त ज्ञान, अनन्त वीर्य, अव्याबाधत्व आदि गुणों से सहित, आत्मा की विशुद्ध अवस्था को प्राप्त करने वाले उन सिद्ध परमेष्ठी की मैं सदा स्तुति करता हूँ ॥१० ॥

अथ जयमाला

रागरहित, सदा रहने वाले, शान्त-क्रोधादिरहित, निरंश-विभागरहित-अखण्ड, रोगरहित, निर्भय, निर्मल, भेदविज्ञानपूर्ण, आत्मस्वरूप, उत्तम तेज:स्वरूप, उत्कृष्टज्ञान के निधान-खजाने हे मोहरहित विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ १ ॥

सांसारिक भावों से दूर, अंगरहित, शम परिणामरूपी अमृत से पूर्ण, देव, संगरहित, निर्बन्ध और कषायरहित निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ २ ॥

पाप कर्म के पाश-जाल का जिन्होंने निवारण कर दिया है, जो सदा निर्मल केवलज्ञान की क्रीड़ा के निवास स्थान हैं, संसार समुद्र के पार को प्राप्त हो चुके हैं, ऐसे शान्त निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ ३ ॥

अनन्त सुख रूपी अमृत के समुद्र, धीर, पापरूपी धूलि के भार को उड़ा देने के लिए प्रबल समीर-वायु के समान, कामदेव की अन्तिम सीमा को भी खण्डित करने वाले निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ ४ ॥

विकार भाव से रहित, शोक को ताडित करने वाले, विशिष्ट ज्ञानरूपी नेत्र के द्वारा देख लिया है लोक को जिन्होंने, जिनका कोई हरण नहीं कर सकता, ऐसे शब्दरहित, विरंग-संसाररूपी नाटक के रंगस्थल अथवा कषायों के युद्ध स्थल से विगत, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ ५ ॥

अज्ञान और अदर्शनरूप मल के खेद से रहित, अशरीर, विच्छेदरहित नित्य सुख के पात्र, सम्यग्दर्शन के द्वारा शोभायमान, नाथ निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ ६ ॥

मनुष्यों और देवों के द्वारा वन्दित हैं निर्मल भाव जिनके, अनन्त मुनीश्वरों के द्वारा पूज्य, मुख के विकार से रहित, सदा रहनेवाला है उदय जिनका, पूर्ण तेज के स्वामी, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ ७ ॥

दम्भरहित, तृष्णा से शून्य, विगत दोष, निद्रा रहित, पर और अपर कल्याण के करने वाले, साररूप, निरालस्य, कोप रहित, रूप रहित और शंका रहित निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ ८ ॥

जरा और मरण से रहित, गमनागमन से भी रहित, विशिष्ट चिन्ता-ध्यानादि के विषय, निर्मल, अहंकार रहित, अचिन्त्य है चरित्र जिनका ऐसे, हे दर्परहित निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ ९ ॥

वर्ण रहित, गंध रहित, मान-लोभ-माया-शरीर-शब्द और शोभा से रहित, आकुलता से रहित, केवल-एकाकिन्-शुद्धात्मन्, सबके लिए हितकर, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न ॥ १० ॥

इस तरह अनुपम समयसाररूप, सुन्दर चैतन्य ही है चिह्न जिनका, पुद्गल के निमित से होने वाली परिणति से मुक्त, पद्मनन्दी आचार्य के द्वारा बन्द्य, सम्पूर्ण गुणों के निवासस्थान, विशुद्ध सिद्धचक्र का जो स्मरण करता है, उनको नमस्कार करता है, या उनकी स्तुति करता है, वह मुक्ति को प्राप्त हुआ करता है ॥ ११ ॥

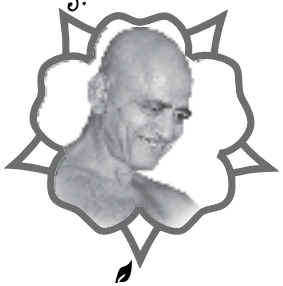

अथ आशीर्वादः

भक्तिभाव से सहित जो भव्यजीव चैतन्यरूप सिद्धचक्र की पूजा करता है, वह स्वर्गों के भोगों को भोगकर सिद्धों की संगति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है ॥१२ ॥

अथ चतुर्थपरिधौ चतुःषष्टिकमलदलपूजा

(चतुर्थ वलय पर चौसठ कमलदल पूजा)

पुष्पाञ्जलि एवं स्थापना प्रथम पूजा के समान ही है, अतः उन पद्यों के अर्थ प्रथम पूजा से देखें।

अथ द्रव्याष्टक

संसार में जिसका प्रभाव जयशील है, आत्मा के यथार्थ अनुभव से विकारीभावों को जीतने वाले, विश्वकल्याण के बीजस्वरूप, गंगा नदी के निर्मल जल की धारा से आराधना के योग्य, गणधरवलय की उस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए मैं अर्चना करता हूँ ॥१ ॥

जिससे परमात्मज्योति रूप प्रकाश के उदित होने पर मोहरूपी अन्धकार नष्ट हो जाता है, ऐसे गणधरवलय की अत्यन्त पवित्र कपूर और चन्दनों के समूह से अत्यन्त विनयपूर्वक उस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए मैं अर्चना करता हूँ ॥२ ॥

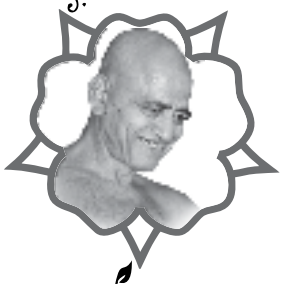

देवेन्द्र, नरेन्द्र और विद्याधर जिनकी भक्तिपूर्वक आराधना में 'मैं पहले, मैं पहले' इस प्रकार की भावना के साथ प्रयत्नशील रहते हैं अर्थात् निरन्तर आराधना करते रहते हैं, ऐसे गणधरवलय की केवलज्ञान की प्राप्ति के लिए सुन्दर एवं अखण्ड अक्षतों से अर्चना करता हूँ ॥३ ॥

मोक्षसुख को प्राप्त कराने वाले जिसकी सेवा से सज्जन लोग संसार और संसार के भय रूपी महान् समुद्र को पार कर लेते हैं, ऐसे उस गणधरवलय की कमल, बकुल, कुन्द और उत्तम जाति के मन्दार पुष्पों से उस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए अर्चना करता हूँ ॥४ ॥

भव-वन को जलाने के लिए अग्नि के समान, मोह रूपी पाप के नाशक, काम के मान को शमन करने वाले अर्थात् काम को जीतने वाले, समस्त विद्याओं के भण्डार, सम्पूर्ण गुणों से युक्त तथा प्राणियों के समूह को प्रसन्न करने वाले गणधरवलय की नैवेद्यों से उस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए अर्चना करता हूँ ॥५ ॥

जिनका स्मरण भी चेतन और अचेतन रूप सम्पूर्ण जीव-अजीव आदि सात तत्त्वों और नौ पदार्थों को जानने वाले, सम्पूर्ण लोक के नेत्रों के समान केवलज्ञान को आविष्कृत करता है, ऐसे गणधरवलय की मैं दीप्तप्रभासमूह वाले दीपों से उस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए अर्चना करता हूँ ॥६ ॥

जिसके ध्यान से संसारी जीवों को ग्रह, दैत्य, क्रोधित राक्षस, प्रेत, भूत आदि के द्वारा उत्पन्न पीड़ा नहीं होती है, ऐसे गणधरवलय की मैं अगुरु, कर्पूर और उत्तम चन्दन से बनी हुई धूप से उस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए अर्चना करता हूँ ॥७ ॥

जिसकी अच्छी तरह से की गई विपुल सेवा अतुलनीय एवं अनन्त मुक्तिसुखरूपी फल को प्रदान करती है, अनुपम महिमाशाली, मुक्तिलक्ष्मी के आलय, ऐसे गणधरवलय की मैं मातुलिङ्ग (बिजोरा–एक प्रकार का नींबू का फल) फलों से उस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए अर्चना करता हूँ ॥८ ॥

तुरन्त लाए हुए जल, गन्ध, विशाल मन्दार पुष्पों की माला से सुन्दर, निर्मल अर्घ्य को श्री–सहित गणधरवलय के लिए, देवेन्द्र से पूजित मुक्तिरूपी लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए मैं पद्मनन्दी आदरपूर्वक समर्पित करता हूँ ॥९ ॥

अथ जयमाला

मैं उन सिद्ध भगवान् की, मोक्षलक्ष्मी की प्राप्ति के लिए भक्तिपूर्वक विमल जयमाला के द्वारा स्तुति करता हूँ, जिनका अपने मन में स्वयं योगीन्द्र भी दुष्कर्मों की व्युच्छित्ति के लिए चिन्तवन करते हैं, जिनके चरण कमल इन्द्र तथा नरेन्द्रों के द्वारा भी पूजित हैं, कर्मरूप अवद्य से जो रहित और सदा अष्ट गुणों के अलंकारभूत हैं ॥ १ ॥

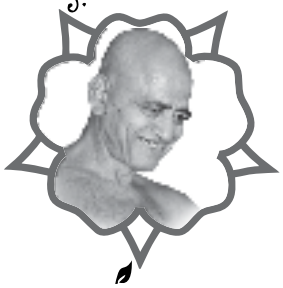

महान् दृढ मोहकर्म से सर्वथा रहित, अपने गुणरूपी सुवर्ण की कांति से रंजित, चित्स्वरूप रुचि के धारक, अपने स्वरूप में ही उत्पन्न, शरीर रहित, सिद्धसमूह सदा मुझे पवित्र करो ॥ २ ॥

चेतना के आवरण करनेवाले–ज्ञानावरण दर्शनावरण के क्षय से निश्चित है वास जिनका, अन्तन पदार्थों का भेद करके भले प्रकार रहने वाले,...हे सिद्धसमूह सदा मुझे पवित्र करो ॥ ३ ॥

सम्यग्दर्शनज्ञानरूप अनंत शक्ति के पिंड, नष्ट कर दिया है विघ्न करने वाले कर्म समूह को जिन्होंने, चित्स्वरूप अनन्त वीर्य गुण के स्वामी अशरीर सिद्धसमूह मुझे सदा पवित्र करो ॥ ५ ॥

क्षय को प्राप्त हो गया है नाम कर्म जिनका, सूक्ष्मत्व गुण को धारण करनेवाले, अपने निर्मितगुण ही हैं चिह्न जिनका, चित्स्वरूप सूक्ष्मगुण के स्वामी अशरीर सिद्ध निकाय मुझे सदा पवित्र करो ॥ ६ ॥

अरूपी, अवगाहन गुण से पूर्ण, चार तरह के आयु कर्मरूप कीचड़ से दूर, अनंतगुणों के स्वामी अशरीर सिद्ध निकाय मुझे सदा पवित्र करो ॥ ७ ॥

गुरुत्वलघुत्वभाव से रहित, संसार रूपी वन की दु:सह अग्नि का जिन्होंने निरसन कर दिया है, दो प्रकार के अतुल गोत्रकर्म से रहित स्वामी अशरीर सिद्धनिकाय सदा मुझे पवित्र करो ॥ ८ ॥

दोनों ही तरह के दुःख देने वाले वेदनीय कर्म के पक्ष का जिन्होंने घात कर दिया है, स्वयं का प्राप्त कर लिया है शास्वत सुख जिनने, ऐसे बाधारहित गुणों के स्वामी देव अशरीर सिद्धनिकाय सदा मुझे पवित्र करो ॥ ९ ॥

१-२-इनका अर्थ ठीक-ठीक हमारी समझ में नहीं आ सका। ३-इस जयमालाके दूसरे आदि पद्यमें क्रमसे मोह ज्ञानावरण-दर्शनावरण-अन्तराय-नाम-आयु-गोत्र-और वेदनीय इन आठ कर्मोंके अभावसे प्राप्त गुणोंकी अपेक्षा सिद्धोंकी महिमाका वर्णन किया गया है।

अथ आशीर्वादः

दुष्टकर्म रूप पाश अर्थात् सांकल (जंजीर) को उखाड़ फेंकने वाले अर्थात् नष्ट करने वाले, मुक्तिरूपी क्रीडा से प्रसन्न रहने वाले अर्थात् मोक्ष सुख का अनुभव करने वाले, आत्मा के ज्ञान-दर्शन आदि श्रेष्ठ एवं स्वाभाविक गुणों में निवास करने वाले, चैतन्य रूपी सरोवर के राजहंस के समान, भक्ति में झुके हुए राजाओं के द्वारा संस्तुत अर्थात् बड़े-बड़े राजा-महाराजा शिर झुकाकर जिनकी स्तुति करते हैं, ऐसे सिद्ध भगवन्तों की श्री शुभचन्द्र जी अपनी श्रेष्ठ भक्तिपूर्वक वन्दना करते हैं ॥१० ॥

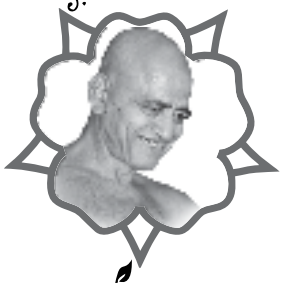

अथ पञ्चमपरिधौ अष्टविंशोत्तरकमलदलपूजा

(पञ्चम वलय पर एक सौ अट्ठाईस कमलदल पूजा)

पुष्पाञ्जलि एवं स्थापना प्रथम पूजा के समान ही है, अतः उन पद्यों के अर्थ प्रथम पूजा से देखें।

अथ द्रव्याष्टक

विधिपूर्वक बन्धूर पुष्प और केशर के सारवाली, निर्मल, शीतल और उत्तम जल की धारा से देवेन्द्र और मनुष्यों से नमस्कृत एवं केवलज्ञान से सुशोभित सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥१ ॥

अत्यन्त सुगन्धित, निर्मल और प्रासुक केशर, कुङ्कुम और चन्दनों से देवेन्द्र और मनुष्यों से नमस्कृत एवं केवलज्ञान से सुशोभित सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥२ ॥

मोतियों की समानता जिनमें निश्चित की गई है, ऐसे धुले हुए अक्षतों के उज्ज्वल पुञ्ज से देवेन्द्र और मनुष्यों से नमस्कृत एवं केवलज्ञान से सुशोभित सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥३ ॥

स्वाभाविक रूप से उत्पन्न सुगन्ध से आनन्दित करने वाले चम्पक, कमल, और कुन्द के पुष्पों से देवेन्द्र और मनुष्यों से नमस्कृत एवं केवलज्ञान से सुशोभित सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥४ ॥

अमृत के समान सम्पूर्ण लोक को प्रसन्न एवं तृप्त करने वाले श्रेष्ठ नैवेद्यों से देवेन्द्र और मनुष्यों से नमस्कृत एवं केवलज्ञान से सुशोभित सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥५ ॥

चलायमान, श्रेष्ठ, चमकीला, शोभायमान और पापनाशक दीपकों के द्वारा देवेन्द्र और मनुष्यों से नमस्कृत एवं केवलज्ञान से सुशोभित सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥६ ॥

करोड़ों भँवरों की इन्द्रियों के बन्धु अर्थात् भँवरों को आकर्षित करने वाले अगुरु और धूप से उत्पन्न सुगन्धि से देवेन्द्र और मनुष्यों से नमस्कृत एवं केवलज्ञान से सुशोभित सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥७ ॥

देखने मात्र से सुखदायी, पके हुए और सुन्दर सुपारी, निम्बू, केला एवं नारियल आदि उत्तम फलों सेदेवेन्द्र और मनुष्यों से नमस्कृत एवं केवलज्ञान से सुशोभित सिद्ध परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ ॥८ ॥

निर्मल चन्द्रमा के समान एव पुष्प-समूह के समान महान् सद्गुणों से सम्पन्न, आत्मानुभवरूप सुखसागर में मग्न सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की मैं पूजा करता हूँ ॥९ ॥

जो ज्ञानावरणादि दोषों को बलपूर्वक आत्यन्तिक रूप से निर्मूल करके अर्थात् नष्ट करके, संसार रूपी महानदी को सुखाकर सम्यग्दर्शन आदि आत्मगुणों को प्राप्त हुए हैं, चक्रवर्ती और सुरेन्द्रों द्वारा जिनके चरण पूजित हैं, ऐसे सिद्ध परमात्मा सिद्धों की स्तुति से ज्ञानवृद्धि को प्राप्त करने वाले भक्तों का सदा कल्याण करें ॥१० ॥

अथ जयमाला

चिदानन्दस्वरूप, सुख के लीलास्थल, अखण्ड है स्वभाव जिनका, कर्मों के विजेता, सिद्धात्माओं के समूहरूप, विषादरहित, वीतराग, चक्र-पाखण्ड अथवा सांसारिक परिवर्तन से दूर सिद्धसमूह का मैं सदा अच्छी तरह स्तवन करता हूँ ॥ १ ॥

विशुद्ध है उदय जिनका, जो संसार के पार को प्राप्त हो चुके हैं, सम्यग्ज्ञान के निधान, उत्कृष्ट, निर्विकार, मायारहित, विभा-अलौकिक प्रभा को प्राप्त, उत्कृष्ट नेतृत्व के धारक संसाररहित सिद्धसमूह का मैं स्तवन करता हूँ ॥ २ ॥

आशय-संकल्पविकल्प से रहित, सूर्य के समान ज्ञान ही है नेत्र जिनका, मोहरहित, समतारूपी महान् अमृत ही है शरीर जिनका, अप्रमाण प्रभाव के धारक, दर्परहित, अशरीर सिद्धसमूह का मैं सदा स्तवन करता हूँ॥ ३ ॥

एकान्तरूप, मनोज्ञ, कलंकरहित, विद्वानों या कवियों के हृदय में स्थित, भले प्रकार सेव्य, विपाक अवस्था को प्राप्त, शंकारहित, अपार, काल-काय-काम औ संसारचक्र से रहित सिद्धसमूह का मैं सदा अच्छी तरह स्तवन करता हूँ॥ ४ ॥

तीन लोक में सर्वोत्कृष्ट है प्रभा जिनकी, ज्ञान की अपेक्षा जो विश्वरूप है, प्रकाशों के निवासस्थान, वर्णनरहित, विशिष्ट स्वरूप के धारक, सदा दर्शनमय, ध्येयरूप, संसाररहित सिद्ध-समूह का मैं सदा स्तवन करता हूँ॥ ५ ॥

मुनियों के लिए भी अगम्य, समीचीन उत्कृष्ट बोधरूप, कर दिया है अहंकार क्रोध और चिन्ता का निरोध जिन्होंने, अपार, जरा मृत्यु से रहित, संसार चक्र से दूर सिद्ध समूह का मैं सदा स्तवन करता हूँ॥ ६ ॥

अनन्त, विश्रामरूप, विकारों से रहित, छोड़ दिया है स्फुरायमान कामिनियों का रंग-राग जिनने, इच्छा और अपघात से रहित, उत्कृष्ट, संसाररहित सिद्धसमूह का मैं सदा स्तवन करता हूँ॥ ७ ॥

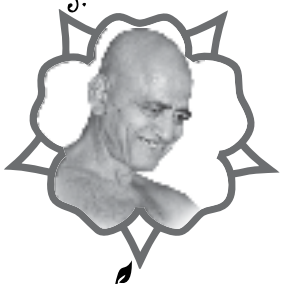

अत्यन्त दुष्ट अष्ट कर्मरूपी इन्धन के लिए अग्निसमान, सिद्ध कर लिया है गुणाष्टक को जिनने, चिद्गुण के धारक, चेतना का ही है विलास जिनमें, उदासीन-वीतराग, ईशान-परमेश्वर, परमात्मा, संसाररहित सिद्धसमूह का मैं सदा स्तवन करता हूँ ॥ ८ ॥

जन्मरहित, शास्वत, जरा रहित, देवों के भी देव, लोभरहित, की है अनेक भूपालों ने सेवा जिनकी, विकारों के समूह को जिन्होंने आहुति का विषय बना दिया है, संसार के पाश से रहित, विचक्र सिद्धचक्र का मैं सदा स्तवन करता हूँ ॥ ९ ॥

समस्त कामदेव के भेदों से रहित, दोषों के समूह का निरोध करने वाले, रसरहित, अवस्था से पूर्ण, कल्याणकारी, सारभूत, अजर-कभी जीर्ण न होने वाले, देवों के द्वारा वन्द्य, पंचपरमेष्ठियों प्रथम देव, मुनिसमूह के द्वारा सेव्य समीचीन देवरूप सिद्धचक्र का पद्मनन्दी आचार्य स्मरण करते हैं ॥ १० ॥

इस तरह कर्मरहित, संसार की बाधा को दूर करने वाले, नोकर्म द्रव्यकर्म और अशुभ भावकर्म से रहित, नवीन अवस्था को प्राप्त सिद्ध परमेष्ठी का जो ध्यान करता है वह समस्त अशुभ का परित्याग करके और सम्पूर्ण मांडलिक राजाओं तथा देवों के स्वामित्व को भले प्रकार भोग करके अमृतरूप शिवमय-कल्याणमय फल को प्राप्त हुआ करता है ॥ ११ ॥

जो ज्ञानावरणादि दोषों का बलपूर्वक और अच्छी तरह से निर्मूलन कर संसाररूपी नदी के शोषण करने वाले सम्यग्दर्शनादिक को प्राप्त हो चुके हैं, चक्रवर्तिप्रमुख अथवा सुरेन्द्रों के द्वारा पूजित हैं चरण जिनके, ऐसे सिद्ध भगवान् सिद्धस्तोत्र के द्वारा प्रकट हो गया है ज्ञानरूप तेज जिनका ऐसे भक्तात्माओं को मोक्षलक्ष्मी प्रदान करें ॥ १२ ॥

अथ षष्ठपरिधौ षट्पञ्चाशदुत्तर-द्विशत-कमलदलपूजा

(छठे वलय पर दो सौ छप्पन कमलदल पूजा)

पुष्पाञ्जलि एवं स्थापना प्रथम पूजा के समान ही है, अत: उन पद्यों के अर्थ प्रथम पूजा से देखें।

अथ द्रव्याष्टक

भँवरों के द्वारा जिसका पान किया गया है, ऐसे सुरभित पदार्थों से मिश्रित, स्वच्छ, साफ और पवित्र तथा इस सिद्धचक्र विधान रूप उत्तम पूजा के लिए तीर्थों से लाए गए जल के द्वारा सोने से बनी झारियों से शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की मैं पूजा करता हूँ ॥१ ॥

परम सुगन्धित कुङ्कुम के समूह से युक्त, अनेक प्रकार के सुगन्धित पदार्थों से सहित, शुभ्र कर्पूर से युक्त, भँवरों के समूह को आकर्षित करने वाले चन्दन के द्वारा शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की मैं पूजा करता हूँ ॥२ ॥

चन्द्रमा की किरणों के समान सुशोभित, निर्मल कान्ति वाले झाग के समूह के समान धवल, पूर्ण चन्द्रमा के समान उज्ज्वल अखण्डित उत्तम अक्षतों से शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की मैं पूजा करता हूँ ॥३ ॥

परम सुगन्धित तथा भँवरों को मोहित करने वाले कमल, मौलश्री, मालती, चमेली आदि तथा स्वर्गों के वृक्षों के समान अनेक प्रकार के पुष्पों से शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की मैं पूजा करता हूँ ॥४ ॥

धान्य से उत्पन्न हुए चन्द्रमा के समान धवल चावलों द्वारा मुलायम, सुन्दर एवं अच्छी तरह पकाए हुए खीर से एवं घी, मीठे से युक्त, सुन्दर और आकर्षक पकवानों द्वारा शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की मैं पूजा करता हूँ ॥५ ॥

सोने एवं मणि आदि रत्नों से बने हुए, नक्षत्रों की कान्ति को धारण करने वाले, पापरूप अन्धकार को नष्ट करने वाले तथा श्रेष्ठ ज्ञान को प्रकाशित करने वाले प्रज्वलित दीपों द्वारा आकर्षक आरती से शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की मैं पूजा करता हूँ ॥६ ॥

अगुरु, तगर आदि प्रासुक एवं शुद्ध कपूर तथा चन्दन आदि अनेक प्रकार के सुरभित द्रव्यों द्वारा निर्जरारूपी आनन्द को उत्पन्न करने वाली धूप को अग्नि में जलाकर शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की मैं पूजा करता हूँ ॥७ ॥

सुपारी, केथ, श्रीफल, केला, कटहल, बेर, नारियल, अनार आदि रसीले और सुगन्धित फलों से आत्मोपलब्धि-फल की प्राप्ति के लिए शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की मैं पूजा करता हूँ ॥८ ॥

उत्तम जल, फल, पुष्प, चन्दन, अक्षतसमूह एवं धवल पुष्पों द्वारा, रची गई पूजा द्वारा की गई भक्ति से मन-वचन-काय से उत्पन्न कर्मों को नष्ट करने का इच्छुक मैं शान्तस्वरूप निर्मल-दोषों से रहित सिद्ध समूह की पूजा करता हूँ ॥९ ॥

सभी प्रकार से अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग हेतुओं को नष्ट करने से सम्यग्दर्शन को प्राप्त करने वाले, सभी उपसर्ग और परीषहों को सहने वाले, समस्त विकारी भावों का शमन करने वाले, इन्द्रिय और मन के संयमन पूर्वक उभयविध परिग्रह का त्याग करके जो निरन्तर शास्त्राभ्यास में तत्पर हैं, ऐसे योगी आत्मा में अपने निर्मल स्वरूप के ध्यान द्वारा सम्पूर्ण कर्मों का नाश करके शान्ति आदि उत्कृष्ट एवं शुभ गुणों से सुशोभित होने वाले सिद्ध परमेष्ठी मेरे मन में विराजमान हों ॥१० ॥

अथ जयमाला

मैं (पूज्यपाद आचार्य) उन सिद्धों के अनुपम गुण रूपी रस्सी से आकृष्ट हो सन्तुष्ट होता हुआ उसी सिद्धि की प्राप्ति के लिए उन सिद्धों की वन्दना करता हूँ, जिन्होंने कर्मप्रकृतियों के समूह को धो दिया है, जिन्होंने अपने-आत्म स्वभाव को प्राप्त कर लिया है। उत्कृष्ट गुण समूह को आच्छादित करने वाले दोषों के दूर हो जाने से अपने आत्मा की उपलब्धि होना सिद्धि कहलाती है। जिस प्रकार इस लोक में योग्य उपादान से सहित होने से स्वर्णपाषाण की सुवर्ण भाव से उपलब्धि होती है ॥ १ ॥

आत्मा का अभाव है, ऐसी सिद्धि इष्ट नहीं है। अपने गुणों का नाश उन तप आदि के द्वारा भी नहीं होता है, क्योंकि यह युक्ति से सिद्ध नहीं है। आत्मा है। वह अनादिकाल से बद्ध है। वह अपने कर्म से उत्पन्न फलों का भोक्ता है। उन कर्मों के क्षय से मोक्ष को प्राप्त होता है। वह आत्मा ज्ञान दर्शन स्वभाव वाला है। वह आत्मा अपने शरीर प्रमाण है। वह संकोच-विस्तार स्वभाव वाला है। वह ध्रौव्य, उत्पाद, व्यय रूप है। वह अपने गुणों से सहित है। इससे अन्य प्रकार से साध्य की सिद्धि नहीं है ॥ २ ॥

तथा वह आत्मा अन्तरङ्ग-बहिरङ्ग कारणों से उत्पन्न निर्मल-सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की सम्पत्तिरूपी शस्त्र के तीव्र घात से पाप कर्मों के क्षय हो जाने से अचिन्त्य सार (फल) प्रकट होने

के साथ केवलज्ञान, केवलदर्शन, उत्कृष्टसुख, महाशक्ति, सम्यक्त्व, लब्धि, भामण्डल, चँवर आदि अद्भुत उत्कृष्ट गुणों से शोभायमान होता है ॥ ३ ॥

एक साथ समस्त पदार्थों को जानते देखते हुए, निरन्तर सुख से सन्तुष्ट होते हुए, विस्तार को प्राप्त करते हुए, अत्यन्त खचित मोह अन्धकार को दूर करते हुए, सम्पूर्ण सभा को प्रसन्न करते हुए, समस्त प्रजा का स्वामित्व करते हुए तथा अन्य प्रकाशमान पदार्थों की ज्योति को तिरस्कृत करते हुए निश्चय से आत्मा को आत्मा में ही अपनी आत्मा के द्वारा प्राप्त करते हुए, क्षण भर में वह आत्मा समीचीन स्वयम्भू हो जाता है। क्या करते हुए वह स्वयम्भू हुए हैं, यह कहते हैं ॥ ४ ॥

वह आत्मा शेष बची समस्त बेड़ी के समान बलवान कर्म प्रकृतियों को नष्ट करते हुए उस अनन्त स्वभाव के साथ क्षायिक सूक्ष्मत्व, अग्र्यावगाह, अगुरुलघु गुणों से एवं अन्य अवशिष्ट इतर कर्म प्रकृतियों के विनाश से स्वात्मा को प्राप्ति की महिमा के प्रभाव से शोभित होता है। ऊर्ध्वगमन स्वभाव से एक समय में लोक के अग्र स्थान पर स्थित हो जाता है ॥ ५ ॥

चूँकि वह सिद्ध भगवान् दूसरे किसी अन्य आकार की प्राप्ति में कारण नहीं होता है इसलिए वे कुछ कम पहले प्राप्त शरीर की प्रतिकृति रूप मनोहर आकार वाले ही होते हैं। वे निश्चय से अमूर्तिक होते हैं। भूख, प्यास, श्वास, खाँसी, ज्वर, मरण, बुढ़ापा, अनिष्ट, संयोग, तीव्र मोह, व्यापत्ति आदि उग्र दु:खों से उत्पन्न संसार का नाश हो जाने से इन सिद्ध भगवान् के सुख को जानने वाला कौन है ? अर्थात् कोई नहीं ॥ ६ ॥

इसलिए उन सिद्ध भगवान् का श्रेष्ठ सुख अपने आत्म उपादान से उत्पन्न हुआ है, स्वयं अतिशय वाला है, बाधा से रहित है, बहुत विस्तृत है, हीनाधिकता से रहित है, विषयों से रहित है, प्रतिपक्षी भाव से रहित है, अन्य द्रव्य की अपेक्षा नहीं रखने वाला है, उपमा रहित है, माप रहित है, स्थायी है, हमेशा रहने वाला, उत्कृष्ट-अनन्त सार वाला होता है। उनका सुख किन विशिष्टताओं वाला है, यह कहते हैं- ॥७॥

भूख प्यास का नाश हो जाने से अनेक प्रकार से रसों से युक्त भोजन-पानी का कोई प्रयोजन नहीं है। अशुचि से स्पर्श न होने से गन्धमाला से कोई अर्थ नहीं है। घृणा, निद्रा आदि का अभाव होने से कोमल शय्या से कोई प्रयोजन नहीं है। जिस प्रकार रोगजन्य पीड़ा का अभाव होने से उसे शान्त करने वाली अच्छी औषधि अप्रयोजन की तरह है। अन्धकार के मिट जाने पर समस्त पदार्थ दिखाई देने से दीपक भी निरर्थक के समान है। ॥८॥

जो उपर्युक्त सम्पत्ति से सहित हैं, जो अनेक प्रकार के नय, तप, संयम, ज्ञान, सम्यग्दर्शन और चारित्र से सिद्ध हुए हैं, जिनका यश सब ओर फैला है, जो समस्त देवों के भी देव हैं, जो भूतकाल में हो चुके हैं, जो भविष्य में होने योग्य हैं और जो वर्तमान में हो रहे हैं, समस्त संसार में जो विशिष्ट पुरुषों से स्तुति को प्राप्त हुए हैं, उन समस्त अनन्त सिद्धों को उनके स्वरूप को शीघ्र ही प्राप्त करने का इच्छुक मैं तीनों संध्याओं में नमस्कार करता हूँ ॥९॥

अथ आशीर्वादः

भक्तिभाव से सहित जो भव्यजीव चैतन्यरूप सिद्धचक्र की पूजा करता है, वह स्वर्गों के भोगों को भोगकर सिद्धों की संगति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है ॥१० ॥

अथ सप्तमपरिधौ द्वादशोत्तर-पञ्चशत-कमलदलपूजा

(सप्तम वलय पर पाँच सौ बारह कमलदल पूजा)

पुष्पाञ्जलि एवं स्थापना प्रथम पूजा के समान ही है, अतः उन पद्यों के अर्थ प्रथम पूजा से देखें।

अथ द्रव्याष्टक

चतुर्थ पूजा एवं सप्तमी पूजा एक ही है, अतः इस पूजा का अर्थ चतुर्थ पूजा से देखना चाहिए।

अथ जयमाला

देवेन्द्रों, नरेद्रों और भवनवासियों के अधिपतियों–असुरेद्रों के द्वारा जिनके चरण प्रतिदिन पूजे जाते हैं, ऐसे अर्हन् परमेष्ठी तथा अशरीर सिद्धपरमात्मा और आचार्य, उपाध्याय, साधु इस

तरह तीन प्रकार के मुनिवरों को जो कि दोषों के विनाश से महान्, अपने-अपने समीचीन गुणरूपी भूषणों से भूषित और दर्शन-ज्ञान-चारित्र आदि से युक्त हैं, नमस्कार करके मैं उनके गुणों की प्राप्ति के लिए उनका स्तवन करता हूँ ॥ १ ॥

अनन्त चतुष्टयरूप गुण जिनमें विलास कर रहे हैं, चार घातिया कर्मों का जाल जिन्होंने तोड़ दिया है, समस्त अतिशय आदि सद्गुणों से समृद्ध हैं, ऐसे हे अर्हन् जिन भगवन्! आप सदा जयवन्त रहें ॥ २ ॥

आठ कर्मरूपी शत्रुओं को जिन्होंने दूर कर दिया है, विश्व मात्र को देखने में उत्कृष्ट सूर्य के समान हैं, जो सबसे उत्तम आठ गुणों से पूर्ण हैं, ऐसे हे सिद्धदेव! आप जयवन्त रहें ॥ ३ ॥

पंचाचार का पालन करने में घोर, शिष्यों का अनुग्रह करने में वीर और स्थितिकल्प नामक दश गुणों का उपदेश करने वाले गुणों से समृद्ध हे आचार्य परमेष्ठिन्! आप सदा जयवन्त रहें ॥ ४ ॥

ग्यारह अंगों को जिन्होंने अपने कण्ठ का हार बना लिया है, जिन्होंने चतुर्दश पूर्वों का पार प्राप्त कर लिया है तथा समस्त श्रुतसमुद्ररूपी गुण से समृद्ध हैं, ऐसे हे उपाध्याय परमेष्ठिन्! आप सदा जयवन्त रहें ॥ ५ ॥

आरम्भ और परिग्रह से सर्वथा रहित, सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र में अनुरक्त, मूलगुण और उत्तरगुण रूप निधि से समृद्ध निरंतर प्रबुद्ध रहनेवाले हे साधु परमेष्ठिन्! आप सदा जयवन्त रहें ॥ ६ ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र और तपरूप आराधनाओं से युक्त और रत्नत्रय से पवित्र, व्यवहाररूप परम गुणों के भेदों से पूर्ण कर्मों को चूर्ण करने वाले हे मुनिवर! आप सदा जयवन्त रहें ॥ ७ ॥

समीचीन तप और रत्नत्रय से युक्त, संसारसमुद्र से तारने वाले इन पंच परमेष्ठियों का जो प्राणी नित्य ध्यान करते हैं, वे देवेन्द्र और नरेन्द्रपद को प्राप्त कर भद्र-समीचीन गुणों के साथ जन्मजरादि के दुःखों से रहित शिवपदको अन्त में प्राप्त किया करते हैं ॥ ८ ॥

अथ आशीर्वादः

दुष्टकर्म रूप पाश अर्थात् सांकल (जंजीर) को उखाड़ फेंकने वाले अर्थात् नष्ट करने वाले, मुक्तिरूपी क्रीडा से प्रसन्न रहने वाले अर्थात् मोक्ष सुख का अनुभव करने वाले, आत्मा के ज्ञान-दर्शन आदि श्रेष्ठ एवं स्वाभाविक गुणों में निवास करने वाले, चैतन्य रूपी सरोवर के राजहंस के समान, भक्ति में झुके हुए राजाओं के द्वारा संस्तुत अर्थात् बड़े-बड़े राजा-महाराजा शिर झुकाकर जिनकी स्तुति करते हैं, ऐसे सिद्ध भगवन्तों की श्री शुभचन्द्र जी अपनी श्रेष्ठ भक्तिपूर्वक वन्दना करते हैं ॥ ९ ॥

अथ अष्टमपरिधौ चतुर्विंशत्युत्तर-सहस्र-कमलदलपूजा

(अष्टम वलय पर एक हजार आठ कमलदल पूजा)

पुष्पाञ्जलि एवं स्थापना प्रथम पूजा के समान ही है, अतः उन पद्यों के अर्थ प्रथम पूजा से देखें।

अथ द्रव्याष्टक

जिन–वाक्यों के समान निर्दोष, गंगा नदी से लाए गए, समस्त जनों के पाप को धोने वाले उत्तम जल से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥१ ॥

प्रचुर सुगन्ध से सहित, कपूर और केशर से युक्त, सभी प्रकार के सुगन्धित द्रव्यों से मिले हुए चन्दन से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥२ ॥

धान्य से उत्पन्न, छिलका रहित, रजत के समान शुभ्र, सुगन्धित एवं अखण्डित चावलों से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥३ ॥

मँडराते हुए भँवरों के समूह से युक्त कमल पुष्पों द्वारा तथा लतामण्डप में उत्पन्न होने वाले श्रेष्ठ मौलश्री आदि उत्तम पुष्पों से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥४॥

रजत पर्वत के समान शुभ्र, शरत्कालीन कमल के समान सुन्दर, अमृत मिले हुए एवं पके हुए श्रेष्ठ नैवेद्यों से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥५॥

सूर्य के समान दीप्ति वाले, स्वर्ण के समान कान्ति वाले तथा जिनके द्वारा सूर्य एवं सूर्य के प्रकाश को तिरस्कृत करने वाला अन्धकार भी नष्ट कर दिया गया है, ऐसे द्वीपों से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥६॥

नासिका को प्रसन्न करने वाले एवं सुगन्धित द्रव्यों को मिलाकर बने हुए आकाश में व्याप्त तथा वायु को सुगन्धित करने वाले धूप से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥७॥

सुन्दर और स्वर्ण के समान वर्ण वाले केला, नारियल आदि अभी-अभी पके हुए एवं मन को प्रमुदित करने वाले फलों से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥८॥

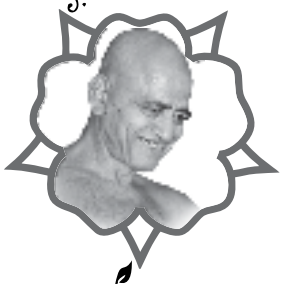

उत्तम जल, फल, पुष्प, चन्दन, अक्षतसमूह एवं धवल पुष्पों द्वारा, रची गई पूजा द्वारा की गई भक्ति से मोक्षधाम में प्रविष्ट, आदि और अन्त से रहित सिद्धसमूह की एक हजार चौबीस (१०२४) बार पूजा करता हूँ ॥९ ॥

अथ जयमाला

मैं उनकी भक्तिपूर्वक पूजा-स्तुति करता हूँ, जो कि त्रिभुवन के पतियों-सुरेन्द्रों व असुरेन्द्रों के द्वारा पूज्य हैं, पुण्य और पाप दोनों ही से रहित हैं, कलुषता जिनकी नष्ट हो चुकी है, संसार पर्याय को जिन्होंने छेद डाला है, जगतीपतियों नरेन्द्रों के द्वारा जो सेव्य हैं, उत्तम कल्याणरूप समीचीनगुणों से युक्त और लोक के शिरोभाग पर प्रकाशमान हैं ॥ १ ॥

अपार संसार के जीवनरूप कर्मों से समस्त भेदों का विदारण करने में सिंहसमान, तीन लोक के शिखर पर विराजमान, पवित्र, विबुद्ध, महान्सुख में निमग्न तेज:स्वरूप सिद्धपरमेष्ठिन्! आप जयवन्त रहें ॥ २ ॥

कभी भी खण्डित न होने वाली चित्स्वरूप शांति के करण्ड-पिटारे, घनरूप अद्वितीय सर्वोत्कृष्ट शक्ति के पिंड, उत्पत्ति के भय से रहित, महासुख में मग्न, तेज:स्वरूप समृद्ध सिद्धदेव! आप जयवन्त रहें ॥ ३ ॥

सुर, असुर, मनुष्य और धरणीन्द्रों के द्वारा पूज्य, दुर्भरभावों से दूर, भले प्रकार पूज्य, सम्यक् केवलज्ञान-दर्शन से समृद्ध, महानसुख में निमग्न तेज:स्वरूप सिद्धभगवन्! आप जयवन्त रहें ॥४॥

दिन में दिखाई पड़ने वाले सूर्य और चन्द्रमा के समान या उससे भी अधिक विशुद्ध है विकाश जिनका, तेजोभार से भूषित, स्वभाव से ही स्थिर, क्रोधरहित होकर भी विपत्तिरूपी वृक्षों के कन्द-तने का उच्छेदन करने के लिए कुठार के समान, महान् सुख में निमग्न तेज:स्वरूप सिद्ध परमेष्ठिन्! आप जयवन्त रहें ॥५॥

जिनाधिप अर्हन्त के ज्ञान के द्वारा जिनके भाव का निरूपण किया गया है, अतिशय सूक्ष्मत्वगुण के स्वामी, नीरूप, शब्दरहित, बाधारहित, विकस्वर-दुष्प्राप्ति या थकावट के विरुद्ध, महान्सुख में निमग्न तेजोरूप सिद्ध भगवान्! आप जयवन्त रहें ॥६॥

विभिन्न तपश्चरणों के द्वारा भूषित हो चुका है योग जिनका, समाप्त हों गई हैं बाधाएँ जिनकी, वीतशोक, रोगरहित, महान्दु:खस्वरूप दावानल के लिए मेघके समान, महासुख में निमग्न तेजोरूप सिद्धदेव आप जयवन्त रहें ॥७॥

शास्वतिक कालकला में निवास करने वाले संसाररूप समुद्र को सुखा देने वाले शुद्ध, प्रकाशयुक्त, मन और इन्द्रियोंसे रहित, विशुद्ध महानसुख में निमग्न तेजोरूप सिद्ध भगवन्! आप जयवन्त रहें ॥८॥

अनादि और अनन्त पद में स्थित है रूप-आकृति जिनकी, रसादि से रहित, समस्त अन्य पदार्थों से पृथग्भूत, सब पदार्थों को विशेषरूप से प्रकाशित करने वाले अथवा सम्पूर्ण विभावभावों या दोषों को कम्पित कर देने वाले, जरा जीर्णता-वृद्धत्व आदि अवस्थाओं का दलन करनेवाले, विशुद्ध महासुख में निमग्न तेजोरूप, सिद्धदेव ! आप जयवन्त रहें ॥ ९ ॥

हे महेश-महान् ऐश्वर्ययुक्त, हे सुशंकर-समीचीन कल्याण के कर्त्ता, हे निर्जर-कभी जीर्ण न होनेवाले, हे शक-अनन्तशक्ति युक्त, हे मुनीन्द्र-मुनियों के नाथ, हे सुचन्द्र-भले प्रकार सबको चन्द्रमा के समान आह्लादित करनेवाले, हे सुभास्करचक्र-कोटिसूर्यसमान तेज के धारक, हे पराच्युतभाव-उत्कृष्ट और कभी भी च्युत न होनेवाले हैं भाव जिनके, हे अत्यन्तशीतल ज्ञानस्वरूप, महान् सुख में निमग्न तेजोरूप सिद्धपरमेष्ठिन् ! आप जयवन्त रहें ॥ १० ॥

इस तरह आत्मरस से पूर्णभावरूप, पुनरुत्पत्ति से रहित, प्राप्त कर लिया है कल्याणरूप समीचीन सार जिन्होंने, सम्पूर्ण मनुष्यों के द्वारा पूज्य तथा शुभचन्द्रादि के द्वारा सेव्य, ऐसे सिद्ध परमेष्ठियों के समूह का जो भव्य स्मरण करता है, वह समस्त अभ्युदयों को भोगकर अन्त में मुक्तिरूप समीचीन शान्ति को भी प्राप्त किया करता है ॥ ११ ॥

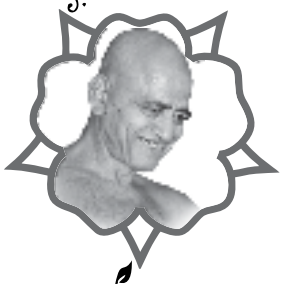

अथ आशीर्वादः

जो ज्ञानावरणादि दोषों का बलपूर्वक और अच्छी तरह से निर्मूलन कर संसाररूपी नदी के शोषण करने वाले सम्यग्दर्शनादिक को प्राप्त हो चुके हैं, चक्रवर्तिप्रमुख अथवा सुरेन्द्रों के द्वारा पूजित हैं चरण जिनके, ऐसे सिद्ध भगवान् सिद्धस्तोत्र के द्वारा प्रकट हो गया है ज्ञानरूप तेज जिनका ऐसे भक्तात्माओं को मोक्षलक्ष्मी प्रदान करें ॥ १२ ॥

श्री सिद्धचक्रविधान की प्रथमादि पूजाओं के अर्घ्य

प्रथम पूजा

शार्दूलविक्रीडितम्- गन्धाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः सङ्गं वरं चन्दनं
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वाञ्छितम्॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय पूजा

उपजातिः - दृग्ज्ञान-सम्यक्त्व-सुवीर्य-सूक्ष्मं
सद्गाह-सत्सप्तम-मव्यबाधम्।
विकर्मभावं कुसुमाञ्जलीभिस्-
तत्कर्म-दाहार्थ-मजं यजेऽहम्॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय पूजा

शार्दूलविक्रीडितम् - नेत्रोन्मील-विकाश-भावनिवहै-रत्यन्त-बोधाय वै
वार्गन्धाक्षत-पुष्पदाम-चरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः।
यश्चिन्तामणि-शुद्धभाव-परम-ज्ञानात्मकै-रर्चयेत्
सिद्धः स्यात्तमगाध-बोध-ममलं सञ्चर्चयामो वयम्॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ पूजा

मालिनी - अभिनव-जलगन्धा-मन्द-मन्दारमाला-
ललित-ममल-मर्घ्यं सन्ददाम्यादरेण।
गणधर-वलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी
सुर-हरि-महितायाः प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमी पूजा

द्रुतविलम्बितम् - जिनवरागम-सद्गुरु-मुख्यकान्
प्रवियजे गुरु-सद्गुण-मुख्यकान्।
सुशुभ-चन्द्रतरान् कुसुमोत्करान्
समयसार-परान् सुखसागरे॥

ॐ ह्रीं स्वस्थान-माश्रिता-तीतानागत-सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी पूजा

मालिनी - वर-जल-फल-पुष्पैश्चन्दनै-रक्षतौघैः
विरचित-कृत-भक्त्या शुक्ल-पुष्पाञ्जलीश्च।
मन-वचन-तनूत्था-कर्म-निर्मूलनेच्छुः
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम्॥

ॐ ह्रीं चिरतर-संसार-कारणाज्ञान-निर्द्धूतोद्भूत-केवलज्ञानातिशय-सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

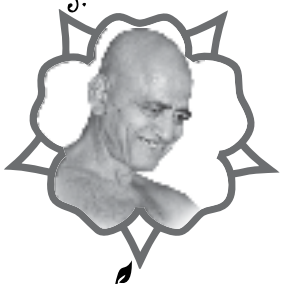

सप्तमी पूजा

मालिनी - अभिनव-जलगन्धा-मन्द-मन्दारमाला-
ललित-ममल-मर्घ्यं सन्ददाम्यादरेण।
गणधर-वलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी
सुरहरि-महितायाः प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमी पूजा

मालिनी - वर-जल-फल-पुष्पैश-चन्दनै-रक्षतौघै-
र्विरचित-कृतभक्त्या-युक्तपुष्पाञ्जलीभिः।
शिवसदन-निविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तं
दशशत-जिनवारं चर्चये सिद्धचक्रम्॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।